सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 210, नई दिल्ली, मंगलवार 07 अक्टूबर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

**आज का सुविचार**
आत्म-विश्वास: अपने अंदर की प्रतिभा और क्षमताओं पर विश्वास रखें, क्योंकि यह सफलता की पहली सीढ़ी है।

03 जीएसटी कम होने से किसको मिला फायदा........
06 नीट युजी वर्ष में दो बार आयोजित किया जा सकता है
08 मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने भगवान वाल्मीकि जी के प्रगट दिवस की तैयारियों का जायजा लिया

# परिवहन मंत्रालय के नए चालान नियमों का कड़ा विरोध: ट्रक ट्रांसपोर्टर्स की आजीविका पर खतरा

परिवहन विशेष न्यूज

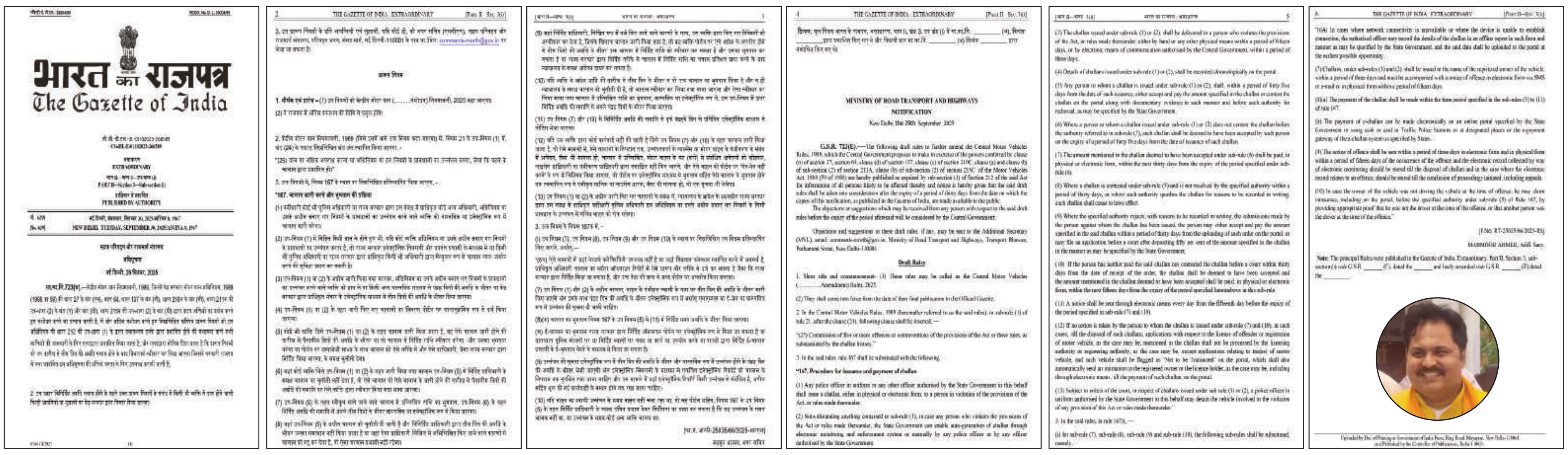
भारत का राजपत्र
The Gazette of India

**नई दिल्ली** : उफ्तत्सा राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने परिवहन मंत्रालय (MoRTH) द्वारा हाल ही में जारी ड्राफ्ट नोटिफिकेशन के खिलाफ कड़ा रुख अपनाते हुए कहा है कि यह नियम ट्रांसपोर्ट सेक्टर के लाखों ड्राइवरों, ऑपरेटर्स और छोटे व्यवसायियों की आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित करेंगे। यह ड्राफ्ट, जो मोटर व्हीकल रूल्स में संशोधन का प्रस्ताव करता है, चालान प्रक्रिया को अधिक सख्त बनाने का दावा करता है, लेकिन वास्तव में यह आम आदमी पर अनावश्यक बोझ डालने वाला है। डॉ. यादव ने विभिन्न पहलुओं से इसकी आलोचना करते हुए सरकार से तत्काल पुनर्विचार की मांग की है।

"उफ्तत्सा" "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा,(ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) जो ट्रक ट्रांसपोर्टर्स और सारथी के एकमात्र हितकारी संगठन के रूप में जाना जाता है, देशभर में ट्रांसपोर्ट सेक्टर के हितों की रक्षा करने वाला एक प्रमुख संगठन है। डॉ. यादव ने इस ड्राफ्ट को "ट्रांसपोर्टर्स के खिलाफ एकतरफा हमला₹ करार दिया और कहा कि यह नियम लागू होने से पहले स्टेकहोल्डर्स से कोई सलाह-मशविरा नहीं किया गया। नीचे विभिन्न पहलुओं से इस विरोध की विस्तृत व्याख्या दी गई है:

**1. आर्थिक प्रभाव: ट्रांसपोर्टर्स पर अनावश्यक बोझ**

ट्रक ट्रांसपोर्ट सेक्टर पहले से ही महंगाई, ईंधन की बढ़ती कीमतों और टोल शुल्कों से जूझ रहा है। नए नियमों के तहत, चालान का भुगतान या चुनौती देने की समयसीमा 45 दिनों तक सीमित कर दी गई है, और अनपेड चालान पर वाहन या लाइसेंस को "Not to be Transacted" फ्लैग कर दिया जाएगा। इससे RTO में रिन्यूअल या अन्य ट्रांजेक्शन रुक जाएंगे। डॉ. यादव ने कहा, "ट्रक ड्राइवरों और ऑपरेटर्स की कम आय को देखते हुए, यह नियम उन्हें आर्थिक रूप से पंगु बना देगा। एक छोटा चालान भी अनपेड रहने पर वाहन का संचालन रुक सकता है, जिससे रोजगार छिन जाएगा।" संगठन के अनुमान के अनुसार, देशभर में लाखों ट्रक ऑपरेटर्स इससे प्रभावित होंगे, खासकर ग्रामीण और छोटे शहरों में जहां डिजिटल पहुंच सीमित है।

**2. प्रक्रियागत और व्यावहारिक चुनौतियां: डिजिटल विभाजन को बढ़ावा**

ड्राफ्ट में डिजिटल चालान की वैधता केवल 3 दिनों तक और फिजिकल की 15 दिनों तक रखी गई है। साथ ही, हर 15 दिनों में रिमाइंडर भेजने का प्रावधान है, लेकिन डॉ. यादव ने इसे अव्यावहारिक बताया। "अधिकांश ट्रक ड्राइवर लंबी दूरी की यात्राओं पर रहते हैं, जहां मोबाइल नेटवर्क या इंटरनेट की पहुंच नहीं होती। Vahan और Sarathi पोर्टल पर निर्भरता ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल डिवाइड को बढ़ाएगी।" उन्होंने उदाहरण दिया कि राउरकेला जैसे औद्योगिक क्षेत्रों में ट्रांसपोर्टर्स पहले से ही सामग्री चोरी और लॉजिस्टिक्स समस्याओं से जूझ रहे हैं; ऐसे में चालान प्रक्रिया का सख्तीकरण उनकी मुश्किलें दोगुनी कर देगा। चालान कैंसिलेशन के लिए कारण रिकॉर्ड करने का प्रावधान अच्छा है, लेकिन यह अधिकारियों के दुरुपयोग को भी आमंत्रित कर सकता है।

**3. कानूनी और अधिकारों का उल्लंघन: प्राइवेसी और न्याय की अनदेखी**

नियमों में 45 दिनों के बाद चालान को डिफॉल्ट रूप से स्वीकार मान लेना और विवाद की गुंजाइश खत्म करना मौलिक अधिकारों का हनन है। डॉ. यादव ने इसे असंवैधानिक करार देते हुए कहा, ₹यह प्राकृतिक न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ है। क्या हर व्यक्ति को अपनी सफाई देने का अधिकार नहीं? एक्सीडेंट के मामलों में 3 दिनों के अंदर चालान जारी करने का प्रावधान अनट्रेसेबल मालिकों के लिए समस्या पैदा करेगा।₹ संगठन का मानना है कि यह नियम पुलिस और अधिकारियों को अधिक शक्ति देगा, जिससे भ्रष्टाचार बढ़ सकता है। साथ ही, यूनिफॉर्म में अधिकृत व्यक्ति द्वारा चालान जारी करने का नियम अच्छा है, लेकिन ग्रामीण सड़कों पर इसका पालन मुश्किल होगा।

**4. पर्यावरण और सेक्टर-विशिष्ट प्रभाव: ट्रांसपोर्ट इकोसिस्टम का असंतुलन**

ट्रांसपोर्ट सेक्टर देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, लेकिन नए नियम ईंधन मिश्रण (जैसे डीजल में इथेनॉल) जैसी अन्य नीतियों के साथ मिलकर ड्राइवरों को प्रभावित करेंगे। डॉ. यादव ने हाल की रिपोर्ट्स का हवाला देते हुए कहा कि इथेनॉल ब्लेंडेड ईंधन से इंजन डैमेज हो रहा है, जिससे इंश्योरेंस क्लेम रिजेक्ट हो रहे हैं। "चालान नियमों का सख्तीकरण ऐसे समय में आया है जब सेक्टर पहले से दबाव में है। यह निर्माण और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में रेत-बजरी जैसे अवैध खेलों को रोकने की बजाय वैध ऑपरेटर्स को निशाना बनाएगा।" संगठन मांग करता है कि केंद्र सरकार सीबीआई जैसी एजेंसियों से जांच कराए, लेकिन चालान नियमों को लचीला बनाए।

डॉ. राजकुमार यादव ने अंत में कहा, "उफ्तत्सा" "राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा" (ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी) इस ड्राफ्ट के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन शुरू करेगा। हम सरकार से अपील करते हैं कि स्टेकहोल्डर्स से चर्चा कर नियमों में संशोधन करें, अन्यथा ट्रांसपोर्ट सेक्टर ठप हो सकता है।" संगठन ने पब्लिक फीडबैक की 30 दिनों की अवधि का उपयोग करते हुए अपनी आपत्तियां दर्ज कराने की योजना बनाई है। अधिक जानकारी के लिए MoRTH की वेबसाइट या egazette.gov.in देखें।

# आप सभी की जानकारी हेतु

1 अक्टूबर, 2025 से, आधार कार्ड में सुधार के लिए आधार नामांकन केंद्र पर सुधार के लिए लगने वाले शुल्क का विवरण:

**आधार नामांकन केंद्र पर**

1. जनसांख्यिकीय अपडेट (जैसे नाम, पता, जन्मतिथि, लिंग, मोबाइल नंबर या ईमेल आईडी के लिए) 75 और
2. बायोमेट्रिक अपडेट (उंगलियों के निशान, आँख की पुतली, फोटो) के लिए 125।
3. बायोमेट्रिक और जनसांख्यिकीय अपडेट की संयुक्त लागत 125.

यह शुल्क आधिकारिक केंद्रों पर अपडेट के लिए हैं;

4. ऑनलाइन जनसांख्यिकीय अद्यतन के लिए 50 का शुल्क लिया जाता है, तथा ऑनलाइन दस्तावेज़ अद्यतन निःशुल्क हैं।

# टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

## मानव अधिकार उल्लंघन की समस्या – वैश्विक परिदृश्य

पिंकी कुंडू :- सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ दिल्ली प्रदेश भाजपा

**1. राजनीतिक दमन (Political Repression):-** अधिनायकवादी शासन (authoritarian regimes) में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस की स्वतंत्रता और विरोध के अधिकार पर अंकुश। उदाहरणः कई देशों में पत्रकारों, एक्टिविस्टों और विपक्षी नेताओं की हत्या या गिरफ्तारी।

**2. युद्ध और सशस्त्र संघर्ष (Wars & Armed Conflicts):-** *सीरिया, यमन, गाज़ा, यूक्रेन जैसे संघर्ष क्षेत्रों में नागरिकों पर हमले।

अंतर्राष्ट्रीय मानवीय कानून (Geneva Conventions) का बार-बार उल्लंघन।

**3. जातीय और धार्मिक भेदभाव (Ethnic & Religious Persecution)**

१. म्यांमार में रोहिंग्या मुसलमानों पर अत्याचार।
२. अफ्रीकी देशों में जनसंहार (genocide) जैसी घटनाएँ।
3. अल्पसंख्यक समुदायों का दमन।

**4. शरणार्थी और प्रवासी संकट (Refugee & Migration Crisis)**

१. संयुक्त राष्ट्र के अनुसार 2024 तक दुनिया में 11 करोड़ से अधिक विस्थापित लोग (displaced persons) हैं।
२. इनमें से लाखों लोग बिना राष्ट्रीयता (stateless) हैं और उनके बुनियादी अधिकार भी नहीं हैं।

**5. आर्थिक और सामाजिक अधिकारों का उल्लंघन**

१. बाल श्रम, मानव तस्करी, जबरन मजदूरी।
२. स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार का अभाव।
3. लैंगिक हिंसा और महिलाओं के खिलाफ भेदभाव।

**सज़ा और जवाबदेही की वास्तविक स्थिति**

1. अंतर्राष्ट्रीय स्तर

१. संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद (UNHRC) शिकायतों की सुनवाई करती है, लेकिन उसके पास प्रत्यक्ष दंडात्मक शक्ति नहीं है।
२. अंतर्राष्ट्रीय अपराध न्यायालय (ICC) युद्ध अपराध, मानवता के खिलाफ अपराध और

जनसंहार (genocide) जैसे मामलों में कार्रवाई करता है।
3. लेकिन कई शक्तिशाली देश ICC को मान्यता नहीं देते (जैसे अमेरिका, चीन, रूस)।

**2. क्षेत्रीय मानवाधिकार निकाय (Regional Mechanisms)**

१. यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय (ECHR) – यूरोप में कई सरकारों को सज़ा और क्षतिपूर्ति देने के आदेश दिए।
२. अफ्रीकी और अमेरिकी मानवाधिकार आयोग/न्यायालय – सीमित प्रभाव।
3. एशिया में कोई मज़बूत क्षेत्रीय मानवाधिकार न्यायालय मौजूद नहीं है।

**3. राष्ट्रीय स्तर**

१. कई देशों में राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग हैं (जैसे भारत का NHRC)।
२. लेकिन ये अक्सर "अनुशंसा" ही कर पाते हैं, सीधी सज़ा नहीं दे सकते।
3. न्यायपालिका की धीमी प्रक्रिया और राजनीतिक दबाव के कारण दोषियों को बहुत देर से या कभी सज़ा नहीं मिलती।

**4. वास्तविकता (Ground Reality)**

१. अधिकांश मामलों में अपराधी बच निकलते हैं, खासकर जब वे राज्य या सेना से जुड़े हों।
२. केवल छोटे या कम शक्तिशाली अपराधियों को ही दंड मिलता है।
3. पीड़ितों को न्याय तक पहुँचने में सालों लग जाते हैं, और कई बार न्याय मिलता ही नहीं।

**कानून बनाम वास्तविकता**

कानूनः यूडीएचआर, जिनीवा कन्वेंशन, आईसीसी स्टेच्यू, और कई राष्ट्रीय संविधानों में मानवाधिकारों की सुरक्षा की गारंटी है।

वास्तविकताः राजनीतिक दबाव, शक्तिशाली देशों की हठधर्मिता और न्यायिक प्रक्रियाओं की कमजोरी के कारण मानवाधिकार उल्लंघनों पर सज़ा कम और प्रतीकात्मक ही रह जाती है। पीड़ित की आवाज़ अक्सर दब जाती है और दोषी "राजनीतिक ढाल" के पीछे सुरक्षित हो जाते हैं।

निष्कर्ष मानव अधिकार उल्लंघन आज भी पूरी दुनिया में बड़ी समस्या है।

1. युद्धग्रस्त क्षेत्रों में आम नागरिक सबसे अधिक प्रभावित हैं।
2. शरणार्थियों और अल्पसंख्यकों के लिए जीवन असुरक्षित बना हुआ है।
3. दंड की व्यवस्था मौजूद है, लेकिन न्याय और वास्तविक सज़ा के बीच लंबी दूरी है।

इसलिए ज़रूरत हैः

1. वैश्विक स्तर पर मज़बूत और निष्पक्ष मानवाधिकार तंत्र की।
2. ऐसे कानून जिन पर सभी देश बाध्य हों और उनका उल्लंघन करने वालों पर तत्काल कड़ी कार्रवाई हो।

**टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत**
www.tolwa.com
tolwaindia@gmail.com
https://www.tolwa.com/member.html

# दिल्ली में पंजीकृत सभी (निजी एवं व्यवसायिक) वाहन मालिकों के लिए जनहित में जारी

परिवहन विशेष न्यूज

परिवहन विभाग दिल्ली द्वारा दिल्ली में पंजीकृत सभी वाहन मालिकों के लिए संदेश

प्रिय वाहन मालिक, कृपया वैध पीयूसी प्रमाणपत्र की समाप्ति से पहले अधिकृत पीयूसी केंद्रों से अद्यतन प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (पीयूसीसी) प्राप्त करें।

इसका पालन न करने पर 10,000 रुपये का जुर्माना तथा 3 महीने की अवधि के लिए ड्राइविंग लाइसेंस की अयोग्यता हो सकती है।

अगर आपने पहले ही ऐसा कर लिया है, तो कृपया इसे अनदेखा करें। इस संदेश को दूसरों तक भी पहुँचाएँ और पंजीकृत वाहन मालिकों से वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (PUCC) प्राप्त करने का आग्रह करें।

*-परिवहन विभाग*

## हर हर वाल्मीकि

समस्त वाल्मीकि समाज एल-ब्लाक शकूरपुर दिल्ली-110034

**(स्नेह निमंत्रण)**

आश्विन माह पूर्णिमा पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भगवान महर्षि वाल्मीकि जी प्रकट दिवस
दिनांक 07 अक्टूबर 2025 को बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है
इस शुभ अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं
कार्यक्रम में शामिल होकर भगवान महर्षि वाल्मीकि जी का आशीर्वाद प्राप्त करें।

*(कार्यक्रम)*
*पुष्प अर्पित एवं भंडारा*
दिनांक : 07 अक्टूबर 2025 मंगलवार
समय : दोपहर 2:00 बजे
स्थान : एल-ब्लाक शकूरपुर चौधरी डेयरी के सामने।
निवेदक : समस्त वाल्मीकि समाज एल-ब्लाक शकूरपुर दिल्ली-34
*(संचालक)*
अशोक वैद, दीपक चौहान, राम अवतार पवार
9958532126 / 9212440655 / 9643836191


# "टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत" सेवा ही संकल्प है!

पिंकी कुंडू, महासचिव टोलवा ट्रस्ट

हमारा मकसद सिर्फ मदद नहीं, बदलाव लाना है।

A voice for the voiceless, and a hand for the helpless.

हमारा उद्देश्य है समाज के उन हिस्सों तक पहुँचना जो आज भी भूख, शिक्षा और आर्थिक तंगी से जूझ रहे हैं। हम जरूरतमंदों को बिना भेदभाव के भोजन, बच्चों को मुफ़्त शिक्षा, और समाज को जागरूकता देने का कार्य कर रहे हैं।

**क्या मिलेगा हमसे जुड़कर**

Ground-level food distribution,

Getting children free education,

हम मानते हैं – छोटा कदम भी बड़ा बदलाव ला सकता है।

SCAN ME

If you believe in humanity, equality, and service — then you're already a part of our family.

हमें सपोर्ट करें और एक आवाज़ बनें इस बदलाव की।

Together, let's serve. Together, let's change.

टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से जुड़ने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें और फार्म भरकर जुड़े,

www.tolwa.com/member.html

स्कैनर को स्कैन कर के भी आप टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत से फार्म भर कर जुड़ सकते हैं,

वेब साइट पर www.tolwa.com पर भी जाकर आप फार्म भर के टोलवा ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं। www.tolwa.com

*टोलवा ट्रस्ट पंजीकृत*
*tolwaindia@gmail.com*
*www.tolwa.com*

# साधक जिज्ञासा : "जब भगवान हर जगह समान रूप से हैं, तो वृंदावन की क्या विशेषता है??"

1.)रामचरितमानस में लिखा है ---₹हरि व्यापक सर्वत्र समाना !प्रेम ते प्रकट होई मैं जाना !₹...सच में भगवान सर्वत्र समान रूप से व्याप्त हैं !पर वो वहां अव्यक्त रूप से हैं !जब कोई भक्त प्रेम से उनका आह्वान करता है,तो वो व्यक्त/प्रकट हो जाते हैं !...तो वृंदावन में आदि काल से अब तक असंख्य प्रेमी भक्तों का वास रहा है !इसलिए यहां भगवान सदा प्रकट रहते हैं !

2.)वृंदावन सहित चौरासी कोस की दिव्य भूमि पृथ्वी का हिस्सा नहीं है !ये भगवान कृष्ण के लीला मंच के रूप में भगवान के परम गोलोक धाम से नीचे उतरी है !... वराह अवतार में जब भगवान पृथ्वी को अपने नथुने पर उठाकर ऊपर ला रहे थे,तो पृथ्वी को अपने सौभाग्य पर गर्व हो गया !तब उसका गर्व चूर करने हेतु उन्होंने यमुना जी के तट पर उसे वृंदावन का दर्शन कराया !पृथ्वी आश्चर्यचकित होकर बोली,₹पृथ्वी तो मैं हूं,और अभी मैं अपनी कक्षा में स्थित भी नहीं हुई हूं !फिर आप मुझे ये किस पृथ्वी का दर्शन करा रहे हैं ?₹...भगवान ने कहा,₹ये पृथ्वी का हिस्सा नहीं है !ये मेरा घर,मेरा धाम है !ना इसका कभी सृजन होता है और ना कभी नाश होता है !₹...वो स्थान आज भी वृंदावन में ₹वराह घाट₹ के नाम से प्रसिद्ध है !वहां वराह भगवान का अति प्राचीन मंदिर भी है !

3.)बृज वृंदावन का अर्थ है --- जहां भगवान के प्रति सबका नितांत अपनापन होता है !वहां भगवान को भगवान के रूप में कोई नहीं मानता !वहां भगवान के प्रति साख्य,वात्सल्य या माधुर्य भाव ही प्रमुख/प्रबल होता है !...ये जगत से निराला भाव,अति दुर्लभ भाव है !इस भाव वाले भक्त के द्वारा भगवान अधीन हो जाते हैं !...संत सूरदास जी ने अपने पद ₹सबसे ऊंची प्रेम सगाई₹ में विदुर,शबरी,युधिष्ठिर और अर्जुन के भगवत प्रेम का वर्णन किया है !किंतु अंतिम पंक्ति में वे लिखते हैं --- ₹ ऐसी प्रीत बढ़ी वृंदावन,गोपिन नाच नचाई !₹,अर्थात वृंदावन में तो प्रेम इतना अधिक बढ़ गया,कि गोपियों ने कृष्ण को नचा दिया !(जैसा रसखान जी ने भी अपने सवैये में लिखा है --- ₹ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरी छाछ पे नाच नचावे !₹ )...वृंदावन के सेवाकुंज में श्रीकृष्ण ने राधाजी के चरण दबाए हैं !प्रेम की इस परिकाष्ठा का दर्शन मात्र वृंदावन में ही मिलता है !

4.)पद्म पुराण में भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं ---₹मेरे काशी धाम में तो केवल मरने से मुक्ति मिलती है !पर वृंदावन धाम में चार चार प्रकार से मुक्ति मिलती है ! --- वृंदावन में जन्म होने से,वहां मरने से,वहां दीर्घ काल तक वास करने से,और वहां अंतिम संस्कार होने से !...अर्थात भले कोई कहां भी मरे,बस उसके मृत शरीर को लाकर वृंदावन में फूंक दिया जाए,तो भी उसकी मुक्ति हो जाती है !...अन्य जगह वर्णित है कि 16 संस्कारों में से कोई भी एक संस्कार यदि वृंदावन में संपन्न हो जाए,तो उस व्यक्ति की मुक्ति पक्की हो जाती है !...इतनी सारी सुविधाएं अन्य किसी तीर्थ या धाम में नहीं मिलतीं !

5.)बृज वृंदावन एक मात्र ऐसा धाम है,जहां की सबसे तुच्छ वस्तु( मिट्टी ) की महिमा सबसे अधिक है !उसे मिट्टी नहीं,रज कहते हैं !उसके एक एक कण में महाविष्णु का वास है !बालकृष्ण ने उसको मुंह में लिया था,और ब्रह्मा सम्मोहन लीला में जब श्रीकृष्ण ही सब बछड़े बन गए थे,तो उन असंख्य रूपों में उन्होंने ही घास चरते हुए एक वर्ष तक रज को चाटा था !अतः बृज/वृंदावन में दो इंच भूमि भी ऐसी नहीं है जो उन्होंने चाटी ना हो !...प्रसिद्ध दोहा है ---₹मुक्ति कहे गोपाल से,मेरी मुक्ति बताए !बृज रज उड़ मस्तक लगे,मुक्ति हु मुक्त होए जाए !₹

6.)एक बार तीर्थराज प्रयाग ने भगवान श्रीकृष्ण के पास आकर कहा,₹जब भी तीर्थों की सभा होती है,तो सभी तीर्थ अपनी हाजरी लगाने तथा कर भरने आते हैं !पर ये वृंदावन कभी नहीं आता !₹ तब भगवान ने उससे कहा,₹खबरदार !वृंदावन कोई तीर्थ नहीं,बल्कि मेरा धाम/घर है !मैंने तुम्हें सारे तीर्थों का राजा बनाया है ; अपने घर का राजा नहीं बनाया !वृंदावन की शिकायत करने के कारण तुमको मैं ये दंड देता हूं,कि तुम्हें वृंदावन में एक वर्ष तक गधा बनकर रहना पड़ेगा !₹ ऐसा ही हुआ !गधे की प्रवृत्ति मिट्टी में लोटने की होती है !तो गधे के रूप में प्रयागराज जीभर कर बृजरज में लोटते रहे और इसके फलस्वरूप वो पूर्णतः निष्पाप हो गए !

7.)रसिक वाणी में लिखा है ---₹और देश के बसत ही,अधिक भजन जो होई !इही सम नहिं पूजत तऊ,वृंदावन रहै सोई ! !₹,अर्थात,अन्य तीर्थ स्थानों में रहकर यदि बहुत भजन भी हो,तो वो वृंदावन में आकर सोने के समान भी नहीं है !...अन्य वाणी में लिखा है,₹भजन गहत फिरे बांह !₹,अर्थात,अन्य स्थानों में बहुत यत्न करने पर भी भजन नहीं होता,किंतु वृंदावन में भजन स्वयं साधक की बांह पकड़े रहता है !...वृंदावन का आश्रय लेकर सर्वसाधनशून्य व्यक्ति भी अपना परम कल्याण कर सकता है !

8.)वृंदावन राधाकृष्ण की नित्यविहार स्थली है और रसिकों की राजधानी है !वृंदावन में श्रीकृष्ण जैसा ही अदभुत आकर्षण है !अन्य तीर्थस्थान जाकर लोग कह देते हैं कि हम वहां हो आए,वहां हो आए !किंतु वृंदावन आकर कोई नहीं कहता,कि हम वृंदावन हो आए !बल्कि उन्हें बारबार वृंदावन आने का चस्का लग जाता है !अरे दूसरों की कौन कहे !?!,...वृंदावन के प्रति तो भगवान राधाकृष्ण भी लुभाएमान रहते हैं !...यहां एक अन्य तथ्य भी उल्लेखनीय है,कि वृंदावन में ही भारत के समस्त तीर्थ सूक्ष्म रूप से विराजमान हैं !( नंद यशोदा जी की जब तीर्थयात्रा की इच्छा हुई थी,तब श्रीकृष्ण ने बृजमंडल में ही सारे तीर्थ प्रकट कर दिए थे !चौरासी कोस यात्रा में उन सबका दर्शन होता है --- हरिद्वार,उज्जैन,गया,बद्रीनाथ इत्यादि !)

9.)वृंदावन के सब वासी दिव्य हैं !यहां के पेड़ भी बड़े बड़े ऋषि मुनि हैं,जो पेड़ के रूप में भजन कर रहे हैं !शास्त्रों में लिखा है कि वृंदावन में प्रविष्ट होते ही जीव कृष्ण रूप हो जाता है !जैसे नमक की झील में जो कुछ भी फेंक दिया जाए,वो नमक बन जाता है !

10.)अंत में बस इतना कहना चाहूंगा कि वृंदावन की विशेषता शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं की जा सकती !इसका अनुभव तो कोई प्रेमी भक्त ही कर सकता है !...उद्धव जी जैसे महाज्ञानी भी यहां आकर अपनी सुधबुध खो बैठे थे,और गोपियों के प्रेम रंग में रंग गए थे !...त्रिभुवन के गुरू,देवाधिदेव महादेव शिवजी तो आज तक यहां "गोपेश्वर" बने बैठे हैं !...इसलिए कहावत है --- "चढ़े जो वृंदावन को रंग,गोपी भाव सहज में उपजे,पुरुष भाव होए भंग !"...श्री लक्ष्मी जी तो गोपी भाव में वृंदावन वास की इच्छा से अखंड तपस्या कर रही हैं,किंतु अभी तक उन्हें वृंदावन में एंट्री नहीं मिली !अस्तु !!

**--- कविचंद्र दास,वृंदावन**

# सदा शिव – अनंत, अचल और शुभ का प्रतीक

सदा शिव का अर्थ है ₹हमेशा शिव₹ – जो कालातीत हैं, जिनका न तो आदि है न अंत। वे सृष्टि के आरंभ से पहले भी थे और अंत के बाद भी रहेंगे।

सदा शिव को पंचमुखी स्वरूप में भी जाना जाता है – ये पाँच मुख ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, महेश और सदाशिव को दर्शाते हैं। ये पाँच तत्वों – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश – के अधिपति भी हैं।

सदाशिव केवल विनाशक नहीं, वे परम करुणामयी भी हैं। वे हमें अज्ञानता से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं।

उनका ध्यान करने से मन शांत होता है, आत्मा को स्थिरता मिलती है और जीवन में आध्यात्मिक उन्नति होती है। ॐ नमः शिवाय – इस महामंत्र का जाप सदा शिव के प्रति हमारी श्रद्धा को प्रकट करता है।

हर हर महादेव!

# 'विषय - अहंता ममता का त्याग ।'

निर्मम निरहंकार हो जाएं, तो उसको शांति की प्राप्ति हो जाती है ।तो हम निर्मम हो जाएं ।निर्मम का अर्थ है ममता रहित ।जैसे धन है, कुटुंब है ।यह धन में, कुटुंब में ममता है, उनको मेरा मानता है ।इन से रहित हो जाए ।ममता से रहित हो जाए।

यह कठिन है, ऐसी बात आती है ।

तो ममता से रहित कैसे हों ?

ममता रहित होना कठिन मानते हैं, उनसे पूछना है कि ममता रखना सुगम है क्या ?

भगवान्ममता रहित होने की कहते हैं तो हम ममता रहित हो सकते हैं; क्योंकि भगवान्कह रहे हैं ।निर्मम निरंकार हैं ।अभी जो ममता है, इसको रख सकते हो क्या ?ममता रहित तीन तरह से होता है ।ममता शुद्ध होती है (कर्मयोग द्वारा), ममता को मिटा सकते हैं (ज्ञान योग द्वारा) और ममता को बदल सकते हैं (भक्ति योग द्वारा) ।आपकी कन्या का विवाह हो जाता है ।तो उसकी ममता ससुराल में हो जाती है ।तो ममता बदल गई ।कोई गोद चला जाता है, तो उसकी ममता बदल जाती है ।तो ममता बदलना आता है ।मीराबाई कहती है - मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई ।मेरा तो भगवान्है ।ऐसे आप बदल दो तो निहाल हो जाओगे ।संसार में मेरा कोई नहीं है, भगवान्मेरा है ।शरीर पर मेरा वश चलता है क्या ?कम से कम मरने न दें ।कन्या ममता बदल देती है, साधु हो जाता है, तो बदल जाता है ।गोद जाने वाले ममता बदल देता है ।तो ममता बदल जाती है, तो बदलना है - यह भक्ति योग हो गया ।ममता मिटाना ज्ञान योग है ।चाहे ममता मिटा दो, चाहे ममता बदल दो, जो सुगम हो वह कर लो ।मैं भगवान्का हूं, भगवान्मेरे हैं ।यह ममता बदल गई ।मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ।भगवान्को अपना मानते हैं, पर दूसरा नहीं - यह नहीं मानते ।भगवान्को तो अपना मानते ही हैं ।दूसरों को अपना न माने ।

मेरी मां है कैसे अपना न मानें ?

मेरा पुत्र है, कैसे अपना ना मानें ?

मेरी स्त्री है, कैसे अपना न मानें ?

मेरा घर है, कैसे अपना न मानें ?

तो ममता तोड़ने का उपाय सीधा है ।नियत आपकी चाहिए ।हमें तो बदलना है ।यह बदलने का एक बड़ा सुंदर उपाय है ।बदल जाएगा ।जिनके साथ मेरा पन है, उनको सुख दो ।सुख लो मत ।सेवा करो, उनसे सेवा मत लो ।स्त्री मुझे भोजन बना कर दे, ऐसे आशा मत करो ।उनकी

सेवा तो करो, पर सेवा मत लो ।स्त्री समझती है कि मेरे हाथ की रोटी नहीं खाते, तो उसकी प्रसन्नता के लिए रोटी खा लो ।सबका हित हो जाए, सबका कल्याण हो जाए, यह भाव होगा तो फंसोगे नहीं ।सेवा लेने से फंसता है ।उन को सुख पहुंचाना है, सुख लेना नहीं है ।सुख लेने से ममता बढ़ती है ।देने से ममता मिटती है ।आप काम में ले कर देखो। सेवा करो, जितनी सेवा कर सकते हो, उतनी करो ।अपने से ज्यादा उनको दे दो ।आप जितने कपड़े लेते हो, उनको अपने से ज्यादा कपड़े दे दो ।आप जितना मकान काम में लेते हो, अपने से ज्यादा मकान दे दो ।ज्यादा आशा करे तो हाथ जोड़ लो ।ज्यादा मांगते हैं तो आपकी जिम्मेदारी है ही नहीं; क्योंकि आपके पास है ही नहीं ।

सेवा दो तरह की जाती है - वस्तु दे दो अथवा काम धंधा कर दो ।साधु भिक्षा लेने जावे, नहीं मिले तो क्या करे ? हमने अपना काम कर दिया (यानि भिक्षा मांग ली), 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।' ।मिले तो आनंद, नहीं मिले तो आनंद ।तो घर में कोई बात माने तो आनंद की बात, नहीं माने तो बहुत आनंद की बात; क्योंकि नैराश्यं परम सुखं ।बात मानने से फंसावट आती है ।न मानने से निर्लिप्त हो जाता है ।मानने से संत महात्मा वश में हो जाते हैं ।मानने से भगवान्वश में हो जाते हैं ।कलकत्ते में मैंने एक बार कह दिया था कि आप हमारी बात मानते तो हम तो फंस जाते, नहीं मानते हो तो स्वतंत्र रहता हूं ।बात मानते तो दूर बैठे ही याद करते ।तो सुंदर-सुंदर बात कह दे, कोई माने तो अच्छी बात ।नहीं माने तो अच्छी बात ।हमने तो अपनी बात कह दी ।हांडी चढ़ गई वाली कहानी से समझा रहे हैं कि मैंने तो मेरी बात कह दी ।मेरी हांडी तो चढ़ गई ।आपकी आप जाने । 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।'

# मन- जहाँ उत्सव कर आनंद भी है

आनंद पाने के लिए मैंने सैकड़ों पुस्तकें पढ़ीं ।जगह-जगह पर्यटन के लिए गया, पर सब निरर्थक सिद्ध हुआ। पर जब अपने अंदर की ओर मुड़ा जहाँ जीवनी शक्ति विराजमान है, उसको जाना-पहचाना तो वास्तव में जीवन के आनंद से साक्षात्कार हुआ।

चैतन्य से जुड़ने पर जीवन का आनंद प्राप्त होता है। आनंद के लिए हम लोग कहाँ-कहाँ नहीं भटकते और कैसे-कैसे उपाय नहीं करते। लेकिन वह आनंद क्षणिक होता है।

साधनों से प्राप्त आनंद कुछ समय बाद छूट जाता है। लेकिन अपने अंदर जो चैतन्य है, उससे जुड़ने पर जीवन का सच्चा आनंद प्राप्त होता है। हमें अपने जीवन में सदा यही प्रयास करना चाहिए कि हम अपने चैतन्य से जुड़े रहें।

हमारा आकर्षण सौंदर्य के प्रति सदैव रहता है। पर क्यों? हम क्यों सुंदर चीजें और सुंदर रूप देखना पसंद करते हैं, उसे क्यों पाना चाहते हैं? क्योंकि हमारे अंदर भी सौंदर्य का अद्भुत संग्रह बसा है। उस सौंदर्य को न निहार पाने के कारण हम एक तरह की अतृप्ति, एक प्यास, एक रिक्तपन अनुभव करते हैं, और उसकी खोज में बाहर के सौंदर्य की ओर आकर्षित होते हैं।

विडंबना ही है कि सबसे निकट का सौंदर्य हमारी अनुभूति में नहीं आ रहा, इसलिए उसे बाहर खोज रहे हैं। जितने भी संत-महात्मा हुए, उन सभी ने अलग-अलग ढंग से अपने अनुभव में यही बात कही और जीवन के इस रहस्यमय सौंदर्य को प्राप्त करने की प्रेरणा अपने मन को दो।

जब मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसका मुख ढक दिया जाता है, चाहे वह कितना ही सुंदर क्यों न हो, ऐसा क्यों? वह मृत काया हमें सुंदर क्यों नहीं लगती? सोने जैसी सुंदर देह को निष्प्राण हो जाने पर जला देते हैं या फिर जमीन में गाड़ देते हैं। इसका अर्थ यह है कि जीवन का असली सौंदर्य वह 'प्राण शक्ति' ही है, जिससे जीवन संचरित होता है।

संत-महात्मा कहते हैं कि जीवन की सुंदरता हमारे अंदर है। उसका आकर्षण ऐसा है, जैसे पतंगे का होता है। असली आकर्षण इस सांस के साथ, इस जीवन के साथ है जो हमारे अंदर है। लेकिन इसे पहचानना होगा। जीवन के इस सौंदर्य से परिचित हो कर 'जीवन का उत्सव' मनाया जाना चाहिए। इसके लिए कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि अपने अंदर झाँकना है और तृप्त हो जाना है।

जीवन के इस सौंदर्य में एक सुमधुर संगीत (अनहद नाद) है, एक थिरकन है, स्पंदन है, नृत्य है। इस नृत्य के साथ अपनी लय जोड़कर नृत्य का आनंद उठा सकते हैं, झूम सकते हैं। चूंकि जीवन शाश्वत है, रसीला और संगीतमय है, विलक्षण नृत्य से परिपूर्ण है, इसलिए भीतर तो जीवन का उत्सव हो ही रहा है। इसका आयोजन हमें नहीं करना है, केवल अंतःकरण में जाकर उस उत्सव के साथ जुड़ जाना है।

!!!...जीवन सरल, सहज और मधुर है। इसलिए अपने अंदर झाँको और स्वर्ग के उपवन में भ्रमण करो और जीवन के मधुरस का पान कर कृत्य-कृत्य हो जाओ...!!!

आत्मरक्षा में धर्मयुद्ध करना मनुष्य का परम धर्म है

# जीवन में हर चीज बदलती है, लेकिन व्यवहार, करूणा और लगाव की भावना कभी बूढ़ी नहीं होती

यह केवल शब्द ही नहीं हैं, यह हमारे जीवन की अनुभूति हैं। यह हमें याद दिलाते हैं कि जीवन कीडी अस्थिरता में भी कुछ चीजें हमेशा रहती हैं, जैसे कि प्रेम, विश्वास, समर्थन और साथ। इन भावनाओं का महत्व समय के साथ-साथ बढ़ता है। यह हमारे जीवन को अर्थ और गहराई प्रदान करते हैं। जीवन की यात्रा में हमें अपने जीवन में आयें सभी संबंधों/रिश्तों, भले ही वह रक्तजनित हों, विवाह से जुड़े हैं या किसी अन्य विद, सबके प्रति हमारा भावनात्मक महत्व होना श्रेयस्कर है। इससे हमारे सामाजिक/सांसारिक/व्यावहारिक जीवन को सच्ची खुशी और संतुष्टि प्राप्त होती है।

# काम कोई भी छोटा नहीं

एक बार भगवान अपने एक निर्धन भक्त से प्रसन्न होकर उसकी सहायता करने उसके घर साधु के वेश में पधारे।

उनका यह भक्त जाति से चर्मकार था और निर्धन होने के बाद भी बहुत दयालु और दानी प्रवृत्ति का था।

वह जब भी किसी साधु-संत को नंगे पाँव देखता तो अपने द्वारा गाँठी गई जूतियाँ या चप्पलें बिना दाम लिए उन्हें पहना देता। जब कभी भी वह किसी असहाय या भिखारी को देखता तो घर में जो कुछ मिलता, उसे दान कर देता।

उसके इस आचरण की वजह से घर में अकसर फाका पड़ता था। उसकी इन्हीं आदतों से परेशान होकर उसके माँ-बाप ने उसकी शादी करके उसे अलग कर दिया, ताकि वह गृहस्थी की ज़म्मिदारियों को समझें और अपनी आदतें सुधारें।

लेकिन इसका उस पर कोई असर नहीं हुआ और वह पहले की ही तरह लोगों की सेवा करता रहा। भक्त की पत्नी भी उसे पूरा सहयोग देती थी।

ऐसे भक्त से प्रसन्न होकर ही भगवान उसके घर आए थे, ताकि वे उसे कुछ देकर उसकी निर्धनता दूर कर दें तथा भक्त और अधिक ज़रूरतमंदों की सेवा कर सके।

भक्त ने द्वार पर साधु को आया देख अपने सामर्थ्य के अनुसार उनका स्वागत सत्कार किया। वापस जाते समय साधू भक्त को पारस पत्थर देते हुए बोले- इसकी सहायता से तुम्हें अथाह धन संपत्ति मिल जायेगी और तुम्हारे सारे कष्ट दूर हो जाएँगे। तुम इसे सँभालकर रखना।

इस पर भक्त बोला- फिर तो आप यह पत्थर मुझे न दें। यह मेरे किसी काम का नहीं। वैसे भी मुझे कोई कष्ट नहीं है। जूतियाँ गाँठकर मिलने वाले धन से मेरा काम चल जाता है। मेरे पास राम नाम की संपत्ति भी है, जिसके खोने का भी डर नहीं।

यह सुनकर साधु वेशधारी भगवान लौट गए।

इसके बाद भक्त की सहायता करने की कोई कोशिशों में असफल रहने पर भगवान एक दिन उसके सपने में आए और बोले-प्रिय भक्त! हमें पता है कि तुम लोभी नहीं हो। तुम कर्म में विश्वास करते हो। जब तुम अपना कर्म कर रहे हो तो हमें भी अपना कर्म करने दो।

इसलिए जो कुछ हम दें, उसे सहर्ष स्वीकार करो। भक्त ने ईश्वर की बात मान ली और उनके द्वारा की गई सहायता और उनकी आज्ञा से एक मंदिर बनवाया और वहाँ भगवान की मूर्ति स्थापित कर उसकी पूजा करने लगा।

एक चर्मकार द्वारा भगवान की पूजा किया जाना पंडितों को सहन नहीं हुआ। उन्होने राजा से इसकी शिकायत कर दी।

राजा ने भक्त को बुलाकर जब उससे पूछा तो वह बोला-मुझे तो स्वयं भगवान ने ऐसा करने को कहा था।

वैसे भी भगवान को भक्ति प्यारी होती है, जाति नहीं। उनकी नज़र में कोई छोटा-बड़ा नहीं, सब बराबर हैं।

राजा बोला- क्या तुम यह साबित करके दिखा सकते हो? भक्त बोला- क्यों नहीं। मेरे मंदिर में विराजित भगवान की मूर्ति उठकर जिस किसी के भी समीप आ जाए, वही सच्चे अर्थों में उनकी पूजा का अधिकारी है। राजा तैयार हो गया।

पहले पंडितों ने प्रयास किए लेकिन मूर्ति उनमें से किसी के पास नहीं आई। जब भक्त की बारी आई तो उसने एक पद पढ़ा-₹देवाधिदेव आयो तुम शरना, कृपा कीजिए जान अपना जना।' इस पद के पूरा होते ही मूर्ति भक्त की गोद में आ गई। यह देख सभी को आश्चर्य हुआ।

राजा और रानी ने उसे तुरंत अपना गुरु बना लिया।

इस भक्त का नाम था रविदास। जी हाँ, वही जिन्हें हम संत रविदास जी या संत रैदास जी के नाम से भी जानते हैं।

जिनकी महिमा सुनकर संत पीपा जी, श्री गुरुनानकदेव जी, श्री कबीर साहिब जी, और मीरांबाई जी भी उनसे मिलने गए थे। यहाँ तक कि दिल्ली का शासक सिकंदर लोदी भी उनसे मिलने आया था। उनके द्वारा रचित पदों में से 39 को ₹श्री गुरुग्रन्थ साहिब' में भी शामिल किया गया है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि इन सबके बाद भी संत रविदास जीवन भर चमड़े की जूतियां गाँठने का काम करते रहे, क्योंकि वे किसी भी काम को छोटा नहीं मानते थे।

जिस काम से किसी के परिवार का भरण-पोषण होता हो, वह छोटा कैसे हो सकता है।

# महर्षि वाल्मीकि जयंती आज

आश्विन मास की पूर्णिमा का विशेष महत्व है। इस दिन शरद पूर्णिमा के साथ-साथ महर्षि वाल्मीकि की जयंती भी मनाई जाएगी। वाल्मीकि जी ने हिंदू धर्म के सबसे अहम महाकाव्यों में से एक रामायण की रचना की थी। महर्षि वाल्मीकि को ही संसार का पहला कवि माना जाता है।

**कब है वाल्मीकि जयंती?**

===================

हिंदू पंचांग के अनुसार, इस बार आश्विन पूर्णिमा तिथि सोमवार, 6 अक्टूबर की दोपहर 12 बजकर 24 से शुरू होगी और मंगलवार, 7 अक्टूबर को सुबह 9 बजकर 17 मिनट पर तिथि का समापन होगा। इस तरह 6 और 7 अक्टूबर, दोनों ही दिन आश्विन मास की पूर्णिमा का संयोग बन रहा है। लेकिन पूर्णिमा तिथि का व्रत 6 अक्टूबर को किया जाएगा। 7 अक्टूबर को वाल्मीकि जयंती मनाई जाएगी।

**महर्षि वाल्मीकि कौन थे?**

===================

रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। लेकिन उन्होंने बहुच छोटी उम्र में ही घर छोड़कर वैराग्य जीवन अपना लिया था। लोक कथाओं के अनुसार उनका नाम रत्नाकर था। एक दिन वे महर्षि नारद से मिले। नारदजी ने उन्हें आत्मज्ञान और सत्य का मार्ग दिखाया। नारदजी ने उन्हें ₹राम-राम₹ नाम का जाप कराया। और तब से ही उनका जीवन बदल गया।

**महर्षि वाल्मीकि की रचनाएं**

===================

वाल्मीकि जी ने भगवान श्रीराम के जीवन, संघर्ष, आदर्श और धर्म की स्थापना की कथा को महाकाव्य रामायण के रूप में लिखा। आगे चलकर जब माता सीता को वनवास मिला, तब वाल्मीकि जी ने ही उन्हें अपने आश्रम में आश्रय दिया था। उनके दोनों पुत्रों लव और कुश का जन्म भी इसी आश्रम में हुआ और उन्होंने ही वाल्मीकि जी से रामायण का ज्ञान प्राप्त किया। रामायण में लगभग 24,000 श्लोक हैं। यह संस्कृत के सबसे प्राचीन महाकाव्यों में से एक हैं। उन्हें आदिकवि भी कहा जाता है।

# बच्चों की खांसी को कम करने के घरेलू नुस्खे

बदलते मौसम में बच्चों को सर्दी-जुकाम और खाँसी होना आम बात है। अक्सर पैरेंट्स बच्चों की cough problem को लेकर परेशान रहते हैं और बार-बार दवा देने से बचना चाहते हैं।

ऐसे में आयुर्वेदिक और घरेलू नुस्खे (Home Remedies) बच्चों की इम्यूनिटी को मजबूत बनाने के साथ खांसी से भी राहत दिलाने में मददगार साबित हो सकते हैं।

यहाँ हम आपको बता रहे हैं 5 आसान और सुरक्षित घरेलू नुस्खे, जिन्हें आप डॉक्टर की सलाह लेकर बच्चों की खांसी और गले की खराश को कम करने के लिए आज़मा सकते हैं।

**1. हल्दी और शहद**

हल्दी में मौजूद एंटी-बैक्टीरियल गुण गले के इंफेक्शन को कम करने में मदद करते हैं। वहीं शहद (Honey) बच्चों की इम्यूनिटी बढ़ाने और गले की खराश को शांत करने में असरदार है। खांसी होने पर आप 1 साल से अधिक उम्र के बच्चे को हल्दी पाउडर की चुटकी शहद में मिलाकर दे सकते हैं।

**2. लहसुन और शहद**

लहसुन (Garlic) और शहद दोनों ही प्राकृतिक एंटी-वायरल और एंटी-बैक्टीरियल माने जाते हैं। यह गले की सूजन कम करते हैं और infection से लड़ने में मदद करते हैं। आप 2 साल से अधिक उम्र के बच्चे को बारीक कटे हुए लहसुन को शहद में मिलाकर थोड़ी मात्रा में दे सकते हैं।

**3. तुलसी के पत्ते**

आयुर्वेद में तुलसी को "Queen of Herbs" कहा गया है। तुलसी के पत्तों का रस शहद के साथ देने से बच्चों की खांसी और गले की खराश कम होती है।

आप चाहें तो तुलसी की कुछ पत्तियां पानी में उबालकर उसमें शहद डालकर बच्चों को पिला सकते हैं।

**4. नीलगिरी का तेल**

छोटे बच्चों (2 साल से कम) के लिए नीलगिरी का तेल काफी लाभकारी है। आप बच्चे के तकिए या कमरे में नीलगिरी ऑयल की कुछ बूंदें डाल दें। इससे बच्चे की बंद नाक खुल जाएगी और साँस लेने में आसानी होगी।

**5. मिश्री**

गले की खराश और जलन को कम करने के लिए मिश्री एक कारगर उपाय है। यह गले में नमी बनाए रखती है और खांसी से राहत दिलाती है।

आप बच्चों को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में मिश्री चटवा सकते हैं। इसके अलावा बाजार में उपलब्ध कुछ soothing lozenges भी अल्पकालिक राहत दे सकते हैं।

**निष्कर्ष**

बच्चों की खांसी को कम करने के लिए हल्दी, शहद, लहसुन, तुलसी, नीलगिरी तेल और मिश्री जैसे घरेलू नुस्खे सुरक्षित और आसान उपाय हो सकते हैं। आयुर्वेद के इन छोटे-छोटे प्रयोगों से न केवल खांसी बल्कि बच्चे की इम्यूनिटी भी बेहतर हो सकती है।

# करवा चौथ पूजा की सामग्री, संपूर्ण पूजन विधि और कथा

ज्यो:शैलेन्द्र सिंगला पलवल हरियाणा

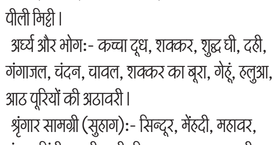

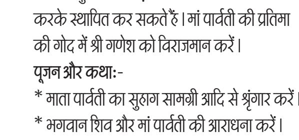

करवा चौथ का व्रत कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि के दौरान किया जाता है। इसे करक चतुर्थी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन मिट्टी के पात्र, जिसे करवा या करक कहते हैं, से चंद्रमा को जल अर्पित किया जाता है (जो कि अर्घ्य कहलाता है)। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और उन्नति के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और विधिवत पूजन करती हैं। धार्मिक दृष्टि से इस व्रत में करवा माता के साथ ही भगवान शिव, माता पार्वती और चंद्रमा की पूजा का विशेष महत्व है।

**करवा चौथ २०२५ शुभ मुहूर्त**

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार, करवा चौथ का व्रत 10 अक्टूबर २०२५, शुक्रवार के दिन रखा जाएगा।

चतुर्थी तिथि प्रारम्भ:- 09 अक्टूबर २०२५, रात्रि 10:54 बजे

चतुर्थी तिथि समाप्त:- 10 अक्टूबर २०२५, शाम 07:38 तक

करवा चौथ व्रत:- 10 अक्टूबर २०२५ (उदायातिथि अनुसार)

पूजा मुहूर्त:- शाम 06:06 से 07:19 तक

व्रत समय:- सुबह 06:२1 से रात्रि 08:34 तक

चंद्रोदय:- रात्रि 08:34 तक

करवा चौथ पूजा की आवश्यक सामग्री:-

करवा चौथ पर्व की पूजन सामग्री इस प्रकार है:-

पूजन के लिए:- मिट्टी का टोंटीदार करवा व ढक्कन, दीपक, रुई, अगरबत्ती, कपूर, पुष्प, लकड़ी का आसन, छलनी, पानी का लोटा, गौरी बनाने के लिए पीली मिट्टी।

अर्घ्य और भोग:- कच्चा दूध, शक्कर, शुद्ध घी, दही, गंगाजल, चंदन, चावल, शक्कर का बूरा, गेहूं, हलुआ, आठ पूरियों की अठावरी।

श्रृंगार सामग्री (सुहाग):- सिन्दूर, मेंहदी, महावर, कंघा, बिंदी, चुनरी, चूड़ी, बिछुआ, कुमकुम, हल्दी, शहद।

अन्य:- मिठाई, दक्षिणा के लिए पैसे आदि संपूर्ण सामग्री इकट् ठा करके रख लें।

**करवा चौथ की सरल पूजन विधि**

व्रत संकल्प:- सूर्योदय से पूर्व उठकर, स्नानादि करके स्वच्छ कपड़े पहनें और श्रृंगार करें। निर्जला व्रत का संकल्प बोलकर व्रत आरंभ करें। जलपान न करें।

प्रातः मंत्र जाप:- प्रातःकाल पूजा के समय निम्न में से किसी एक मंत्र का जप करें:-

मम सुखसौभाग्य पुत्रपौत्रादि सुस्थिर श्री प्राप्तये करक चतुर्थी व्रतमहं करिष्ये।

अथवा, देवताओं के नाम से पूजन करें:-

'ॐ शिवायै नमः' से पार्वती का, 'ॐ नमः शिवाय' से शिव का, 'ॐ षण्मुखाय नमः' से स्वामी कार्तिकेय का, 'ॐ गणेशाय नमः' से गणेश का, 'ॐ सोमाय नमः' से चंद्रमा का पूजन करें।

स्थापना:- सायंकाल, बालू अथवा सफेद मिट्टी की वेदी पर या लकड़ी के आसन पर शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश और चंद्रमा की स्थापना करें। मूर्ति न होने पर सुपारी पर नाड़ा बांधकर देवता की भावना करके स्थापित कर सकते हैं। मां पार्वती की प्रतिमा की गोद में श्री गणेश को विराजमान करें।

**पूजन और कथा:-**

* माता पार्वती का सुहाग सामग्री आदि से श्रृंगार करें।
* भगवान शिव और मां पार्वती की आराधना करें।
* कोरे करवे में पानी भरकर उसकी पूजा करें।
* एक लोटा, एक वस्त्र व एक विशेष करवा दक्षिणा के रूप में अर्पित करें।
* पूजन के समय करवा चौथ कथा अवश्य सुनें या सुनाएं।

**चंद्रमा को अर्घ्य और व्रत पारण:-**

चाँद को छलनी से देखने के बाद चंद्रमा की पूजा करनी चाहिए।

चंद्रोदय के बाद चंद्रमा को अर्घ्य देते समय इस मंत्र को बोलें:-

- चंद्रोदय के बाद चंद्रमा को अर्घ्य देते समय यह मंत्र बोलें-

'करकं क्षीरसंपूर्णा तोयपूर्णमयापि वा।
ददामि रत्नसंयुक्तं चिरंजीवतु मे पतिः॥
इति मन्त्रेण करकान्प्रदद्याद्विजसत्तमे।
सुवासिनीभ्यो दद्याच्च आदद्यात्ताभ्य एववा।।
एवं व्रतंया कुरुते नारी सौभाग्य काम्यया।
सौभाग्यं पुत्रपौत्रादि लभते सुस्थिरां श्रियम्।।'

- चांद को देखने के बाद यानि चंद्रमा पूजन के पश्चात अपने पति के हाथ से जल पीकर व्रत खोलना चाहिए।

# जीएसटी कम होने से किसको मिला फायदा, जनता को या दूध और दूध निर्मित सामान बनाने और बेचने वालों को

संजय बाटला

भारत सरकार ने जनहित में जीएसटी की नई दर लागू कर जनता में एक विश्वास जगाया पर उसका फायदा क्या मिला जनता को बड़ा सवाल ?

दूध और दूध निर्मित सामानों पर जीएसटी के कम होने से धार्मिक एवम् सामाजिक त्योहारों पर जनता को एक अच्छा फायदा होने की आशा जागी थी पर दूध और दूध से निर्मित सामान बनाने वालों ने सरकार को ही ठेंगा दिखा दिया और अपने किसी भी प्रोडक्ट की कीमत नहीं घटाई।

दूध, दही, खोया, पनीर, धाप मिठाइयां, घी या अन्य किसी भी प्रोडक्ट का रेट नहीं कम किया गया और इन सभी बातों को देखने के बाद भी चुप है सरकार और विभाग जिनका दायित्व है इस पर नजर रखना और कार्यवाही करना।

आख़िर क्यों, क्या अमूल, मदर डेयरी या अन्य दूध और दूध से निर्मित प्रोडक्ट निर्मित करने वालो पर सरकार या विभाग का दबाव डालना संभव नहीं।

जनता को जीएसटी की दर कम कर के वाहवाही लूटना ही सिर्फ सरकार का ध्येय था, जनता को उसका फायदा पहुंचवाना नहीं।

दूध और दूध से निर्मित सामान बनाने वालों ने पिछले दो सालों में ही अपने प्रोडक्ट के दामों में 100% से अधिक की वृद्धि कर जनता को खर्चों के बुझ में डाला है और सरकार तब भी चुप रही थी पर अब तो सरकारी राजस्व में आने वाली दर पर सरकार द्वारा ही कटौती की घोषणा की गई है फिर इन सभी के द्वारा 22 तारीख से ही

1. अपने प्रोडक्ट के दामों में कटौती की घोषणा या कटौती क्यों नहीं की, बड़ा सवाल?

2. सरकार और विभाग द्वारा अब तक कोई कार्यवाही क्यो नहीं की गई, बड़ा सवाल ?

# दिल्ली परिवहन मजदूर संघ द्वारा "DTC बचाओ अभियान" की शुरुआत

राष्ट्र हित उद्योग हित मजदूर हित

'वन्दे मातरम'

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ (पंजी.)

B.M.S DELHI PARIVAHAN MAZDOOR SANGH (Regd.)

Affiliated : Bhartiya Mazdoor Sangh & Bhartiya Parivahan Mazdoor Maha Sangh

5238, अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

क्रमांक/दि.प.म.संघ/2025/83 दिनांक 06/10/2025

**प्रेस विज्ञप्ति**

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ द्वारा "डीटीसी बचाओ अभियान" की शुरुआत

दिनांक : 06/10/2025

स्थान : नई दिल्ली

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ ने आज "डीटीसी बचाओ अभियान" की शुरुआत की है। इस अभियान के तहत संघ के पदाधिकारी और कार्यकर्ता दिल्ली की सभी 70 विधानसभाओं में जाकर 70 विधायकों तक पहुंचेंगे और उन्हें दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) की गंभीर समस्याओं से अवगत कराएंगे।

इस अभियान का उद्देश्य दिल्ली की जनता की जीवन रेखा-डीटीसी बस सेवा को सशक्त बनाना, निगम के कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना तथा दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ करना है।

संघ के महामंत्री श्री भानु भास्कर ने कहा कि "डीटीसी को बचाना, दिल्ली की जनता के हित में है। आज जरूरत है कि सरकार निगम को पुनर्जीवित करने के लिए ठोस कदम उठाए और कर्मचारियों की जायज मांगों को स्वीकार करे।"

1 | Page

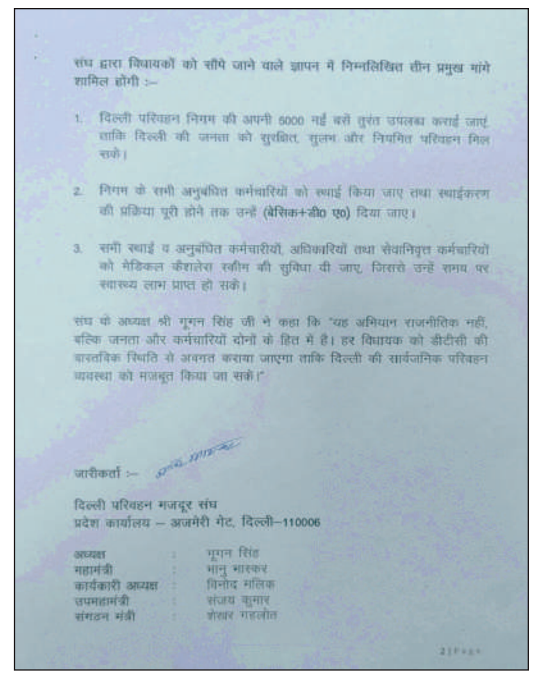
संघ द्वारा विधायकों को सौंपे जाने वाले ज्ञापन में निम्नलिखित तीन प्रमुख मांगे शामिल होंगी :-

1. दिल्ली परिवहन निगम की अपनी 5000 नई बसें तुरंत उपलब्ध कराई जाएं ताकि दिल्ली की जनता को सुरक्षित, सुलभ और नियमित परिवहन मिल सके।

2. निगम के सभी अनुबंधित कर्मचारियों को स्थाई किया जाए तथा स्थाईकरण की प्रक्रिया पूरी होने तक उन्हें (बेसिक+डी0 ए0) दिया जाए।

3. सभी स्थाई व अनुबंधित कर्मचारियों, अधिकारियों तथा सेवानिवृत्त कर्मचारियों को मेडिकल कैशलेस स्कीम की सुविधा दी जाए, जिससे उन्हें समय पर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके।

संघ के अध्यक्ष श्री गूगन सिंह जी ने कहा कि "यह अभियान राजनीतिक नहीं, बल्कि जनता और कर्मचारियों दोनों के हित में है। हर विधायक को डीटीसी की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया जाएगा ताकि दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत किया जा सके।"

जारीकर्ता :-

दिल्ली परिवहन मजदूर संघ

प्रदेश कार्यालय – अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | : | गूगन सिंह |
| महामंत्री | : | भानु भास्कर |
| कार्यकारी अध्यक्ष | : | विनोद मलिक |
| उपमहामंत्री | : | संजय कुमार |
| संगठन मंत्री | : | शेखर गहलोत |

2 | Page

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** दिल्ली परिवहन मजदूर संघ ने आज "DTC बचाओ अभियान" की शुरुआत की है। इस अभियान के तहत संघ के पदाधिकारी और कार्यकर्ता दिल्ली की सभी 70 विधानसभा में जाकर 70 विधायक तक पहुंचेंगे और उन्हें (DTC )दिल्ली परिवहन निगम की गंभीर समस्याओं से अवगत कराएंगे।

इस अभियान का उद्देश्य दिल्ली की जनता की जीवन रेखा डीटीसी बस सेवा को सशक्त बनाना,निगम के कर्मचारियों के हितों की रक्षा करना तथा दिल्ली में सार्वजनिक परिवहन को सुदृढ़ करना है।

संघ के महामंत्री श्री भानु भास्कर ने कहा कि " DTC को बचाना दिल्ली की जनता के हित में है। आज जरूरत है कि सरकार निगम को पुनर्जीवित करने के लिए ठोस कदम उठाए और कर्मचारियों की जायज मांगों को स्वीकार करें।"

संघ द्वारा विधायकों को सौंपे जाने वाले विज्ञापन में निम्नलिखित तीन प्रमुख मांगे शामिल होंगीः -

1. दिल्ली परिवहन निगम की अपनी 5000 बसें तुरंत उपलब्ध कराई जाए ताकि दिल्ली की जनता को सुरक्षित, सुलभ और नियमित परिवहन मिल सके।

2. निगम के सभी अनुबंधित कर्मचारियों को स्थाई किया जाए तथा स्थाईकरण की प्रक्रिया पूरी होने तक उन्हें **(बेसिक+DA)** दिया जाए।

3. सभी अनुबंधित कर्मचारियों एवं स्थाई कर्मचारी अधिकारी तथा सेवानिवृत कर्मचारियों को मेडिकल कैशलेस स्कीम की सुविधा दी जाए, जिससे उन्हें समय पर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त हो सके।

संघ के अध्यक्ष श्री गूगन सिंह जी ने कहा कि " यह अभियान राजनीतिज्ञ नहीं बल्कि जनता और कर्मचारी दोनों के हित में है। हर विधायक को दिल्ली परिवहन निगम की वास्तविक स्थिति से अवगत कराया जाएगा ताकि दिल्ली की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को मजबूत किया जा सके।"

इसकी शुरुआत DTC के कॉन्ट्रैक्ट कर्मचारी और मजदूर संघ के कार्यकर्ता **विकास कुमार शर्मा** ने अपने शह कार्यकर्ताओं को लेकर आज गोकलपुर विधानसभा के विधायक श्री चौधरी सुरेंद्र कुमार जी को पत्र देकर कहा की अगर कर्मचारियों की मांगों को नहीं माना गया तो जल्द दिल्ली परिवहन मजदूर संघ बड़े आंदोलन की ओर जाएगा।

दिनांक 07/10/25 को सुबह 9 बजे भारतीय मजदूर संघ के सदस्य DTC कर्मचारियों की समस्या से अवगत कराकर दिल्ली प्रदेश डिप्टी स्पीकर मोहन सिंह बिष्ट जी को ज्ञापन पत्र दिया जाएगा,

**दिल्ली परिवहन मजदूर संघ प्रदेश कार्यालय अजमेरी गेट दिल्ली 110006**

1. अध्यक्षः गूगन सिंह
2. महामंत्रीः भानु भास्कर
3. कार्यकारी अध्यक्षः विनोद मलिक
4. उप महामंत्रीः संजय कुमार
5. संगठन मंत्रीः शेखर गहलोत

# रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड कम करने के प्रति बादली रेलवे स्टेशन, पर कुछ ट्रेनों को हाल्ट (रोकने) का अनुरोध

संजय बाटला

**बादली रेलवे स्टेशन पर ट्रेनों के ठहराव हेतु** नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने के लिए बादली रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों को रोकने का अनुरोध।

नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने के लिए पंजाब की ओर जाने वाली कुछ ट्रेनों को बादली रेलवे स्टेशन पर रोका जाए। इस कदम से न केवल रेल परिचालन की समग्र दक्षता में सुधार होगा, बल्कि यात्रियों के अनुभव में भी सुधार होगा।

**अनुरोध के कारणः**

1. नई दिल्ली और पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशनों पर भीड़भाड़ कम करने से देरी कम करने और समय की पाबंदी में सुधार करने में मदद मिलेगी।

2. बादली रेलवे स्टेशन यात्रियों के लिए ट्रेन पकड़ने के लिए एक सुविधाजनक विकल्प के रूप में काम कर सकता है, जिससे मुख्य स्टेशनों पर भार कम हो जाएगा।

3. इस कदम से क्षेत्र में रेलवे बुनियादी ढांचे के संतुलित विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

**ठहराव के लिए पात्र ट्रेनें:** बादली रेलवे स्टेशन पर रुकने के लिए विचार की जा सकने वाली कुछ ट्रेनें हैं:

1. 12450 चंडीगढ़ - मडगाओं जं. गोवा संपर्क, क्रांति एक्सप्रेस

2. 12484 अमृतसर - कोचुवेली एक्सप्रेस

**नए ठहराव के लिए मानदंडः** रेल मंत्रालय की नीति के अनुसार, नए ठहरावों पर निम्नलिखित कारकों के आधार पर विचार किया जाता है:

1. लागत वसूली: नए ठहराव से 12,716 रुपये से 24,506 रुपये तक की लागत वसूल होगी।

2. यात्री यातायातः 500 किमी की दूरी के लिए प्रति ट्रेन प्रति दिन न्यूनतम 40 स्लीपर श्रेणी टिकट या अन्य श्रेणियों में इसके समतुल्य किराया।

3. परिचालन व्यवहार्यताः ठहराव से लाइन क्षमता और ट्रेनों की समयपालनता प्रभावित नहीं होनी चाहिए।

आपसे अनुरोध करता हूँ कि इस प्रस्ताव पर विचार करें और बादली रेलवे स्टेशन पर कुछ ट्रेनों के ठहराव के लिए आवश्यक कदम उठाएँ। इससे हज़ारों यात्रियों को लाभ होगा और समग्र रेल नेटवर्क में सुधार होगा।

जसपाल सिंह

# एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग के नेतृत्व में "आप" पार्षदों ने भाजपा सरकार पर मांगें पूरी करने का बढ़ाया दबाव

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्ली।** भाजपा सरकार से समान काम के लिए समान वेतन की मांग कर रहे दिल्ली नगर निगम के एमटीएस कर्मचारियों की हड़ताल में आम आदमी पार्टी के पार्षद भी शामिल हुए और उनकी सभी मांगों का समर्थन किया। नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग के नेतृत्व में हड़ताल में शामिल ₹आप₹ पार्षदों ने भाजपा सरकार से उनकी सभी मांगे पूरी करने की अपील की। अंकुश नारंग ने कहा कि 8 दिनों से 5 हजार कर्मचारी हड़ताल पर हैं। उनके हड़ताल पर जाने के बाद से फॉगिंग और टैंक चेकिंग बंद है, लेकिन मेयर राज इकबाल सिंह को इसकी कोई चिंता नहीं है। चार इंजन की भाजपा सरकार की विफलता के चलते ही दिल्ली में डेंगू, मलेरिया व चिकनगुनिया के केस बढ़ रहे हैं।

उन्होंने कहा कि पिछले 8 दिन से एमसीडी के एमटीएस और सीएफडब्ल्यू के 5,200 कर्मचारी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। 29 सितंबर से हड़ताल पर बैठे कर्मचारी समान वेतन, मेडिकल लीव और मृत्यु पर परिवार को नौकरी देने की मांग कर रहे है। उनकी ये तीनों मांगें जायज हैं। भाजपा की चार इंजन वाली सरकार की लापरवाही से दिल्ली की जनता डेंगू, मलेरिया और चिकनगुनिया जैसी महामारियों का शिकार हो रही है। एमसीडी के मलेरिया-डेंगू विभाग में तैनात ये कर्मचारी घर-घर जाकर मच्छरों की रोकथाम, फॉगिंग, वाटर टैंक चेकिंग और छिड़काव का काम करते हैं। 25-30 साल से अपनी सेवा दे रहे हैं, फिर भी इनको समान वेतन नहीं मिल रहा। ये लोग बीमारी के बीच काम करते हैं, लेकिन मेडिकल लीव तक नहीं मिलती। अगर उनकी मौत हो जाती है, तो परिवार को नौकरी का हक नहीं है। इनकी ये मांगें पूरी तरह जायज हैं। आम आदमी पार्टी इनका समर्थन करती है, लेकिन दिल्ली की जनता का नुकसान न हो, इसके लिए तत्काल समाधान चाहिए।

अंकुश नारंग ने कहा कि भाजपा के चारों इंजन फेल हैं। महापौर का अहंकार इतना है कि वे कर्मचारियों की मांगें मानने को तैयार नहीं हैं। आठ दिनों से फॉगिंग, छिड़काव और टैंक चेकिंग बंद है। दिल्ली में डेंगू-मलेरिया के मामले पांच साल के उच्चतम स्तर पर हैं, लेकिन भाजपा द्वारा कोई जागरूकता अभियान भी नहीं चलाया जा रहा है। अरविंद केजरीवाल ने '10 रविवार, 10 मिनट डेंगू पर' कैंपेन चलाया था, जहां जनता गमलों-पौधों में पानी चेक करती थी। भाजपा के पास न रणनीति है, न अस्पतालों में व्यवस्था। दिल्ली की जनता भगवान भरोसे है।

अंकुश नारंग ने बताया कि मैंने मेडिकल हेल्थ ऑफिसर (एमएचओ) से कर्मचारियों को मिलवाया, जहां आश्वासन मिला, लेकिन अमल नहीं हुआ। मैंने बतौर नेता विपक्ष सदन में भी आवाज उठाई कि हड़ताल से पहले महापौर मिल लें, लेकिन उन्होंने समय नहीं निकाला। कर्मचारी भूख हड़ताल पर हैं। रोज आठ लोगों की टीम 24 घंटे उपवास करती है। महापौर राजा इकबाल सिंह "डमी" मेयर हैं, उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। भाजपा सिर्फ भ्रष्टाचार पर ध्यान दे रही है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता रक्षाबंधन पर कर्मचारियों को राखी बंधवाती हैं, लेकिन 5,200 परिवारों को सड़क पर छोड़ दिया।

आम आदमी पार्टी के एमसीडी सह-प्रभारी प्रवीण कुमार ने कहा कि पिछले आठ दिनों से सिविक सेंटर के सामने धरने पर बैठे एमसीडी के मलेरिया-डेंगू विभाग के एमटीएस कर्मचारी भारी बारिश, गर्मी और धूप सहते हुए अपने हक के लिए संघर्ष कर रहे हैं। समान कार्य के लिए समान वेतन की उनकी मांग पूरी तरह जायज है। उन्होंने कहा कि एमसीडी में एमटीएस कर्मचारियों की सैलरी में भारी असमानता है। किसी की 16,000 रुपये, किसी की 20,000, तो किसी की 26,000 रुपये है। कुछ को तो न्यूनतम मजदूरी भी नहीं मिल रही। दुनिया भर में समान काम के लिए समान वेतन का सिद्धांत लागू है। ये कर्मचारी घर-घर जाकर डेंगू-मलेरिया की रोकथाम के लिए काम करते हैं, फिर भी उनके साथ यह भेदभाव क्यों? उन्होंने कई दौर की बातचीत का जिक्र किया, जो मेयर और एमसीडी अधिकारियों से हो चुकी है, लेकिन भाजपा सरकार इनकी जायज मांगों को मानने को तैयार नहीं है।

# किफायत की चिंताओं के बावजूद घर की कीमतों में बढ़ोतरी; फेस्टिव सीजन से सकारात्मक माहौल की उम्मीदः हाउसिंग डॉट कॉम और आईएसबी की रिपोर्ट

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्लीः** देश के दूसरे सबसे बड़े रोज़गार पैदा करने वाले क्षेत्र में मांग में नरमी के संकेतों के बावजूद, 13 शहरों के लिए ऑल-इंडिया हाउसिंग प्राइस इंडेक्स (HPI) जून में 14 अंकों की छलांग लगाकर बढ़ गया। आरईए इंडिया और इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) की रिपोर्ट के अनुसार, इंडेक्स में तिमाही आधार पर भी 8 अंकों की तेज़ वृद्धि दर्ज की गई, जो कीमतों की रफ्तार को रेखांकित करती है।

यह एचपीआई भारत के प्रमुख डिजिटल रियल एस्टेट प्लेटफॉर्म हाउसिंग डॉट कॉम (आरईए इंडिया के स्वामित्व वाली कंपनी) और आईएसबी की संयुक्त पहल है, जो 13 बड़े शहरों—अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, फरीदाबाद, गांधीनगर, गाज़ियाबाद, ग्रेटर नोएडा, गुरुग्राम, हैदराबाद, कोलकाता, मुंबई, नोएडा और पुणे—में आवासीय रुझानों को ट्रैक करती है।

हाउसिंग डॉट कॉम के सीईओ प्रवीण शर्मा ने कहा, "व्यापारिक अनिश्चितताओं से उत्पन्न अल्पकालिक दबावों के बावजूद, भारत का आवास क्षेत्र परिपक्वता की ओर बढ़ते हुए आकर्षण और निवेश प्राप्त करता रहेगा। लागत संबंधी चिंताएँ बनी हुई हैं जिन पर सरकारी हस्तक्षेप आवश्यक है, लेकिन कुछ सकारात्मक बदलाव दिखने लगे हैं। उदाहरण के लिए, GST सुधारों से वहनीयता में सुधार होगा, जो खासकर मिड-सेगमेंट में मांग को बढ़ावा देगा—यह श्रेणी भारत के 'सबको घर' के सपने को पूरा करने के लिए सबसे अहम है।"

आईएसबी में अर्थशास्त्र और पब्लिक पॉलिसी के असिस्टेंट प्रोफेसर शेखर तोमर ने बताया कि कीमतों से मिले संकेतों के आधार पर कहा जा सकता है कि जून तिमाही में तुलनात्मक रूप से स्थिरता आ गई है।

"भारत का हाउसिंग मार्केट 2025 की दूसरी तिमाही में मजबूत रहा, खासकर एनसीआर, हैदराबाद और बेंगलुरु में हाई-टिकट 3बीएचके सेगमेंट की मांग तेज़ रही। सालाना आधार पर कीमतें अब भी ऊँची हैं, लेकिन दूसरी तिमाही में सापेक्ष स्थिरता दिखी, जो अल्पकालिक नरमी का संकेत है। 2025 की पहली छमाही में 100 बेसिस प्वाइंट रेपो रेट कट और महंगाई पर नियंत्रण को देखते हुए, हमें उम्मीद है कि बड़े घरों की मांग मेट्रो शहरों में आगे भी बाज़ार को गति देती रहेगी।"

**पिछले साल मासिक एचपीआई मूवमेंट (अखिल भारतीय)**

क्षेत्रीय मुख्य बिंदु :एनसीआर ने भारत के शीर्ष प्रदर्शन करने वाले आवास बाजार के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर ली है, और 2025 की दूसरी तिमाही में 42 अंकों की असाधारण वार्षिक वृद्धि के साथ अग्रणी स्थान पर है। इस क्षेत्र का उत्कृष्ट प्रदर्शन निवेशकों के मजबूत विश्वास, प्रमुख क्षेत्रों में मजबूत रोजगार सृजन और प्रीमियम आवासीय गलियारों के लिए निरंतर प्राथमिकता से उपजा है। 2बीएचके और 32बीएचके दोनों सेगमेंट में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, जिसमें अधिकांश मांग नोएडा, ग्रेटर नोएडा और गुरुग्राम बाजारों में केंद्रित है।

एक प्रमुख विकास केंद्र के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखते हुए, बेंगलुरु ने 24 अंकों की वार्षिक वृद्धि के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। आईटी पेशेवरों की आमद से प्रेरित, इस बाजार ने सभी सेगमेंट में संतुलित वृद्धि दिखाई है, जिसमें प्रीमियम सेगमेंट अग्रणी हैं। बेंगलुरु दक्षिण, आउटर रिंग रोड और अन्य प्रमुख इलाकों जैसे क्षेत्रों ने इस वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

हैदराबाद 20 अंकों की वार्षिक वृद्धि के साथ तीसरा सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाला शहर बनकर उभरा, जो शहर के निरंतर विकास पथ को दर्शाता है। ओआरआर वेस्ट, हैदराबाद वेस्ट और अन्य प्रमुख क्षेत्रों में स्थित इलाकों में, कई सब-मार्केट्स में मज़बूत माँग का बाज़ार को फ़ायदा मिल रहा है।

भारत का सबसे महंगा आवास बाज़ार होने के बावजूद, एमएमआर में काफ़ी दिलचस्पी बनी हुई है, जहाँ माँग लग्ज़री और अल्ट्रा-लग्ज़री सेगमेंट में केंद्रित है। शहर में ज़मीन की सीमित उपलब्धता और ऊँची प्रतिस्थापन लागत, कीमतों में बढ़ोतरी को बढ़ावा दे रही है।

कोलकाता में उल्लेखनीय एचपीआई वृद्धि दर्ज की गई, जो मूल्य और बेहतर जीवनशैली सुविधाओं की तलाश करने वाले खरीदारों के बीच शहर के उभरते आकर्षण को दर्शाती है। बाज़ार स्थानीय सामर्थ्य के अनुरूप कॉम्पैक्ट डिज़ाइनों को ज़्यादा पसंद करता है।

# मदरसों में आधुनिक शिक्षा के महत्व पर क़ौमी तालीमी बेदारी सम्मेलन

## तालीमी किट वितरण,महिलाओं को सशक्त बनाने पर ज़ोर

**शम्स आगाज, नई दिल्लीः** पसमांदा विकास फाउंडेशन के तत्वावधान में क़ौमी तालीमी बेदारी सम्मेलन का आयोजन मदरसा हिफ़्ज़ुल क़ुरान सैयदना इमाम-ए- हफ़्स, पुराना बस स्टैंड, नूह में किया गया। इस सम्मेलन में मदरसों के छात्र-छात्राओं को आधुनिक शिक्षा की अहमियत से अवगत कराया गया और उन्हें *तालीमी किट* वितरित की गईं, ताकि वे आधुनिक दौर की शिक्षा के साथ कदम से कदम मिला सकें।

फाउंडेशन के निदेशक मेराज राईन ने अपने संबोधन में कहा कि यह तालीमी किट केवल एक किट नहीं, बल्कि आधुनिक शिक्षा से जुड़ने की एक मुहिम है, जिसे हमने "तालीमी जिहाद" का नाम दिया है। उन्होंने कहा कि जैसे धार्मिक शिक्षा आवश्यक है, वैसे ही आधुनिक शिक्षा भी ज़रूरी है। जब मदरसों के छात्र आधुनिक ज्ञान से परिचित होंगे तो वे केवल अपने समुदाय ही नहीं बल्कि पूरे देश के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे।

मेराज राईन ने कहा कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है जहाँ अनेक धर्मों और भाषाओं के लोग रहते हैं, इसलिए अन्य भाषाओं का ज्ञान भी जरूरी है ताकि हम एक-दूसरे को बेहतर समझ सकें। उन्होंने यह भी कहा कि हमें राजनीति से ऊपर उठकर सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाना चाहिए, क्योंकि सरकारें बदलती हैं, पर व्यवस्था नहीं बदलती। उन्होंने ज़ोर देते हुए कहा कि समय के साथ खुद को अपडेट करना ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने आगे कहा कि देश में नफ़रत का निशाना हमेशा पसमांदा बनता है, इसलिए शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करके ही हम अपनी और देश की तरक्की सुनिश्चित कर सकते हैं।

फाउंडेशन की निदेशक निकहत परवीन ने अपने संबोधन में कहा कि किसी भी समाज की प्रगति महिलाओं के बिना संभव नहीं। अगर महिला शिक्षित होगी तो केवल एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरी पीढ़ी शिक्षित होगी। शिक्षा अमीरी-गरीबी नहीं देखती, यह केवल जज़्बे और हिम्मत की मांग करती है। उन्होंने कहा कि पसमांदा तबके की महिलाओं में शैक्षिक जागरूकता और आत्मविश्वास बढ़ाने की ज़रूरत है ताकि वे समाज में प्रभावी भूमिका निभा सकें।

कार्यक्रम में नलहड़ मेडिकल कॉलेज के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर एम. के. दयाल मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने पसमांदा विकास फाउंडेशन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति की सबसे मज़बूत नींव है। अगर बच्चे शिक्षित होंगे तो न केवल उनका भविष्य उज्ज्वल होगा बल्कि पूरे समाज में जागरूकता और सद्भाव का माहौल बनेगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा किसी धर्म या वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। मदरसों के छात्रों को भी आधुनिक वैज्ञानिक और सामाजिक शिक्षा से जोड़ना समय की मांग है।

इस अवसर पर पसमांदा विकास फाउंडेशन के संरक्षक कारी असजद ज़ुबैर , अशरफ खान, सैयद फर्रुख़ सेर हसीन फातिमा, मुशर्रफ,समीर उपस्थित रहे।

उलेमा टीम के अध्यक्ष मुफ़्ती वसीम अकरम क़ासमी और मौलाना ज़ाहिद आलम मज़ाहिरी ने कहा कि इल्म की रौशनी हर दिल तक पहुँचना हम सबकी साझा जिम्मेदारी है। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉक्टर क़मरुद्दीन ने की, जबकि संचालन के फ़र्ज़ मौलाना ज़ाहिद आलम मज़ाहिरी (अध्यक्ष, टीम उलेमा, पसमांदा विकास फाउंडेशन) ने निभाए। आभार व्यक्त-मौलाना अब्बास नदवी (नाज़िम-ए-तालीमात, मदरसा हिफ़्ज़ुल क़ुरान सैयदना इमाम-ए हफ़्स, नूह, मेवात) ने किया।

# विकसित भारत के लिए प्रधानमन्त्री खोलें अन्त्योदय श्री विद्यालय

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** महान विचारक और एकात्म मानववाद के प्रणेता पंडित दीन दयाल उपाध्याय की जयंती के अवसर पर शिक्षक कल्याण फाउंडेशन के तत्वाधान में ,शिक्षक सदन ,सूरजमल विहार में एकात्म मानववाद से विकसित भारत पर परिचर्चा का आयोजन किया गया , जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में केन्द्रीय राज्यमंत्री माननीय श्री हर्ष मल्होत्रा जी उपस्थित रहें । मुख्य अतिथि महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि यशस्वी प्रधानमन्त्री जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार एकात्म मानववाद के सिद्धांत पर बिना किसी भेदभाव के समाज के सभी वर्गो के लिय विशेषकर वंचित समूह के उत्थान के लिए कार्य कर रही है । शिक्षा के माध्यम वंचित समूह को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए केंद्र सरकार लगातार कार्य कर रही है बजट में शिक्षा के लिए विशेष धनराशि आवंटित की जा रही है ।

इस अवसर पर शिक्षक कल्याण फाउंडेशन के संयोजक, भूतपूर्व उपप्राचार्य श्री जगदीश विग ने मुखर होकर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी से मांग कि वंचित समूह के करोड़ों बच्चों को समाज की मुख्यधारा में शामिल करने के लिए अन्त्योदय श्री विद्यालय पुरे देश में खोले जाएं ,जहाँ पर ये बच्चे शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन , परिवार के साथ समाज को विकसित बनायेंगे जिससे कि एकात्म मानववाद से विकसित भारत का सपना साकार हो सकेगा साथ ही रोजगार के नये अवसर पुरे देश भर में सृजित होंगे । परिचर्चा में उपस्थित राजीव साहनी, आईएमए की अध्यक्ष महोदया डॉक्टर श्रीमती शमा बत्रा,अखिल भारतीय शिक्षक संघ के राष्ट्रीय सचिव श्री के पी सिंह , भाजपा नेत्री श्रीमती मंजुला गुप्ता इत्यादि ने परिचर्चा को रोचक और सार्थक बनाया।

माननीय मुख्य अतिथि के सम्बोधन के उपरान्त प्रदेश भर से आये 300 से ज्यादा शिक्षकों को अन्त्योदय सम्मान से सम्मानित किया गया । अध्यक्ष श्री राजीव साहनी , स्वागत अध्यक्ष श्री नरेश अरोड़ा एवं उनकी टीम के सदस्य श्रीमती दीपमाला चौधरी, अजय गिरी , डॉ अमित कुमार चौधरी ,श्री रवि जुनेजा ने अतिथियों का स्वागत किया । इस अवसर पर अंशुल सुपर्णा ,राजीव खन्ना ,सुखदेव शर्मा , विनोद भल्ला ,सुनील कुमार देवरानी , दिनेश ओझा, राजीव शर्मा का विशेष सहयोग रहा ।

# ठाकुरश्री मुरली बिहारी सरकार का 12वां पाटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** चैतन्य विहार फेस-2 स्थित मुरली निकुंज में श्री मुरली निकुंज निष्काम सेवा संस्थान के द्वारा ठाकुरश्री मुरली बिहारी सरकार का 12वां पाटोत्सव विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ ।जिसके अंतर्गत ठाकुरश्री मुरली बिहारी सरकार का पंचामृत से अभिषेक कर वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया ।साथ ही उन्हें 56 भोग निवेदित किए गए ।तत्पश्चात आयोजित सन्त-विद्वत संगोष्ठी में पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री एवं राष्ट्रीय सन्त राधे राधे बाबूजी महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा शीत ऋतु का अत्यंत पावन व उद्घोषक पर्व है ।आज के ही दिन भगवान श्रीकृष्ण ने असंख्य ब्रज गोपीकाओं के साथ महारास लीला की थी ।जिसके दर्शन करने के लिए तमाम देवता आकाश पर छाए रहे थे ।हम लोगों का सौभाग्य है कि ऐसे दिव्य पर्व पर आज से 11 वर्ष पूर्व हम सभी के अत्यन्त प्रिय आचार्य राजेन्द्र महाराज ने मुरली निकुंज की स्थापना कर उसमें ठाकुरश्री मुरली बिहारी सरकार विराजित किया था ।जिसका उद्घाटन पुरी के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाराज ने किया था।

प्रख्यात भागवताचार्य डॉ. अशोक शास्त्री एवं कार्ष्णि नागेन्द्र महाराज ने कहा कि भागवत मनीषी स्वर्गीय डॉक्टर शिवकरण पांडेय महाराज के परम्कृपापात्र शिष्य आचार्य राजेन्द्र

महाराज धर्म व अध्यात्म जगत की बहुमूल्य विभूति हैं ।वे श्रीमद्भागवत महापुराण, रामायण व अन्य ग्रंथों की कथाओं के माध्यम से समूचे विश्व में वैदिक सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

"यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं भागवताचार्य आचार्य सुरेशचंद्र शास्त्री ने कहा कि आचार्य राजेन्द्र महाराज के द्वारा संस्थापित श्री मुरली निकुंज निष्काम सेवा संस्थान धर्म व अध्यात्म के अलावा समाजसेवा के क्षेत्र में भी अग्रणीय है ।इसके समस्त सेवा कार्य अति प्रशंसनीय हैं।

इस अवसर पर मथुरा-वृंदावन नगर निगम के उपसभापति मुकेश सारस्वत, क्रान्तिकारी सन्त स्वामी सत्यमित्रानंद महाराज, श्रीराम कथा मर्मज्ञ अशोक व्यास महाराज, आचार्य विपिन बापू, श्याम सुन्दर ब्रजवासी, वैष्णवाचार्य देवांशु गोस्वामी, आचार्य धर्मेंद्र महाराज (पीतांबरा पीठ),धर्मवीर शास्त्री, रासाचार्य स्वामी रामशरण शर्मा, स्वामी प्रेम शरण शर्मा, आचार्य जुगल किशोर शास्त्री, डॉ. राधाकांत शर्मा, भजन गायक विष्णु बावरा, हरिवंश, आचार्य रवींद्र शास्त्री, आचार्य अनिरुद्धाचार्य महाराज, प्रमुख समाजसेवी चंचल कालिया (दिल्ली), मीनाक्षी गर्ग, सुलोचना बंसल, सुभाष गोयल, मीनाक्षी सिंगला, विनोद गर्ग, प्रवीण गोयल, ब्रजराज सिंह, आचार्य धर्मेंद्र त्रिवेदी आदि के अलावा देश के विभिन्न प्रांतों से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं की उपस्थिति विशेष रही ।संचालन आचार्य रामविलास चतुर्वेदी ने किया।

मुरली निकुंज आश्रम के संस्थापक आचार्य राजेन्द्र महाराज ने महोत्सव में पधारे समस्त सन्तों, विद्वानों व धर्माचार्यों को उत्तरीय ओढ़ाकर एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।

महोत्सव का समापन सन्त ब्रजवासी वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ ।जिसमें सैकड़ों व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

## गीतिका छन्द में

---------------

## आज ऐसे क्रान्तिकारी चाहिए

====================

जो स्वयं कर्तव्य पथ की, साधना को साध लें।
आपदा की आँधियों को, मुट्ठियों में बाँध लें।
थरथरा उट्ठें कलेजे, नाम सुनकर पाप के।
शब्द अपने आप उल्टे, लौट जाएँ शाप के।।

क्रूर होकर जो अहं को, खूँटियों पर टाँग दें।
हर प्रहर मुर्गे सरीखी, जागने की बाँग दें।
जो हृदय इंसानियत के, राग के आगार हों।
देश पर हर हाल मिटने, के लिए तैयार हों।

वे पुरुष हों या कि नारी, चाहिए इस देश को।
आज ऐसे क्रान्तिकारी, चाहिए इस देश को।।

दूसरों के मुँह न ताकें, साथियों को साथ दें।
जो गिरें उनको उठा लें, हाथ को निज हाथ दें।
भारती माँ की न निन्दा, भूलकर भी सह सकें।
देख कर बेचैन धरती, खुद न जिन्दा रह सकें ।

प्रेम को पूजा समझ कर, धर्म को आधार दें।
जो हृदय की बीथियों में, व्योम सा विस्तार दें।
क्या घृणा क्या द्वेष-ईर्ष्या, लोभ-लालच क्या बला!
पर जिसे चालाकियों को, परखने की हो कला।।

नीति के पक्के पुजारी, चाहिए इस देश को।
आज ऐसे क्रान्तिकार, चाहिए इस देश को।।

अन्धविश्वासी चलन की, तोड़ दें जंजीर को।
जो सुकर्मों से बदल दें, देश की तकदीर को।
राष्ट्र का निर्माण फिर-फिर, हम करेंगे आन हो।
मानवी अनमोल मूल्यों, का सुहाता गान हो ।

जो क्षितिज की दूरियों को, दूर से ही नाप लें।
शत्रु की रण योजना को, पूर्व में ही भाँप लें।
धैर्य धरती सा भरा हो, सिन्धु सी गम्भीरता।
आग सा ले तेज छीनें, शत्रु की स्वाधीनता।

वीर हों बाँके प्रहारी, चाहिए इस देश को।
आज ऐसे क्रान्तिकारी, चाहिए इस देश को।।

एक युग के नींव की जो, ईंट से डटते दिखें ।
मेघ से सब कुछ लुटाने, के लिए उठते दिखें ।
फूल से कोमल हृदय में, प्रीति हो पाषाण सी।
स्वप्न में भी जो न चिन्ता, पालते हों प्राण की।

जो समय के पत्थरों पर, चिह्न छोड़ें पाँव के ।
हाथ में जिनके पलें युग, धूप वाली छाँव के।
जो शहीदों को झुकाकर, शीश अभिनन्दन करें ।
देश की स्वाधीनता का, उम्र भर चिन्तन करें ।

कर्म - कारी धर्म - धारी, चाहिए इस देश को।।
आज ऐसे क्रान्तिकारी, चाहिए इस देश को।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया प्राण इन्दौर म.प्र.
919424044284

# आशिक भाई देवासवाला की पहली पुस्तक का विमोचन हुआ

इन्दौर में आशिक हुसैन देवासवाला के पहले लघुकथा संग्रह का साक्षी बनना अपने आप में गर्वोक्ति पूर्ण है क्योंकि, मूर्धन्य वरिष्ठ साहित्यकारों से सजे मंच ने अपनी गरिमा को उच्चासन पर विराजमान करवाया था। यह कहने में जरा भी संशय नहीं है कि यह सारस्वत आयोजन साहित्यिक कुंभ से कम भी नहीं था। हर पक्ष आत्मीयता की पृष्ठभूमि की पटकथा से आधारभूत रहा। यकीनन श्री आशिक हुसैन देवासवाला की लघुकथाएं मानवीय संवेदनाओं से संवाद करती हैं। ऐसा दृश्य पहली बार दृष्टव्य हुआ जब वयोवृद्ध मातुश्री के हाथों में अपने विवेकशील बेटे की लेखनी भी आशीष पा रही थी। इस आयोजन में वरिष्ठ व्यंग्यकार यशवंत गोरे, लघुकथा के अदृभुत चितेरे कहे जाने वाले वरिष्ठ साहित्य मनीषी श्री योगेंद्रनाथ शुक्ल, देश ही नहीं विदेश में भी कई कृतियों से सुविख्यात छवि अंकित करने वाली की साहित्यकार श्रीमती ज्योति जैन, समाजसेवी शिक्षाविद् श्री जूजर भाई मंच को अपनी बौद्धिक दिव्यता से आलोकित कर रहे थे। इस साहित्य संगम में गोते लगाने के लिए हम आदरणीय श्री देवेंद्र जी शर्मा, श्री दिनेश तिवारी, श्री दिनेश गंगराड़े , भोपाल का प्रतिनिधित्व स्वरूप श्री वसंत बापट, डॉ. मनीष दवे, वरिष्ठ लेखिका श्रीमती कुसुम जैन, श्रीमती शीला चंदन, श्री बुरहानुद्दीन शकरुवाला , श्री हरिहरसिंह चौहान, श्री संजय तराणेकर, श्री मुफज्जल हुसैन, श्री आरिफ हुसैन हाटपिपल्या, श्री साजिद अली सहित बड़ी संख्या साहित्यानुरागी मौजूद थे। इन सबके बीच इस आयोजन के एक-एक पल और दृश्य को कैमरे में कैद करने वाले वरिष्ठ पत्रकार-फोटो जर्नलिस्ट श्री निशिकांत मंडलोई की उपस्थिति सराहनीय रही। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार अनिल कुमार धडवईवाले ने किया। **हरिहर सिंह चौहान इन्दौर**

# स्वामी ज्ञानानंद महाराज के नेतृत्व में असंख्य भक्तों-श्रृद्धालुओं ने की श्रीधाम वृन्दावन की पंचकोसी परिक्रमा

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।** परिक्रमा मार्ग स्थित श्रीकृष्ण कृपा धाम में चल रहे त्रिदिवसीय दिव्य व भव्य शरदोत्सव के तीसरे दिन देश-विदेश से आए असंख्य भक्तों-श्रृद्धालुओं ने महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के नेतृत्व में श्रीहरिनाम संकीर्तन के मध्य श्रीधाम वृन्दावन की पंचकोसी परिक्रमा की ।तत्पश्चात श्रीहनुमद् आराधन मण्डल, वृन्दावन के द्वारा संगीतमय सुन्दरकाण्ड का सामूहिक पाठ किया गया।

इस अवसर पर महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने भक्तों-श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि शरद पूर्णिमा ऋतु परिवर्तन से जुड़ा एक मनोहारी व पुरातन लोक पर्व है ।यह धार्मिक पर्व होने के साथ-साथ स्वास्थ्य संवर्धन का भी पर्व है ।क्योंकि इस दिन चंद्रमा से जो अमृततुल्य किरणें ज्योत्स्ना के माध्यम से पृथ्वी पर गिरती हैं,वे औषधि तुल्य हुआ करती हैं ।भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता में भी यह स्पष्ट रूप से कहा है कि ₹मैं ही रस स्वरूप अमृतमय चंद्रमा होकर सम्पूर्ण औषधियों व वनस्पतियों को पुष्ट करता हूं।₹ भगवान श्रीकृष्ण का यह कथन शरद पूर्णिमा की उपादेयता को सिद्ध करता है ।विभिन्न प्राचीन ग्रंथों में चंद्रमा को ₹औषधीश₹ अर्थात औषधियों का स्वामी कहा गया है।

स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि शरद पूर्णिमा के ही दिन भक्ति की पराकाष्ठा मानी जाने वाली श्रीकृष्ण समर्पित मीरा बाई का जन्म हुआ था ।आज ही के दिन ₹गोपी गीत₹ का उद्भव हुआ था ।इसके अलावा देवी पार्वती व आदिदेव महादेव के पुत्र कार्तिकेय का जन्म भी शरद पूर्णिमा के दिन हुआ था ।शरद पूर्णिमा श्रीराम कथा के आदि सर्जक महर्षि वाल्मीकि का अवतरण दिवस भी है ।इस दिन लक्ष्मी पूजन व चंद्र दर्शन का विशेष महत्व है।

गीता विज्ञान कुटीर (हरिद्वार-वृन्दावन) के संस्थापक महामंडलेश्वर स्वामी विज्ञानानंद सरस्वती महाराज ने कहा कि आज समूचा विश्व विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त है ।क्योंकि आज तनाव दूर्भावनाएं व पारस्परिक वैमनस्य अत्यधिक बढ़ गए हैं ।अतः इन सभी तापों को दूर करने के लिए हम सभी के जीवन में भक्ति रूपी पावन व पुनीत चंद्रमा के उदित होने की परम आवश्यकता है ।ताकि हम सभी के जीवन से सदैव अमृत बरसता रहे ।साथ ही हम सबके अशांत मन को शान्ति,समाज को सदभावना का प्रकाश और राष्ट्र को आतंक व अराजकता से मुक्ति मिल सके।

इस अवसर पर भानुपुरा पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ज्ञानानंद तीर्थ महाराज, उत्तर प्रदेश शासन के पूर्व गृह सचिव मणिप्रसाद मिश्रा, ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, भागवताचार्य संजीव कृष्ण शास्त्री ठाकुरजी महाराज, आचार्य श्रीराम मुद्गल, प्रख्यात भजन गायक महावीर शर्मा (दिल्ली), सुप्रसिद्ध भजन गायिका साध्वी पूर्णिमा, रतन रसिक, वासुदेव शरण, शक्ति स्वरूप ब्रह्मचारी, डॉ. राधाकांत शर्मा, श्याम वर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

# गाड़ी भगाने पर कानपुर में छात्र को अधमरा करने वाला चौकीइंचार्ज लाइन हाजिर

सुनील बाजपेई

**कानपुर।** अपराधियों के खिलाफ कार्यवाही तथा जनता की सेवा और सहायता के उद्देश्य से गठित पुलिस विभाग के लोग अक्सर अमानवीय व्यवहार करने से भी बाज नहीं आते। ऐसी ही एक घटना में एक चौकी इंचार्ज ने गाड़ी भगाने पर छात्र को अधमरा कर दिया । जिसके बाद उसे लाइन हाजिर करके मामले की जांच एसीपी बाबू पुरवा को दी गई है।

जानकारी के मुताबिक किदवई नगर में ओवर स्पीड के आरोप में पकड़े गए छात्र महेश के मारपीट न करने का नियम बताने पर भड़के चौकी प्रभारी ने थप्पड़ों की बौछार करते हुए उसे लातें भी मारी। इतना दुरुस्त कर देने की धमकी देने का वीडियो बनाकर उसके एक साथी ने इंटरनेट मीडिया पर वीडियो भी प्रचलित कर दिया, जिसे संज्ञान में लेकर डीसीपी दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने दारोगा को लाइन हाजिर कर दिया है। उन्होंने बताया कि मामले की जांच बाबू पुरवा के एसीपी को दी गई है।

याद रहे कि यह मामला पहला नहीं है। इसके पहले भी पुलिस पर इसी तरह के कई आरोप लगा चुके हैं। इस तरह की घटनाओं में कई पुलिस वालों को सस्पेंड भी किया जा चुका है लेकिन इसके बाद भी पुलिस द्वारा दुर्व्यवहार की घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही हैं ।मतलब कोई न कोई आए दिन उनके अमानवीय व्यवहार का शिकार हो रहा है।

# कफ सिरप विवाद-सर्दी खांसी की दवा से पैदा हुआ राष्ट्रीय अलार्म और अंतरराष्ट्रीय चिंता- स्वास्थ्य सुरक्षा , नियमन और जवाबदेही पर व्यापक विश्लेषण

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारत में पिछले कुछ समय से दवाओं की गुणवत्ता और सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। हाल ही में एक कफ सिरप को लेकर जो विवाद खड़ा हुआ है, उसने न केवल भारत के कई राज्यों को कार्रवाई के लिए मज़बूर किया है, बल्कि यह मामला अंतरराष्ट्रीय चिंता का विषय भी बन गया है ।तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र राजस्थान और केरल जैसे राज्यों ने इस सिरप पर प्रतिबंध लगा दिया है, जबकि गुजरात समेत कई अन्य राज्यों ने इसकी जांच के आदेश दिए हैं ।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हुँ कि यह पूरा प्रकरण भारत के औषधि नियंत्रण ढांचे,दवा उद्योग की पारदर्शिता,और बच्चों की सेहत से जुड़े गंभीर सवाल खड़े करता है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, कफ सिरप विवाद- खांसी की दवा से पैदा हुआ राष्ट्रीय अलार्म और अंतरराष्ट्रीय चिंता- स्वास्थ्य सुरक्षा,नियमन और जवाबदेही पर व्यापक विश्लेषण

साथियों बात अगर हम एक कफ सिरप विवाद की पृष्ठभूमि, प्रतिबन्ध तथा एक साधारण खांसी की दवा से कैसे मचा हाहाकार इसको समझने की करें तो एक कफ सिरप एक ओवर- द-काउंटर (ओटीसी) दवा के रूप में बाजार में बेची जा रही थी। यह सामान्य तौर पर सर्दी, खांसी और जुकाम से राहत के लिए दी जाती थी। इस सिरप का निर्माण कई छोटी फार्मास्युटिकल कंपनियों द्वारा किया जा रहा था, और यह विभिन्न ब्रांड नामों से ग्रामीण और शहरी बाजारों में उपलब्ध थी ।विवाद तब शुरू हुआ जब कुछ राज्यों में स्वास्थ्य विभागों को रिपोर्ट मिली कि बच्चों को यह सिरप देने के बाद उल्टी, सांस लेने में तकलीफ और लिवर फेल्योर जैसी लक्षण सामने आ रहे हैं ।मध्य प्रदेश और राजस्थान में कफ सिरप से हुई बच्चों की मौत के बाद महाराष्ट्र एफडीए ने कोलड्रिफ सिरप (बैच एसआर -13) की बिक्री और उपयोग पर रोक लगा दी है ।यूपी ड्रग्स विभाग ने मेडिकल स्टोर में रखे गए कफ सिरप के जांच के आदेश दे दिए हैं, इस सिरप से अब तक एमपी में 16 और राजस्थान में 3 बच्चों की मौत होने की जानकारी मीडिया में आ रही है, इसके बाद जब प्रयोगशाला में जांच की गई, तो पाया गया कि इस दवा में डाइएथिलीन ग्लाइकॉल और एथिलीन ग्लाइकॉल जैसे अत्यंत जहरीले रासायनिक तत्व मौजूद हैं ।इन दोनों रसायनों का उपयोग सामान्यतः एंटीफ्रीज़ के रूप में औद्योगिक प्रक्रियाओं में किया जाता है, और इनका मानव शरीर में प्रवेश घातक साबित हो सकता है। यही वह बिंदु था जिसने उस कफ सिरप को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विवाद के केंद्र में ला दिया ।किन राज्यों ने की कार्रवाई- तमिलनाडु से केरल तक बैन की लहर-इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद कई राज्यों ने तुरंत कदम उठाए।(1)तमिलनाडु सरकार ने सबसे पहले इस सिरप की बिक्री और वितरण पर रोक लगाने की घोषणा की। राज्य के स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि बच्चों में विषाक्तता के कुछ मामले देखने के बाद एहतियाती कदम उठाना जरूरी था। (2) मध्य प्रदेश ने खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) को आदेश दिए कि वे इस सिरप के सभी बैचों को बाजार से वापस लें और जांच रिपोर्ट आने तक इसकी बिक्री बंद रखें।(3)महाराष्ट्र सरकार ने इसी दिशा में कदम उठाते हुए सभी सरकारी अस्पतालों और मेडिकल स्टोर्स को नोटिस जारी किया कि वे इस सिरप को अपने स्टॉक से हटा दें।(4)केरल ने भी इसके उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया और केंद्र से यह स्पष्ट करने की मांग की कि आखिर इस दवा को ड्रग कंट्रोलअथॉरिटी की मंजूरी कैसे मिली।(5)गुजरात और उत्तर प्रदेश सहित कई अन्य राज्यों ने जांच शुरू कर दी है कि कहीं बाजार में बिक रही अन्य कफ सिरप में भी ऐसे ही हानिकारक तत्व तो नहीं हैं।

साथियों बात अगर हम स्वास्थ्य मंत्रालय की चेतावनी, बच्चों को 'कफ सिरप' देने से पहले सोचें सौ बार इसको समझने की करें तो, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस पूरे मामले को गंभीरता से लेते हुए सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक राष्ट्रीय एडवाइजरी जारी की है ।इस एडवाइजरी में स्पष्ट कहा गया है कि "दो साल से छोटे बच्चों को किसी भी प्रकार का कफ सिरप बिल्कुल नहीं दिया जाना चाहिए।"मंत्रालय ने डॉक्टरों, पैरेंट्स और फार्मासिस्टों से आग्रह किया है कि वे बच्चों के लिए ओटीसी (ओवर-द-काउंटर) दवाओं का उपयोग सोच- समझकर करें, क्योंकि कई बार इन दवाओं में मौजूद रासायनिक घटक बच्चे के शरीर के मेटाबॉलिज़्म के अनुरूप नहीं होते ।यह सलाह ऐसे समय पर आई है जब विश्व स्वास्थ्य संगठन ने पहले भी भारत निर्मित कफ सिरपों से जुड़े मौतों पर चिंता जताई थी ।2022-23 में गाम्बिया, उज्बेकिस्तान और कैमरून में कई बच्चों की मौत भारत में बनी कुछ खांसी की दवाओं के कारण हुई थी। यह नया मामला उसी चिंता को फिर से ताजा कर देता है।

साथियों बात अगर हमखतरनाक तत्व,डाइएथिलीन ग्लाइकॉल और एथिलीन ग्लाइकॉल की घातकता को समझने की करें तो, अब सवाल यह उठता है कि आखिर यह तत्व इतनाखतरनाक क्यों है ।डाइएथिलीन ग्लाइकॉल और एथिलीन ग्लाइकॉल दोनों ही औद्योगिक उपयोग के लिए बनाए जाते हैं। ये तरल पदार्थ गंधहीन, रंगहीन और मीठे स्वाद वाले होते हैं, जिसके कारण कई बार सिरप में सॉल्वेंट के रूप में गलती से या लापरवाही से मिल जाते हैं ।लेकिन जब ये शरीर में जाते हैं, तो लिवर और किडनी इन्हें प्रोसेस नहीं कर पाती, और इनके टूटने से बनने वाले रासायनिक यौगिक शरीर के नर्वस सिस्टम, किडनी और ब्रेन को गंभीर नुकसान पहुँचाते हैं ।डब्ल्यूएचओ की रिपोर्टों के अनुसार, डीईजी से हुई विषाक्तता किडनी फेल्योर, दृष्टि हानि, सांस लेने में रुकावट और अंततः मृत्यु तक का कारण बन सकती है ।भारत में यह कोई पहली घटना नहीं है, 1998 में दिल्ली में, और 2020 में जम्मू-कश्मीर में भी डीईजी विषाक्तता से बच्चों की मौतें हो चुकी हैं।

साथियों बात अगर हम दवा नियामक प्रणाली पर सवाल, जांच, जिम्मेदारी और जवाबदेही को समझने की करें तो, कफ सिरप प्रकरण ने भारत की ड्रग रेगुलेटरी सिस्टम की विश्वसनीयता पर गंभीर प्रश्नचिह्न लगा दिया है ।भारत दुनियाँ का सबसे बड़ा जेनेरिक दवा निर्माता है और 200 से अधिक देशों को दवाएं निर्यात करता है। ऐसे में बार-बार भारतीय दवाओं पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सवाल उठना देश की छवि को भी प्रभावित करता है ।यह मामला यह भी दिखाता है कि-(1)राज्य स्तरीय ड्रग टेस्टिंग लैब्स अक्सर ओवरलोड रहती हैं।(2)सैंपलिंग और क्वालिटी कंट्रोल में असमानता है। (3) कई बार लाइसेंसिंग अथॉरिटी स्थानीय राजनीतिक या औद्योगिक दबावों के कारण उदार रवैया अपनाती हैं ।ऐसी स्थितियों में सेंट्रल ड्रग्स स्टैंडर्ड कंट्रोल आर्गेनाइजेशन की भूमिका और मजबूत करने की जरूरत है ताकि किसी भी बैच को बाजार में आने से पहले अनिवार्य रूप से कफ सिरप लॉजिकल टेस्टिंग से गुजारा जा सके।

साथियों बात अगर हम जनता में भय और भ्रम की स्थिति को समझने की करें तो सोशल मीडिया के द्वारा आग़ और हवा से भी तेज गति से कफ सिरप के संबंध में स्वास्थ्य सुरक्षा का संकट फैलने की करें तो, सिरप पर बैन की खबरें फैलीं, लोगों में व्यापक भय और भ्रम फैल गया।

कई जगह माता-पिता ने घरों में रखी सभी कफ सिरप की बोतलें फेंक दीं। मेडिकल दुकानों ने बिक्री बंद कर दी ।डॉक्टरों के पास बड़ी संख्या में लोग यह पूछने पहुंचे कि कौन सी खांसी की दवा सुरक्षित है ।यह परिदृश्य बताता है कि भारत में स्वास्थ्य संचार (हेल्थ कम्युनिकेशन) की प्रणाली को और मजबूत करने की जरूरत है ।सरकार को ऐसे मामलों में तत्काल हेल्पलाइन, वेबसाइट और सूचना अभियान चलाने चाहिए ताकि अफवाहों से बचा जा सके और सही जानकारी जनता तक पहुँच सके।

साथियों बात कर हमअंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण,विश्व स्वास्थ्य संगठन और वैश्विक नियामक एजेंसियों की भूमिका को समझने की करें तो विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत के दवा नियामक निकायों से विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। इसके अलावा यूएस एफडीए यूके, एमएचआरए और यूरोपीय औषधि एजेंसी जैसी अंतरराष्ट्रीय एजेंसियां भी भारत में बने फार्मास्युटिकल प्रोडक्ट्स पर नज़र रखे हुए हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने अपने बयान में कहा, "बच्चों की दवाओं में कोई भी ग्लाइकॉल बेस्ड टॉक्सिन की मौजूदगी वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है।"इस मामले का असर भारत की फार्मास्युटिकल एक्सपोर्ट इंडस्ट्री पर भी पड़ सकता है, विदेशी खरीदार भारतीय दवाओं की क्वालिटी सर्टिफिकेशन को लेकर ज्यादा सतर्कता बरतने लगे हैं, जिससे भारत की दवा कंपनियों की विश्वसनीयता और बाजार हिस्सेदारी पर असर पड़ सकता है।

साथियों बात अगर हम कानूनी और प्रशासनिककार्यवाही तथा क्या दोषियों को सजा मिलेगी ? को समझने की करें तो, स्वास्थ्य मंत्रालय और केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन ने इस मामले की स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम गठित की है। राज्यों को निर्देश दिया गया है कि वेसंबंधित निर्माताओं,डिस्ट्रीब्यूटर्स और डीलरों के खिलाफ कार्रवाई करें। अगर जांच में यह सिद्ध होता है कि इन कंपनियों ने जानबूझकर या लापरवाही से खतरनाक तत्वों का प्रयोग किया है, तो ड्रग्स एंड कॉस्मेटिक्स एक्ट,1940 के तहत उन पर आपराधिक मुकदमा चलाया जा सकता है, जिसमें 7 साल तक की जेल और भारी जुर्माने का प्रावधान है।

# श्राद्ध में ठहरा समाज, सत्ता में चलता व्यापार

(धर्म का दिखावा, सत्ता का धंधा, श्राद्ध के बहाने पाखंड का महोत्सव)
श्राद्ध पक्ष समाज को रोक देता है—शादी मत करो, गृहप्रवेश मत करो, नया व्यापार मत शुरू करो। लेकिन सत्ता की गाड़ी बिना ब्रेक के दौड़ती रहती है। नेता मंच सजाते हैं, मालाएँ पहनते हैं, उद्घाटन करते हैं, रैलियाँ करते हैं। धर्म का बोझ आमजन पर डाल दिया गया है, जबकि ताक़तवर लोग उसे अपनी सुविधा के हिसाब से तोड़-मरोड़ लेते हैं। श्राद्ध का असली अर्थ था स्मरण और विनम्रता, पर राजनीति ने इसे दिखावे और स्वार्थ का तमाशा बना दिया। असली सवाल यही है—धर्म किसके लिए है? आमजन की आस्था के लिए या सत्ता की सुविधा के लिए?

**- डॉ प्रियंका सौरभ**

धर्म क्या है? यह सवाल जितना सरल लगता है, उतना ही पेचीदा है। पंडित बताएगा—"धर्म वही है जो शास्त्रों में लिखा है।" संत कहेगा—"धर्म वही है जो मन को शुद्ध करे।" नेता कहेगा—"धर्म वही है जो वोट दिला दे।" और आम आदमी कहेगा—"धर्म वही है जो हमें रोकता है, डराता है और कभी-कभी चपत भी लगाता है।"

श्राद्ध पक्ष में यही धर्म सबसे ज़्यादा सक्रिय हो जाता है। पितरों का समय है, यानी वह अवधि जब पुरखे धरती पर आते हैं और हमसे अपेक्षा करते हैं कि हम उन्हें याद करें, तर्पण करें और दान-पुण्य करें। इस दौरान शादी-ब्याह, गृहप्रवेश, नया व्यापार या कोई नया शुभ काम करने की मनाही है। समाज मानता है कि यह 'अशुभ काल' है। यानी पूरा समाज 'रोक मोड' में चला जाता है।

लेकिन राजनीति का समाज कभी रुकता नहीं। वहाँ श्राद्ध पक्ष में भी रैलियाँ होती हैं, फूल-मालाओं का आदान-प्रदान होता है, उद्घाटन होते हैं, माइक गरजते हैं और नेता जनता के सिर पर आशीर्वाद बरसाते हैं। कोई कहे—"श्राद्ध में तो सब ठहर जाता है," तो राजनीति ठहाके मारकर कहती है—"हमारे लिए हर दिन शुभ है, क्योंकि सत्ता ही सबसे बड़ा धर्म है।"

धर्म का असली मर्म है—सत्य, करुणा, न्याय और कर्तव्य। लेकिन आज यह रस्मों के बोझ तले दबकर रह गया है। राजनीति ने धर्म को अपनी चाकरी में लगा लिया है। धर्म कहता है—"श्राद्ध में दिखावा मत करो, स्मरण करो।" राजनीति कहती है—"श्राद्ध में भी माइक बजाओ, मंच सजाओ, वोट जुटाओ।" आम आदमी अपने पिता-दादा की आत्मा को तर्पण करने के लिए पानी में काले तिल डालता है। और नेता जनता की आत्मा को तर्पण करने के लिए मंच से झूठे वादे उछालता है। फर्क बस इतना है कि एक में चुप्पी है, दूसरे में शोर।

सूतक का नियम भी दिलचस्प है। किसी के घर मृत्यु हो जाए तो तेरह दिन तक 'अशुद्धि' मानी जाती है। इस दौरान परिवार सामाजिक आयोजनों से दूर रहता है। यही नियम आम आदमी पर लोहे की तरह लागू है। लेकिन जब सत्ता की गाड़ी दौड़ती है, तो सूतक के सारे नियम ब्रेक की तरह फेल हो जाते हैं। नेता सूतक में भी शपथ ले लेता है, चुनाव लड़ लेता है, मंच पर मालाएँ पहन लेता है। क्यों? क्योंकि जनता का सूतक कभी ख़त्म नहीं होता और नेताओं का सूतक कभी शुरू ही नहीं होता।

धर्म और परंपरा के नाम पर ग़रीब आदमी को रोका जाता है। "बेटा, श्राद्ध पक्ष में शादी मत करना।" "गृहप्रवेश रोक लो, वरना अशुभ होगा।" "नया व्यापार मत खोलो, पितृ नाराज़ होंगे।" पर उसी समय नेता उद्घाटन कर रहा होता है—चुनावी कार्यालय का, जनसभा पंडाल का, सड़क या पुल का। क्या पितर सिर्फ़ आम आदमी के घर ही आते हैं? क्या उन्हें राजनेताओं के मंच पर आने से डर लगता है? या फिर पितरों ने भी मान लिया है कि वहाँ जाने से कोई फ़ायदा नहीं, क्योंकि नेताओं का मन पहले से ही 'पापमोचन' मोड में है।

श्राद्ध का असली भाव था—पूर्वजों का स्मरण, मृत्यु का बोध और जीवन की नश्वरता को समझना। लेकिन इसे डर और दिखावे की परंपरा में बदल दिया गया। ब्राह्मण बुलाओ, दान करो, खाना खिलाओ, तभी पितर तृप्त होंगे। यानी धर्म एक सेवा से अधिक 'लेन-देन' बन गया। नेताओं ने इसे और आगे बढ़ाया—धर्म को सौदेबाज़ी बना दिया। एक वोट दो, बदले में धर्म रक्षा का ठेका हम लेंगे।

अगर सच कहा जाए तो असली श्राद्ध तो राजनीति कर रही है—सच का, नैतिकता का और जनसेवा का। जनता उम्मीद की माला पहनाती है, नेता उसे झूठ की माला लौटा देता है। जनता पसीने से पितरों को याद करती है, नेता पसीने से भी वोट की गिनती करता है। जनता श्राद्ध में शांति चाहती है, नेता श्राद्ध में भी शोर मचाता है। यह कैसी विडंबना है कि समाज अपने पुरखों के लिए श्राद्ध करता है, और नेता जनता के वर्तमान का ही श्राद्ध कर देता है।

धर्म का बोझ हमेशा कमज़ोर कंधों पर क्यों डाला जाता है? ग़रीब को कहा जाता है कि अगर उसने श्राद्ध पक्ष में विवाह किया तो पितर नाराज़ हो जाएँगे। मध्यम वर्ग को कहा जाता है कि गृहप्रवेश टालो, वरना जीवनभर अशांति रहेगी। लेकिन अमीर और शक्तिशाली आराम से होटल का उद्घाटन करते हैं, क्रिकेट लीग शुरू करते हैं, और नेता वोटों का महोत्सव मनाते हैं। धर्म किसके लिए है? समाज को नियंत्रित करने के लिए या सत्ता को वैधता देने के लिए?

पितर अगर सच में धरती पर आते होंगे तो उन्हें सबसे ज़्यादा हंसी अपने वंशज नेताओं पर आती होगी। सोचिए, वे देख रहे होंगे कि उनके घर की संतान जनता से कह रही है—"श्राद्ध में मत नाचो-गाओ," और खुद मंच पर डीजे की धुन पर कूद रही है। शायद पितर भी सोचते होंगे—"हमारे श्राद्ध की चिंता छोड़ो, पहले इस राजनीति के पाखंड का श्राद्ध करो।"

धर्म की असली ताक़त आत्मा को झकझोरने में थी, पर इसे रस्मों का कैदी बना दिया गया। श्राद्ध हमें मृत्यु का बोध कराता था, पर राजनीति ने इसे भी अवसर बना लिया। आज आम आदमी पितरों के लिए जल तर्पण करता है, और नेता जनता के भरोसे का तर्पण करता है। फर्क बस इतना है कि पहले वाला श्रद्धा से करता है, दूसरा सत्ता से। धर्म अगर सच में जीना है तो इसे पाखंड और दिखावे से मुक्त करना होगा। वरना हर साल पितृ पक्ष में तो पूर्वज आएँगे ही, लेकिन सत्ता पक्ष रोज़ ही हमारे वर्तमान का श्राद्ध करता रहेगा।

# त्याग, बलिदान और दूरदृष्टि के युगपुरुष—गुरु गोबिंद सिंह

जब शौर्य, अध्यात्म और त्याग का अद्भुत संगम एक व्यक्तित्व में साकार होता है, तो वह न केवल नायक, अपितु युगपुरुष के रूप में इतिहास के पन्नों पर अमर हो जाता है। गुरु गोबिंद सिंह जी ऐसे ही युगपुरुष थे, जिनका जीवन धर्म की रक्षा तक सीमित नहीं था, बल्कि मानवता, न्याय और आत्मसम्मान का प्रबल संदेश देता है। 7 अक्टूबर 1708 को नांदेड़ में उनकी शहीदी तिथि, केवल एक घटना नहीं, बल्कि उनके अमर आदर्शों और चिंतन की सशक्त गूँज है, जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रेरणादायी है, जितनी तीन शताब्दियों पूर्व थी। उनकी पुण्यतिथि सिख समुदाय ही नहीं, अपितु समस्त विश्व के लिए एक पवित्र अवसर है, जो हमें उनके जीवन की उन गहन और प्राय: अनछुई गहराइयों को समझने का अवसर प्रदान करता है, जो सामान्य चर्चाओं में अक्सर ओझल रहती हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जी का जन्म उस युग में हुआ, जब भारत मुग़ल शासन के अंधकार और धार्मिक उत्पीड़न के बोझ तले दबा था। सामाजिक असमानता और अन्याय ने समाज की नींव को खोखला कर दिया था। उनके पिता, गुरु तेग बहादुर जी, ने कश्मीरी पंडितों की रक्षा हेतु अपने प्राणों का सर्वोच्च बलिदान दिया। मात्र नौ वर्ष की आयु में गुरु बनने वाले गोबिंद राय, जो बाद में गुरु गोबिंद सिंह के रूप में विख्यात हुए, ने इस पवित्र विरासत को न केवल संभाला, बल्कि इसे एक नई दिशा और ऊँचाई प्रदान की। उनकी असाधारण विशेषता थी युद्ध और शांति, तलवार और कलम, भक्ति और शक्ति का अनुपम समन्वय। उनकी रचनाएँ, जैसे दसम ग्रंथ में संकलित 'ज़फ़रनामा' और 'चंडी दी वार', केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि साहस, नैतिकता और आत्मिक जागृति का शंखनाद हैं। 'ज़फ़रनामा' (विजय पत्र) में औरंगज़ेब को लिखा उनका पत्र एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ है, जो सत्य की निर्भीक अभिव्यक्ति और नैतिक दृढ़ता का प्रतीक है। कम लोग जानते हैं कि इस पत्र में उन्होंने न केवल मुग़ल सम्राट की क्रूरता का दर्पण दिखाया, बल्कि उसे धर्म, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का पाठ भी पढ़ाया।

1699 की बैसाखी पर खालसा पंथ की स्थापना गुरु गोबिंद सिंह जी का वह क्रांतिकारी कदम था, जिसने न केवल सिख इतिहास, बल्कि विश्व इतिहास को एक नई दिशा दी। यह केवल सैन्य संगठन नहीं था, अपितु एक सामाजिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक क्रांति थी, जिसने मानवता को शुद्धता, समानता और साहस का मार्ग दिखाया। 'खालसा' अर्थात शुद्ध, वह जो न केवल आत्मा, बल्कि विचार, कर्म और जीवन से पवित्र हो। पंज प्यारों का चयन—एक ब्राह्मण, एक क्षत्रिय और तीन शूद्र वर्ग से—जाति और वर्ग की दीवारों को ध्वस्त करने का सशक्त संदेश था। कम लोग जानते हैं कि गुरु ने खालसा पंथ में महिलाओं को भी समान दर्जा प्रदान किया। सिख महिलाओं को 'कौर' अर्थात राजकुमारी की उपाधि देकर उन्होंने नारी को सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से सशक्त किया। उस युग में, जब नारी को हाशिए पर रखा जाता था, यह कदम क्रांतिकारी था और समानता का अमर संदेश देता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन केवल युद्ध और वीरता तक सीमित नहीं था; उनकी पर्यावरणीय और सामुदायिक चेतना भी उतनी ही प्रेरणादायी थी। आनंदपुर साहिब में उन्होंने न केवल सैन्य प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए, बल्कि एक ऐसे समुदाय का निर्माण किया, जहाँ शिक्षा, कला, धर्म और संस्कृति का अनुपम समन्वय था। उनकी रचनाएँ, जैसे दसम ग्रंथ की काव्य रचनाएँ, प्रकृति के सौंदर्य और मानवीय मूल्यों के बीच गहन संतुलन को दर्शाती हैं। ये रचनाएँ आज के पर्यावरणीय संकट के दौर में भी प्रासंगिक हैं, जो हमें प्रकृति और मानवता के सह-अस्तित्व की सीख देती हैं। उनकी शिक्षाएँ समाज को आत्मनिर्भर, संगठित और नैतिक बनाने का आह्वान करती थीं, जो युद्ध के मैदान से लेकर शांतिपूर्ण जीवन तक समान रूप से लागू होती थीं। उनके जीवन का सबसे मार्मिक और प्रेरणादायी पहलू था उनका असीम त्याग। चार साहिबजादों—अजित सिंह, जुझार सिंह, ज़ोरावर सिंह और फतेह सिंह—का बलिदान विश्व इतिहास में अनुपम है। चमकौर के युद्ध में बड़े साहिबजादों ने अप्रतिम वीरता का प्रदर्शन किया, तो छोटे साहिबजादों ने सरहिंद में दीवारों में चिनवाए जाने के बावजूद धर्म और सत्य पर अटल रहकर मानवता को एक अमर प्रेरणा दी। गुरु की पत्नियाँ, माता सुंदरी और माता साहिब कौर, ने इस अथाह दुख को सहन किया, पर गुरु का हृदय कभी नहीं डगमगाया। उनकी उक्ति—"चार मुए तो क्या हुआ, जीवत कई हजार"—केवल शब्द नहीं, बल्कि एक युगपुरुष की अटूट आस्था, सामूहिक चेतना और मानवता के प्रति समर्पण का प्रतीक है। कम लोग इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि गुरु ने अपने परिवार के बलिदान को व्यक्तिगत क्षति के रूप में नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए एक प्रेरणास्रोत के रूप में देखा। यह उनकी दूरदृष्टि और महानता का प्रमाण है, जो हमें सिखाता है कि सत्य और न्याय के लिए किया गया त्याग कभी व्यर्थ नहीं जाता।

नांदेड़ में गुरु गोबिंद सिंह जी के अंतिम दिन उनकी दार्शनिक गहनता और आध्यात्मिक ऊँचाइयों के साक्षी हैं। गुरु ग्रंथ साहिब को शाश्वत गुरु घोषित करने का उनका ऐतिहासिक कदम उनकी दूरदर्शिता और सत्य के प्रति अटूट निष्ठा का प्रतीक था। यह निर्णय दर्शाता है कि सत्य और ज्ञान किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं, बल्कि शास्त्र की पवित्र वाणी और सामूहिक चेतना में सदा जीवंत रहते हैं। कम लोग इस तथ्य पर ध्यान देते हैं कि अपने अंतिम क्षणों में भी गुरु ने युद्ध और शांति के बीच अद्भुत संतुलन बनाए रखा। वास्की के विश्वासघाती हमले में गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, उन्होंने क्षमा और शांति का मार्ग अपनाया, पर साथ ही अपने अनुयायियों को अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध सदा सजग और संघर्षरत रहने का अमर संदेश दिया।

गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन केवल सिख इतिहास का गौरवशाली अध्याय नहीं, बल्कि समस्त मानवता के लिए एक प्रेरणादायी महाकाव्य है। उनकी शिक्षाएँ—जो साहस, समानता, आत्मसम्मान और मानवता की सेवा पर आधारित हैं—आज भी उतनी ही प्रासंगिक और प्रबल हैं। उनकी पुण्यतिथि, 7 अक्टूबर, हमें न केवल उनके बलिदानों की स्मृति दिलाती है, बल्कि यह आह्वान भी करती है कि धर्म का सच्चा अर्थ है सत्य और न्याय के लिए डटकर खड़ा होना, भले ही इसके लिए सर्वस्व का त्याग करना पड़े। उनकी विरासत एक चिरस्थायी दीपस्तंभ है, जो अंधकारमय समय में भी मार्गदर्शन करता है और हमें अन्याय के खिलाफ निर्भीकता से आवाज़ उठाने की प्रेरणा देता है। गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन हमें सिखाता है कि जीवन का वास्तविक मूल्य सांसारिक सुख-संपत्ति में नहीं, बल्कि सिद्धांतों की अडिगता और मानवता की नि:स्वार्थ सेवा में निहित है। उनकी यह प्रेरणा हर युग में, हर मनुष्य को, सत्य और न्याय के पथ पर चलने का साहस प्रदान करती है।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# झारखंड में भाजपा की गिरती पकड़ : राष्ट्रीय सशक्तता बनाम स्थानीय विफलता

**अशोक कुमार झा**

हिंदुस्तान की राजनीति में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) आज सबसे ताक़तवर संगठन के रूप में देखी जाती है। केंद्र की सत्ता में दो बार पूर्ण बहुमत, आधे से अधिक राज्यों में शासन और विपक्ष में भी सबसे बड़ी पार्टी—यह तस्वीर भाजपा की राष्ट्रीय शक्ति को दर्शाती है। लेकिन इस सुनहरी तस्वीर के बीच झारखंड एक ऐसा अपवाद है जहाँ भाजपा बार-बार फिसल रही है।

2014 में रघुवर दास की अगुवाई में पहली बार झारखंड में भाजपा ने पूर्ण बहुमत की सरकार बनाई। तब लग रहा था कि पार्टी लंबे समय तक यहाँ टिकेगी लेकिन 2019 आते-आते भाजपा सत्ता से बाहर हो गई और झामुमो-कांग्रेस-राजद गठबंधन ने सरकार बना ली। पाँच साल विपक्ष में रहने के बाद भाजपा ने 2024 में पूरी ताक़त से वापसी की कोशिश की। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, और शिवराज सिंह चौहान व हिमंता बिस्वा सरमा जैसे रणनीतिकार मैदान में उतरे लेकिन परिणाम भाजपा के लिए और भी बुरे साबित हुए—पार्टी महज़ 21 सीटों पर सिमट गई।

यह परिघटना केवल चुनावी पराजय नहीं है, बल्कि भाजपा के सांगठनिक, रणनीतिक और नेतृत्व संकट का आईना है।

**1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: भाजपा और झारखंड**

झारखंड राज्य की स्थापना वर्ष 2000 में हुई थी। यहाँ की राजनीति शुरू से ही अस्थिर रही है। झामुमो, कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों ने लगातार सरकारें बनाईं और गिराईं। भाजपा ने शुरू में सहयोगी के तौर पर सत्ता देखी, लेकिन 2014 में पहली बार अपने दम पर बहुमत पाया।

रघुवर दास सरकार ने पाँच साल का कार्यकाल पूरा किया—यह झारखंड के इतिहास में पहली स्थायी सरकार थी। उस समय भाजपा को लगा कि राज्य की राजनीति अब स्थिर हो गई है और संगठन मज़बूत हो गया है लेकिन 2019 में जब चुनाव हुए तो जनता ने भाजपा को बाहर कर दिया।

**2. 2014–2019 की रघुवर सरकार : उपलब्धियाँ और असंतोष**

रघुवर दास सरकार ने कई विकास योजनाएँ शुरू कीं—

सड़क और बिजली ढांचे में सुधार

'मोमेंटम झारखंड' निवेश सम्मेलन

किसानों के लिए योजनाएँ

पंचायत स्तर पर प्रशासनिक सुधार

लेकिन इन उपलब्धियों के बावजूद सरकार पर कई आरोप लगे—

भ्रष्टाचार और माइनिंग लॉबी से गठजोड़

भूमि अधिग्रहण कानून में बदलाव का प्रयास, जिससे आदिवासी समाज नाराज़ हुआ

बेरोज़गारी और पलायन की समस्या जस की तस

पार्टी के भीतर गुटबाज़ी और असंतोष

इन कारणों से 2019 में भाजपा का वोट बैंक खिसक गया।

**3. 2019 चुनाव : सत्ता से बाहर, संगठन की कमजोरी उजागर**

2019 में भाजपा को 25 सीटें मिलीं। झामुमो ने कांग्रेस और राजद के साथ गठबंधन कर बहुमत हासिल किया। हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री बने।

इस चुनाव ने भाजपा को यह संदेश दिया कि केवल मोदी लहर या केंद्रीय नेतृत्व के सहारे राज्य की राजनीति नहीं जीती जा सकती। स्थानीय नेतृत्व और क्षेत्रीय अस्मिता को भी समझना पड़ेगा।

**4. 2024 चुनाव : और बड़ी पराजय**

नवंबर 2024 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने भारी ताक़त झोंकी। प्रचार में प्रधानमंत्री से लेकर केंद्रीय मंत्रियों तक ने दर्जनों रैलियाँ कीं। शिवराज सिंह चौहान और हिमंता सरमा जैसे नेताओं ने रणनीति बनाई।

लेकिन नतीजा चौंकाने वाला था। भाजपा 21 सीटों पर सिमट गई। यानी 2019 से भी चार सीट कम।

इस चुनाव में स्पष्ट हुआ कि—

भाजपा की रणनीति जमीनी हकीकत से कट गई थी।

आदिवासी समाज पूरी तरह झामुमो के साथ रहा।

कांग्रेस ने ग्रामीण क्षेत्रों में पकड़ मज़बूत की।

स्थानीय नेतृत्व भाजपा के पास नहीं था।

5. संगठनात्मक संकट : समय पर चुनाव क्यों नहीं?

चुनावी हार के बाद भाजपा ने सांगठनिक चुनाव कराने का ऐलान किया। बूथ, मंडल से लेकर प्रदेश अध्यक्ष तक पदों पर चुनाव होना था। लेकिन झारखंड इकाई ने तय समय पर यह प्रक्रिया पूरी नहीं की।

चुनाव के दौरान रवींद्र राय कार्यकारी अध्यक्ष बनाए गए थे। लेकिन 11 महीने बाद अचानक उन्हें हटा दिया गया और महामंत्री आदित्य साहू को कार्यकारी अध्यक्ष बना दिया गया।

यह कदम कार्यकर्ताओं के बीच असमंजस पैदा करने वाला रहा। कार्यकर्ताओं को यह संदेश गया कि पार्टी नेतृत्व झारखंड में स्पष्ट दिशा तय नहीं कर पा रहा।

**6. भाजपा बनाम झामुमो : दो राजनीतिक संस्कृतियाँ**

झामुमो की राजनीति का आधार है आदिवासी अस्मिता और स्थानीय पहचान। हेमंत सोरेन लगातार इस नैरेटिव को साधते रहे। उन्होंने आदिवासी वोट बैंक को मजबूती से थामे रखा और ग्रामीण क्षेत्रों में विकास व सामाजिक न्याय के संदेश को आगे बढ़ाया।

इसके विपरीत भाजपा की राजनीति राष्ट्रीय मुद्दों और मोदी फैक्टर पर टिकी रही। लेकिन झारखंड के मतदाता रोजगार, विस्थापन, जल-जंगल-जमीन और स्थानीय नेतृत्व की तलाश में थे। यही भाजपा की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हुई।

**7. महाराष्ट्र बनाम झारखंड : क्यों अलग हैं हालात?**

महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना (शिंदे गुट) गठबंधन ने 2024 में शानदार जीत हासिल की। इसका कारण था—

मजबूत स्थानीय नेतृत्व (फडणवीस और शिंदे)

गठबंधन की राजनीति पर पकड़

क्षेत्रीय और जातीय समीकरणों का संतुलन

झारखंड में भाजपा न तो स्थानीय नेतृत्व पेश कर सकी, न ही आदिवासी-गैरआदिवासी समीकरण साध सकी। यही कारण है कि राष्ट्रीय जीत की कहानी यहाँ हार में बदल गई।

**8. गुटबाज़ी और नेतृत्व का संकट**

झारखंड भाजपा के भीतर लगातार गुटबाज़ी की चर्चा रहती है। कुछ गुट रघुवर दास के समर्थक हैं, कुछ अर्जुन मुंडा के। हाल के वर्षों में बाबूलाल मरांडी को भी नेतृत्व में जगह दी गई, लेकिन वे भी पूरे संगठन को एकजुट नहीं कर सके।

रवींद्र राय को कार्यकारी अध्यक्ष बनाना और फिर हटाना, यह सब संगठन की अस्थिरता का प्रतीक है।

**9. आदिवासी समाज से दूरी**

भाजपा की सबसे बड़ी विफलता है—आदिवासी समाज का समर्थन खोना।

भूमि अधिग्रहण कानून में संशोधन का प्रयास

स्थानीय मुद्दों की अनदेखी

झामुमो का अस्मिता आधारित नैरेटिव

इन कारणों से भाजपा आदिवासी वोट बैंक से लगभग पूरी तरह दूर हो गई।

**10. भाजपा के लिए सबक और भविष्य की राह**

भाजपा अगर झारखंड में भविष्य में अपनी पकड़ मज़बूत करना चाहती है तो उसे—

स्थानीय नेतृत्व खड़ा करना होगा।

आदिवासी समाज का विश्वास वापस पाना होगा।

युवा और रोजगार के मुद्दों को प्राथमिकता देनी होगी।

संगठनात्मक चुनाव तय समय पर कराकर कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाना होगा।

केंद्रीय नेतृत्व पर अत्यधिक निर्भरता कम कर स्थानीय नेतृत्व को सामने लाना होगा।

अंततः भाजपा को यह समझना होगा कि झारखंड भाजपा की पराजय केवल सीटों की कमी नहीं है, बल्कि यह संगठनात्मक संकट, रणनीतिक भूल और स्थानीयता की अनदेखी का परिणाम है। जब तक भाजपा झारखंड की राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकताओं को नहीं समझेगी, तब तक राष्ट्रीय शक्ति भी यहाँ असरदार नहीं होगी।

भाजपा के लिए यह समय है आत्ममंथन का। क्योंकि राष्ट्रीय स्तर पर जितनी मज़बूत तस्वीर है, झारखंड की ज़मीन उतनी ही कमजोर है।

# मौत का सिरप: जवाबदेही से भागता तंत्र !

नकली दवाएं बनाना और बेचना केवल अपराध नहीं, पाप है।यह वह कुकर्म है जो जीवन देने के नाम पर मृत्यु बाँटता है।लाभ की लालसा जब संवेदनाओं पर भारी पड़ती है, तब इंसानियत मर जाती है।बीमार की आशा को छलना मानवता का सबसे बड़ा अपमान है।ऐसे स्वार्थी लोग समाज और मानवता दोनों के शत्रु हैं।दवा नहीं, ज़हर बनाकर वे जीवन के अधिकार का उपहास उड़ाते हैं। धन के पीछे भागता मनुष्य कब नैतिकता से इतना गिर गया? सोचिए, ऐसा स्वार्थ और लालच हमें अंततः कहाँ ले जाएगा? बहरहाल, कफ सिरप (खांसी की दवाई) सामान्यतः खांसी या ज़ुकाम के लक्षणों को कम करने के लिए बच्चों और वयस्कों को दी जाती है, लेकिन यह बहुत ही अफसोसजनक है कि कफ सिरप में मिलावट या अशुद्धता के कारण गंभीर साइड इफेक्ट्स या मृत्यु तक हो रहीं हैं। इस क्रम में हाल ही में हमारे देश में कफ सिरप संबंधी शिकायतों का एक बार फिर से उठना न केवल दुखद, बल्कि शर्मनाक भी है।इस संबंध में मध्य प्रदेश और राजस्थान से जो खबरें आईं हैं, उन्हें हल्के में नहीं लिया जा सकता है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार कफ सिरप के कारण कम-से-कम 9 से 12 बच्चों की मौतें हुईं हैं, और इनमें से अधिकतर बच्चों में गुर्दे संबंधी समस्याएँ देखने को मिलीं हैं।परीक्षण में पाया कि एक कफ सिरप में डीईजी स्तर अनुमत सीमा से अधिक था। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि डायथिलीन ग्लाइकॉल (डीईजी) और एथिलीन ग्लाइकॉल (ईजी) औद्योगिक रसायन हैं, जिनका उपयोग अक्सर अवशुद्ध या नीचे-स्तरीय 'ग्लाइकोल' स्रोतों में होता है। जब इन्हें दवा निर्माण में गलती से या धोखाधड़ी से शामिल कर दिया जाता है, तो ये गुर्दे (किडनी) को गंभीर रूप से नुकसान पहुँचा सकते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज दवाओं की उत्पादन प्रक्रिया में विनिर्माण दोष जैसे कि कच्चे माल की शुद्धता की जांच न होना, प्रोसेस कंट्रोल का नाकाफी होना, दवाओं के प्रयोग से पहले उनका ठीक ढंग से परीक्षण नहीं किया जाना,दवाओं पर लेबलिंग त्रुटियाँ और गलत जानकारी, कमज़ोर दवा विनियमन जैसे कारणों से दवाओं के हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं। हाल ही में कफ सिरप के क्रम में संबंधित राज्य को सरकार ने उस सिरप की बिक्री पर रोक लगाने का आदेश दिया, यह अच्छी बात है। उल्लेखनीय है कि इस संबंध में हाल ही में केंद्र ने भी बच्चों (विशेषकर 2 वर्ष से कम आयु) को बिना जाँच के कफ सिरप नहीं देने की एक एडवाइजरी भी जारी की है। बताया गया है कि बच्चों में खांसी जुकाम आमतौर पर अपने आप ठीक हो जाते हैं, ऐसे में आराम, हाइड्रेशन व सहायक उपचार को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।सामान्यतया 5 साल से कम उम्र के बच्चों में भी दवाओं का उपयोग नहीं करने की बात कही गई है। इतना ही नहीं, बड़ी उम्र के बच्चों में भी दवा केवल डॉक्टर की सलाह पर समुचित खुराक दिए जाने की बात कही गई है। इसके साथ ही एक साथ कई दवाओं के कॉम्बिनेशन से बचने और दवा कम से कम अवधि तक दिए जाने तथा सभी स्वास्थ्य संस्थानों को केवल प्रमाणित गुणवत्ता वाली दवाएं ही खरीदने हेतु कहा गया है। बहरहाल, मध्यप्रदेश और राजस्थान में अगर ये मौतें नकली या खराब कफ सिरप की वजह से हुई हैं, तो फिर दोषियों को किसी भी हाल और परिस्थितियों में छोड़ना नहीं चाहिए। वास्तव में, दोषी पाए जाने वालों को सख्त से सख्त सज़ा दी जानी चाहिए और इस संबंध में सरकार को पारदर्शी जाँच, और जवाबदेही सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। बहरहाल, कफ सिरप की शिकायत का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि ये जेनेरिक श्रेणी की है और इसका वितरण सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों के जरिए हुआ है, वास्तव में यह बहुत ही चिंताजनक व संवेदनशील है। चिंताजनक व संवेदनशील इसलिए क्यों कि यहां सवाल यह उठता है कि क्या हमारे यहां जेनेरिक दवाओं की गुणवत्ता के साथ समझौता किया जा रहा है? सवाल यह भी उठता है कि क्या सरकारी स्तर पर होने वाली खरीद में नकली या फर्जी दवाओं को खपाया जा रहा है? कहना ग़लत नहीं होगा कि नकली और मिलावटी दवाएं मानव जीवन के लिए गंभीर ख़तरा हैं।इनसे रोग ठीक होने के बजाय और बढ़ सकते हैं। फर्जी दवाएं लोगों के स्वास्थ्य और भरोसे दोनों को चोट पहुँचाती हैं।गुणवत्ता विहीन दवाओं का असर न के बराबर या हानिकारक होता है। वास्तव में,दवा निर्माण और वितरण पर कड़ी निगरानी से ही समाज और देश को सुरक्षित रखा जा सकता है। ध्यातव्य है कि आज जेनेरिक दवाओं का वितरण करने वाले औषधि केंद्रों की संख्या पूरे देश में लगातार बढ़ रही है। गौरतलब है कि भारत ने सरकार द्वारा 'प्रधान मंत्री भारतीय जनऔषधि योजना की शुरुआत की है, जिसके अंतर्गत सस्ते जेनेरिक दवाओं की दुकानों की संख्या बढ़ाई जा रही है। आंकड़े बताते हैं कि 2023–24 तक इस योजना के तहत 10,006 दुकानें थीं और विक्रय (सेल्स) ₹1,470 करोड़ रही। हमारे देश में 28 फरवरी 2025 तक जन औषधि केंद्रों की संख्या 15,057 थी तथा 30 जून 2025 तक कुल 16,912 जन औषधि केंद्र खोले जा चुके हैं।लक्ष्य है कि मार्च 2027 तक यह केंद्रों की संख्या 25,000 हो जाए, यह काबिले-तारीफ है। जन औषधि केंद्रों के फायदे यह हैं कि इनसे देश में सस्ती दवाओं की उपलब्धता होती है। जन औषधि केंद्र भारत में निर्मित जेनेरिक दवाओं की बिक्री को प्रोत्साहित करते हैं, जिससे 'मेक इन इंडिया' और आत्मनिर्भर भारत अभियान को बल मिलता है। इनसे स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में इजाफा होता है।देश में रोज़गार और उद्यमिता को प्रोत्साहन मिलता है, लेकिन जन औषधि केंद्रों में मिलने वाली सभी दवाएँ डब्ल्यू एच ओ-जीएमपी प्रमाणित लैबों में परीक्षण के बाद ही उपलब्ध होनी चाहिए, ताकि गुणवत्ता पर सवाल न उठने पाएं। बहरहाल, कफ सिरप संबंधी शिकायतों पर राजस्थान सरकार ने मुस्तैदी से कदम उठाए हैं। अधिकारियों ने जांच के आदेश दिए हैं और संबंधित दवा के 22 बैचों पर प्रतिबंध लगाए हैं। यहां ध्यान देने की बात है कि सिरप की सुरक्षा साबित करने की कोशिश में एक सीनियर डॉक्टर ने दवा का सेवन किया और वे बेहोश हो गए। हालांकि, डाक्टर के बेहोश होने के दूसरे कारण भी हो सकते हैं, लेकिन अधिकारियों के मन में शक ने कहीं न कहीं जरूर जन्म लिया है और इस शक को अंजाम तक पहुंचाना चाहिए। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है देश में समय-समय पर दवाओं की गुणवत्ता, मानकों की जांच की जानी चाहिए। दवाओं के साथ खिलवाड़ से बड़ा अपराध कोई दूसरा हो नहीं सकता। आज दवा निर्माण और वितरण में पारदर्शिता व सख्त निगरानी जरूरी है, क्यों कि आज आदमी अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए दवाओं तक में मिलावट/नकली दवाओं का निर्माण, लापरवाही कर रहा है और इसके पीछे बड़े रैकेट काम कर रहे हैं। इन रैकेट्स को पकड़ा जाना बहुत जरूरी है। वास्तव में, जनस्वास्थ्य की रक्षा हेतु दवाओं से जुड़ी हर लापरवाही पर कठोर से कठोर दंड होना चाहिए।सच तो यह है कि ऐसे अक्षम्य अपराधियों को कतई छोड़ना नहीं चाहिए। गौरतलब है कि सीकर जिले में पांच साल के बच्चे और भरतपुर में दो साल के बच्चे की सिरप पीने से मौत हुई है। मध्य- प्रदेश में ज्यादा बच्चों की मौत हुई है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि कफ सिरप की शिकायत का मामला तीन साल पहले भी सामने आया था। कथित रूप से अफ्रीकी देशों में भारतीय कफ सिरप की वजह से 50 से ज्यादा बच्चों की मौत बताई गई थी। उस समय भी भारत सरकार ने इस पर कड़े कदम उठाए थे। कहना ग़लत नहीं होगा कि उससे भी कड़े कदम उठाए जाने की आज जरूरत है। आंकड़े और रिपोर्ट्स बतातीं हैं कि वित्तीय वर्ष 2024-25 (भारत सरकार द्वारा संसद में) कुल 1,16,323 ड्रग सैंपल्स की जांच की गई, जिनमें से 3,104 दवाएं 'नोट आफ स्टैंडर्ड क्वालिटी' (एन एस क्यूं) पाईं गईं तथा 245 दवाएं दोषपूर्ण / मिलावटी रहीं और इस संबंध में अभियोग (प्रोसिक्यूशन्स) की संख्या 961 रहीं।यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि नकली दवाओं के मामले में चीन के साथ भारत का भी नाम लिया जाता है। एक अनुमान के मुताबिक, भारत में बेची जाने वाली 5 से 25 प्रतिशत दवाएं नकली या घटिया हो सकती हैं। देश के जो इलाके नकली दवाओं के लिए जाने जाते हैं, वहां अब युद्ध स्तर पर अभियान चलाने की जरूरत है। बहरहाल, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने पीड़ित बच्चों को दी गई दवाओं के सेंपल की जांच रिपोर्ट के आधार पर यह माना है कि उनमें डायथिलीन ग्लाइकोल (डीईजी) या एथिलीन ग्लाइकोल (ईजी) जैसे घातक रसायन मौजूद नहीं हैं, जबकि मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा में किडनी फेल होने के कारण ही बच्चों की मौत हुई है। बीते 3 अक्टूबर को भी मध्यप्रदेश में एक बच्चे की अस्पताल में मौत हुई। बहरहाल, राजस्थान राज्य सरकार की निःशुल्क दवा योजना में सप्लाई की गई डेक्स्ट्रोमेथॉर्फन कफ सिरप को सरकार ने जांच के बाद क्लीन चिट दे दी है। हालांकि, यह सिरप बच्चों के लिए अनुशंसित नहीं है। सीकर और भरतपुर के तीन बच्चों की मौत के बाद चिकित्सा विभाग ने कंपनी की ओर से आपूर्ति की गई दवा के सैंपलों की जांच करवाई थी, जिसमें दूषित होने व डीईजी, ईजी का संभावित स्रोत हानिकारक प्रोपाइलीन ग्लाइकोल नहीं पाया गया। इधर, छिंदवाड़ा के परासिया क्षेत्र में कफ सिरप लेने के बाद किडनी फेल होने से अस्पताल में भर्ती एक और बच्चे ने शुक्रवार को दम तोड़ दिया। मरने वालों की संख्या नौ हो गई, जबकि 12 अन्य बच्चे गंभीर हालत में नागपुर और छिंदवाड़ा के अस्पतालों में मौत से संघर्ष कर रहे हैं। सभी बच्चों की उम्र 5 वर्ष से कम है। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार मृत बच्चों के घर से कोल्ड्रिफ और नेक्सट्रॉस-डीएस सिरप मिले थे। मध्यप्रदेश में कफ सिरप लेने के बाद किडनी फेल होने से नौ बच्चों की मौत के बाद दवा सेंपल की लेबारेटरी जांच को लेकर विरोधाभास भी सामने आया। केंद्र सरकार ने कहा है कि मध्यप्रदेश में मरने वाले बच्चों के पास मिली दवा के सेंपल की जांच में प्रतिबंधित घातक रसायन डीईजी/ईजी की पुष्टि नहीं हुई है। उधर, छिंदवाड़ा के सीएमचओ ने यह बात कही कि दवाओं के सेंपल की जांच रिपोर्ट अभी प्राप्त नहीं हुई है। इन सभी के बीच, बहरहाल, यह भी एक तथ्य है कि किसी भी दवा की क्रिया अथवा प्रतिक्रिया मरीज के शरीर, उम्र, लिंग, जेनेटिक्स पर निर्भर करती है तथा हर दवा की खुराक उम्र के अनुसार बदलती है और कुछ दवाएं तो बच्चों को दी ही नहीं जा सकती हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि दवा देने का समय, दवा देने का रूट/माध्यम तथा शरीर में पहले से कोई बीमारी होना भी दवा की क्रिया-प्रतिक्रिया को प्रभावित करता है। वास्तव में इन सभी घटकों में जरा से बदलाव पर भी दवाओं के दुष्प्रभाव झेलने पड़ सकते है। दवा निर्माण, वितरण और निरीक्षण की पूरी प्रक्रिया में खामियां नहीं होनी चाहिए, क्यों कि दवाएं सीधे तौर पर जीवन से जुड़ी हैं। हाल ही में जो त्रासदी हुई है,वह हमें तीन साल पहले यानी कि साल 2022 में गांबिया और उज्बेकिस्तान में कथित भारतीय सिरप से हुई मौतों की याद दिलाती है। यहां यक्ष प्रश्न यह उठता है कि क्या हमने उससे कुछ सीखा? ऐसी घटनाएं देश की दवा-नियामक व्यवस्था पर कहीं न कहीं गहरे सवाल खड़े करती है। आज हमारे देश में दवाओं की जांच और निरीक्षण जैसे औपचारिकता बनकर रह गया है। ऐसे भी दृष्टांत हैं, जिनमें गुणवत्ता परीक्षण में विफल रही दवाएं सरकारी योजना के तहत फिर से वितरित की जा रही हैं। ऐसे में, सवाल यह भी है कि सरकारी अस्पतालों में मुफ्त बांटी जाने वाली दवाएं कितनी सुरक्षित और ठीक हैं ? वास्तव में यह कहीं न कहीं यह तंत्रगत भ्रष्टाचार और संवेदनहीनता की ओर ही इशारा करता है। भारत धीरे-धीरे दुनिया की फार्मेसी हब बनने की ओर अग्रसर है, ऐसे में ऐसी त्रासदियों से तो देश की छवि को कहीं न कहीं आघात ही पहुंचेगा। आज जरूरत इस बात की है कि दवा उद्योग और नियामक संस्थाओं की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। वहीं डॉक्टरों और फार्मासिस्टों को भी बच्चों को कोई सिरप या एंटीबायोटिक दवा देने से पहले पर्याप्त सतर्कता बरतनी चाहिए। दवाओं के मामलों में कोई भी कार्रवाई सिर्फ प्रतीकात्मक नहीं होनी चाहिए, बल्कि इससे व्यवस्था में ठोस बदलाव आने चाहिए। हाल फिलहाल दोनों राज्यों में त्रासदी के बाद नीति नियामकों में जो सक्रियता दिख रही है, उम्मीद की जा सकती है कि उसके ठोस नतीजे निकलेंगे, ताकि ऐसे हादसे की पुनरावृत्ति न हो।

***सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।***

# ऐआई के युग में रॉक-सॉलिड एसटीईएम फाउंडेशनल कौशल का निर्माण

विजय गर्ग

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि स्वचालन ने कई पारंपरिक एसटीईएम भूमिकाओं को अनावश्यक बना दिया है, जबकि अन्य लोग अभिजात वर्ग कंपनियों में भी तकनीकी बर्खास्तियों की ओर इशारा करते हैं। एक आईटी कंपनी द्वारा कोडर्स के लिए 450 नौकरियों की भर्ती का हालिया अनुभव यह दर्शाता है कि हमें मूल कौशल पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता क्यों है। 450 नौकरियों के लिए 12,000 उम्मीदवारों ने आवेदन किया। दुर्भाग्यवश, किसी भी उम्मीदवार को नियुक्त नहीं किया जा सका क्योंकि उनमें से अधिकांश व्यवसाय की समस्या का समाधान करने के बजाय कोड के लिए एआई टूल पर भरोसा करते थे।

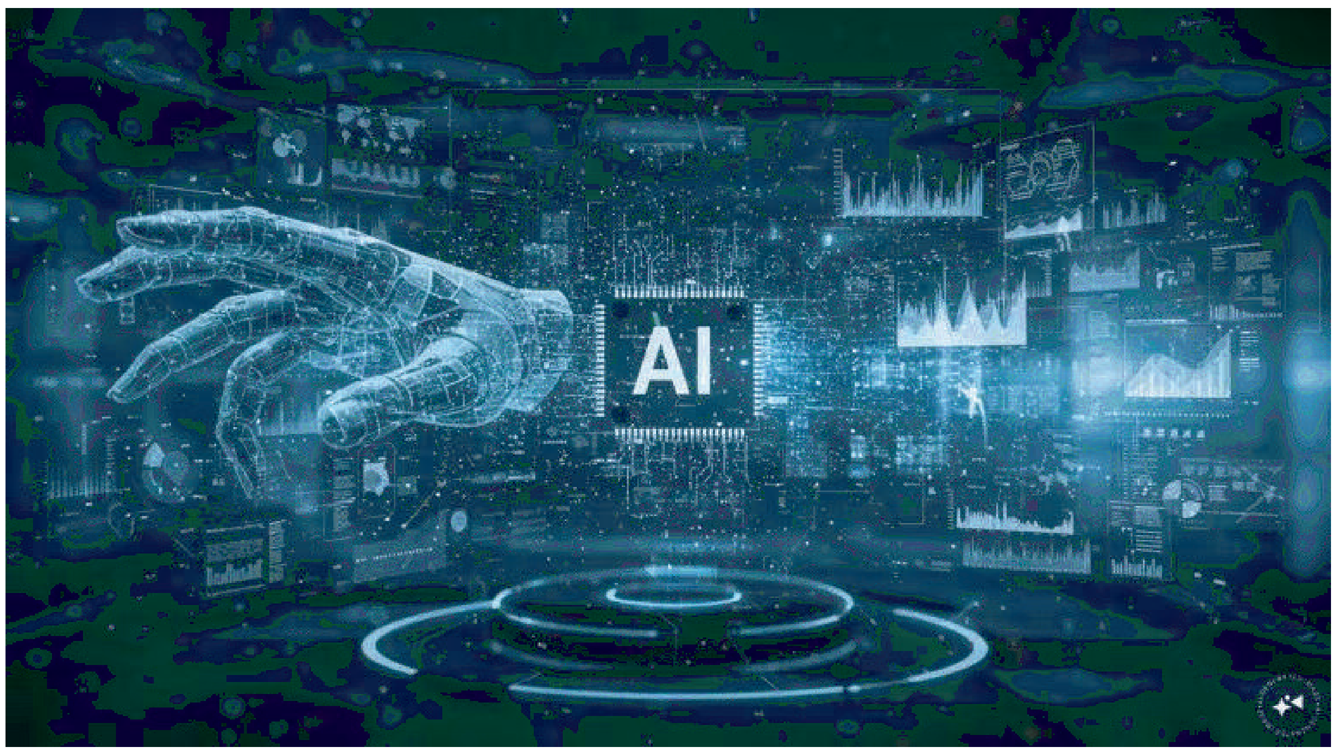


एसटीईएम (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित) कौशल का महत्व। इस ऐआई युग में ठोस एसटीईएम बुनियादी कौशल बनाना महत्वपूर्ण है।

भारत में एसटीईएम प्रथाओं ने एक अजीब विरोधाभास देखा है। राज्य स्तरीय कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में एसटीईएम शिक्षकों के लिए निराशाजनक प्रवेश ने एक असहज प्रश्न उठाया है - क्या गिरावट एसटीईएम शिक्षा में बढ़ती आत्मविश्वास की कमी का प्रतिबिंब है?

एक ओर, हम एसटीईएम स्नातकों की बड़ी संख्या में उभरते हुए प्रवृत्ति के गवाह हैं; दूसरी ओर, बुनियादी इंजीनियरिंग और वैज्ञानिक क्षेत्रों में बेरोजगारी और असुविधा के बारे में चिंताएं हैं। भारत कौशल रिपोर्ट (2024) के हालिया आंकड़ों में बताया गया है कि केवल 50% भारतीय स्नातक ही रोजगार योग्य माने जाते हैं। एस्पायरिंग माइंड्स (अब एसएचएल) की एक रिपोर्ट में पाया गया है कि भारतीय इंजीनियरिंग स्नातक कई चुनौतियों के कारण ज्ञान अर्थव्यवस्था में बेरोजगार हैं - व्यावहारिक संपर्क का अभाव, कम संचार कौशल और अप्रचलित पाठ्यक्रम।

यह व्यापक रूप से माना जाता है कि स्वचालन ने कई पारंपरिक एसटीईएम भूमिकाओं को अनावश्यक बना दिया है, जबकि अन्य लोग अभिजात वर्ग कंपनियों में भी तकनीकी बर्खास्तियों की ओर इशारा करते हैं। एक आईटी कंपनी द्वारा कोडर्स के लिए 450 नौकरियों की भर्ती का हालिया अनुभव यह दर्शाता है कि हमें मूल कौशल पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता क्यों है। 450 नौकरियों के लिए 12,000 उम्मीदवारों ने आवेदन किया। दुर्भाग्यवश, किसी भी उम्मीदवार को नियुक्त नहीं किया जा सका क्योंकि उनमें से अधिकांश व्यवसाय की समस्या का समाधान करने के बजाय कोड के लिए एआई टूल पर भरोसा करते थे।

कई छात्र त्वरित सुधार करने के लिए प्रलोभित होते हैं जिन्हें एसटीईएम में ठोस आधार हल कर सकता है। एसटीईएम मूलतः प्रणालियों को समझने के बारे में है। ये जैविक, भौतिक, सूचनात्मक या यहां तक कि मैकेनिकल भी हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एसटीईएम की समझ एक छात्र को तैयार उत्तरों के बजाय चैटजीपीटी पर अधिक शोध करने में सक्षम बना सकती है। स्वाभाविक रूप से, एसटीईएम वास्तविक मूल नवाचार का आधार है

डेमिस हसाबिस को देखो। उनके पास संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान में पीएचडी है, लेकिन यह उनकी वैज्ञानिक समझ है जो उन्हें अल्फाफोल्ड परियोजना में डेटा का उपयोग करने की अनुमति देती है। उस परियोजना ने प्रोटीन फोल्डिंग की जटिल समस्या को हल किया। यह न केवल एआई समुदाय के लिए एक उपलब्धि थी बल्कि जीवविज्ञान, भौतिकी और मशीन लर्निंग को जोड़ने वाले पूरे अंतर-अनुशासनात्मक विज्ञान का भी।

भारत में भी, इसरो का चंद्रयान-3 मिशन केवल कच्चे कोडिंग प्रतिभा का उत्पाद नहीं था। इसमें सटीक इंजीनियरिंग, कक्षा यांत्रिकी, सामग्री विज्ञान और लागू गणित की आवश्यकता थी। ये अपने शास्त्रीय रूप में एसटीईएम डोमेन हैं।

एसटीईएम कौशल के साथ वास्तविक समस्या यह है कि शिक्षाएं अलग-अलग लग सकती हैं - आवेदन से दूर। एक अच्छा समाधान एसटीईएम शिक्षा को सिस्टम शिक्षा के रूप में पुनः कल्पना करना होगा। एक जो मजबूत उद्योग इंटरफ़ेस, आधुनिक प्रयोगशाला पहुंच और अंतःविषय परियोजनाओं पर केंद्रित है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप, सक्रिय शिक्षण का विचार कक्षा में सीखने को पुनः परिभाषित करने के लिए प्रौद्योगिकी, मानव बातचीत और यहां तक कि अंतर-अनुशासनात्मक दृष्टिकोणों पर भी कटौती करता है।

एआई की वृद्धि ने बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और बर्खास्तगी के बारे में भय पैदा किया है। हालांकि ऐसा डर गलत स्थान पर नहीं है, लेकिन यह पूरी तस्वीर को नजरअंदाज कर देता है।

एक व्यवहार्य एआई मॉडल वास्तव में उन लोगों के लिए मूल्य बढ़ा सकता है जो ऐसी प्रणालियों के पीछे विज्ञान और कला को समझते हैं। उदाहरण के लिए, जनरेटिव ऐआई कोड लिख सकता है, लेकिन क्या हम इसे मानव पर्यवेक्षण के बिना एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में जटिल सिमुलेशन को मान्य कर सकते हैं? शायद नहीं। ये ऐसे पहलू हैं जिन्हें अभी भी मानवीय भागीदारी की आवश्यकता है। जैसे डेमिस हसाबिस, डॉ. स्टैनफोर्ड में फेई-फेई ली या प्रतिष्ठित संस्थानों के कई भारतीय एआई शोधकर्ताओं का तर्क है कि एसटीईएम शिक्षा एआई आउटपुट पर सवाल उठाने और आगे सुधार करने के लिए आवश्यक बुनियादी ज्ञान प्रणाली है। एसटीईएम शिक्षा जलवायु मॉडलिंग, अंतरिक्ष अनुसंधान, जैव चिकित्सा विज्ञान और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण है जहां गलतियों के वास्तविक दुनिया के परिणाम होते हैं। एआई एक गुणक है, प्रतिस्थापन नहीं। यह मांग रूट कोडिंग से दूर रहेगी और एल्गोरिदम डिजाइन, गणितीय मॉडलिंग और सिस्टम एकीकरण की ओर जाएगी। एसटीईएम या शिक्षा को वास्तव में नौकरी के मार्ग के रूप में देखा गया है। लेकिन एक अच्छा बुनियादी आधार बढ़ते झूठे विज्ञान, गलत सूचना और यहां तक कि वैचारिक चरमपंथ के खिलाफ देश का बचाव है। यदि सही ढंग से वितरित किया जाए तो एसटीईएम जांच, झूठापन और साक्ष्य की संस्कृति पैदा कर सकता है। ये एक समाज में खुद को तोड़ने के बिना आधुनिकीकरण करने की कोशिश कर रहे हैं। भारत में, अटल नवाचार मिशन या राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन जैसी पहल सफल होने की संभावना बहुत अधिक है, यदि एसटीईएम पाइपलाइन मजबूत बनी रहे।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब***

## कौशल-आधारित मूल्यांकन गणित शिक्षा का भविष्य क्यों है

विजय गार्ग

आज की तेजी से बदलती दुनिया में गणित सिखाने और मूल्यांकन करने के पारंपरिक तरीके अब पर्याप्त नहीं हैं। ध्यान स्मृति और यांत्रिक समस्या-समाधान से गहरी समझ, तर्क और वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग को विकसित करने की ओर जा रहा है। यह बदलाव कौशल-आधारित मूल्यांकन (सीबीए) में शामिल है - एक शैक्षिक दृष्टिकोण जो मापता है कि छात्र वास्तव में क्या कर सकते हैं।

**मूल सीखने से लेकर वास्तविक समझ तक**

दशकों से गणित के मूल्यांकन में समझ पर तेजी और सटीकता पर जोर दिया गया है। छात्र अक्सर अपने पीछे की अवधारणाओं को सही ढंग से समझने के बिना सूत्रों को याद करते हैं। हालांकि, योग्यता आधारित मूल्यांकन इस फोकस को बदल देता है। यह शिक्षार्थियों को आवेदन के माध्यम से अपनी विशेषज्ञता प्रदर्शित करने के लिए प्रोत्साहित करता है - अपरिचित समस्याओं का समाधान, तार्किक तर्क और उनकी सोच की व्याख्या।

**प्रत्येक छात्र के लिए व्यक्तिगत शिक्षा**

कौशल-आधारित मूल्यांकन की सबसे बड़ी ताकतों में से एक वैयक्तिकरण है। एक आकार की सभी परीक्षाओं के विपरीत, सीबीए छात्रों को अपनी गति से प्रगति करने की अनुमति देते हैं। एक छात्र जो बीजगणित में तेजी से माहिर होता है, वह आगे बढ़ सकता है, जबकि कोई अन्य व्यक्ति जो अंशों के साथ संघर्ष करता है, उसे तब तक लक्षित सहायता मिलती है जब तक कि वे योग्यता प्रदर्शित न कर लें। यह मॉडल आत्मविश्वास, जिज्ञासा और विकास की मानसिकता को बढ़ावा देता है।

**वास्तविक दुनिया के लिए छात्रों की तैयारी**

वास्तविक दुनिया में गणित में शायद ही कभी चार विकल्पों से सही उत्तर चुनना शामिल होता है। इंजीनियर, डेटा वैज्ञानिक और अर्थशास्त्री जटिल, खुला अंत वाली समस्याओं का समाधान करते हैं जिन्हें रचनात्मकता और तर्क की आवश्यकता होती है। योग्यता-आधारित मूल्यांकन इस वास्तविकता को दर्शाता है - छात्र प्रामाणिक संदर्भों में गणित लागू करते हैं, डेटा की व्याख्या करते हैं और अपनी पसंद का समर्थन करते हैं। ये डेटा-आधारित और एआई संचालित दुनिया में आवश्यक कौशल हैं।

**बेहतर प्रतिक्रिया, बेहतर सीखना**

पारंपरिक मूल्यांकन अक्सर एक ग्रेड के साथ समाप्त होते हैं, जिससे चिंतन करने की बहुत कम जगह होती है। इसके विपरीत, सीबीए शैक्षिक प्रतिक्रिया पर जोर देते हैं - छात्रों को यह बताने के लिए कि उन्होंने क्या अच्छा किया, कहां गलत हुआ और वे कैसे बेहतर हो सकते हैं। शिक्षक और शिक्षकों के बीच यह निरंतर संवाद न केवल सीखने का एक उपकरण बनाता है।

**शिक्षकों और प्रणालियों को सशक्त बनाना**

योग्यता आधारित मॉडल शिक्षकों को भी सशक्त बनाते हैं। वे शिक्षकों को परीक्षण स्कोर के बजाय कौशल प्रगति और अवधारणात्मक गहराई पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देते हैं। स्कूल वास्तविक समय में प्रत्येक छात्र की ताकतों और अंतराल को ट्रैक कर सकते हैं, जिससे अधिक प्रभावी हस्तक्षेप और निष्पक्ष परिणाम मिलते हैं।

**आगे की सड़क**

चूंकि दुनिया भर की शिक्षा प्रणालियों में डिजिटल उपकरण, अनुकूलनात्मक सीखने के प्लेटफॉर्म और एआई-चालित विश्लेषण शामिल हैं, इसलिए योग्यता आधारित मूल्यांकन स्वाभाविक रूप से सीखने के भविष्य में फिट बैठता है। यह भारत में पीआईएसए और एनईपी 2020 जैसे वैश्विक मानकों के अनुरूप है - महत्वपूर्ण सोच, आवेदन और आजीवन शिक्षा कौशल को बढ़ावा देना। बेहतर प्रतिक्रिया और स्पष्टता प्रदान करता है

व्यापक प्रतिक्रियाः शिक्षक विशिष्ट क्षमताओं से सीधे जुड़े समय पर, प्रासंगिक और विस्तृत फीडबैक प्रदान कर सकते हैं, जिससे छात्रों और माता-पिता को यह अधिक स्पष्टता मिलती है कि छात्र किस कौशल में महारत हासिल करता है और उन्हें कहां सुधार करने की आवश्यकता होती है।

पूर्वाग्रह को कम करनाः सीबीए पारंपरिक ग्रेड के बजाय मास्टरी के उद्देश्य मानदंडों पर ध्यान केंद्रित करके, एक अधिक निष्पक्ष मूल्यांकन प्रक्रिया सुनिश्चित करने में मदद करता है। संक्षेप में, सीबीए गणित साक्षरता विकसित करके छात्रों को बेहतर तैयार करता है - व्यावहारिक परिस्थितियों पर गणितीय ज्ञान लागू करने की क्षमता - जो 21वीं सदी में गणनात्मक कौशल रखने से कहीं अधिक मूल्यवान है।

**निष्कर्ष**

योग्यता-आधारित मूल्यांकन गणित सिखाने और मापने के तरीके पर एक मौलिक पुनर्विचार का प्रतिनिधित्व करता है। यह परीक्षाओं की जगह लेने के बारे में नहीं है, बल्कि सफलता को पुनः परिभाषित करने के बारे में है - यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक छात्र तर्क, विश्लेषण और नवाचार के लिए आवश्यक कौशल प्राप्त करे। गणित शिक्षा का भविष्य यह नहीं है कि छात्र क्या याद करते हैं, बल्कि वे जो समझते हैं उसके साथ क्या कर सकते हैं उसका आकलन करना।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब***

## नीट युजी वर्ष में दो बार आयोजित किया जा सकता है

विजय गर्ग

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के एक प्रश्न का उत्तर 1 अगस्त को लोकसभा इसमें 115,900 एमबीबीएस हैं 780 मेडिकल सीटें देश में कॉलेज। एक नेशनल से अपडेट चिकित्सा आयोग पर 26 सितंबर, 2025 को सीटों की संख्या 809 मेडिकल कॉलेजों में 124,825। यह आने वाले वर्षों में और अधिक बढ़ने की उम्मीद है। इस तरह की संख्याओं के साथ कागज और पेंसिल मोड में राष्ट्रीय पात्रता-कम-प्रवेश परीक्षा आयोजित करना एक हर्कुलियन कार्य है और कई चीजें गलत हो सकती हैं। बड़ी संख्या की आवश्यकता के अलावा केंद्र, कुछ पुरानी समस्याएं नकलीकरण, ड्रेस कोड उल्लंघन, कागज लीक और जल्द ही इस पर बातचीत कंप्यूटर आधारित ऑनलाइन परीक्षाओं पर स्विच करने की इच्छा जारी है और शिक्षा मंत्रालय इस पर विचार कर रहा है विकल्प. उम्मीदवारों की बढ़ती संख्या को देखते हुए, ऑनलाइन परीक्षाएं विभिन्न दिनों और यहां तक कि एक दिन के भीतर आयोजित की जा सकती हैं, जिससे परेशानी मुक्त परीक्षा होगी। चूंकि केंद्रों की संख्या भी कम होगी, इसलिए पर्यवेक्षण करने के लिए कर्मचारियों की आवश्यकता है और प्रक्रिया की अखंडता को बनाए रखना कम होगा। प्रश्नपत्रों का लीक भी नहीं होगा, क्योंकि उम्मीदवार एक ही प्रश्न पत्र का उत्तर नहीं देंगे। कंप्यूटर एक ही कठिनाई के स्तर पर वैकल्पिक पेपर उत्पन्न करेगा। एक और बड़ा लाभ यह है कि परीक्षा वर्ष में कम से कम दो बार आयोजित की जा सकती है उन लोगों के लिए आसान बनाना जो आरएसटी परीक्षा से चूक जाते हैं या अपने स्कोर में सुधार करना चाहते हैं। परीक्षा के साथ, यह संभव नहीं था। लेकिन, यदि परीक्षा ऑनलाइन हो जाती है तो नीट युजी वर्ष में दो बार आयोजित की जा सकती है।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब***

# खेलों में व्यावसायिक दक्षता से मैनेज करें अपना कैरियर

विजय गर्ग

अगर आपकी रुचि खेलों के व्यावसायिक पक्ष में है तो खेल प्रबंधन आपके सपनों का कैरियर हो सकता है।

खेल प्रबंधन में कार्यरत पेशेवर खेल संगठनों, लीगों और आयोजनों की रीढ़ होते हैं। इनके लिए स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में डिग्री या फिर अन्य पाठ्यक्रम उपयोगी हैं। इस क्षेत्र में कैरियर के अनेक अवसर हैं, जिनमें खेल संचालन, विपणन, इवेंट मैनेजमेंट, कोचिंग और खेल प्रबंधन कंसल्टिंग शामिल हैं।

भारत में खेल अभूतपूर्व गति से बढ़ रहे हैं। ऐसे में सही खिलाड़ियों की पहचान, चयन, प्रशिक्षण और खेल आयोजन को लेकर चुनौतियां भी बढ़ी हैं। वहीं अंतरराष्ट्रीय खेलों में भारत की बढ़ती भागीदारी ने स्पोर्ट्स मैनेजमेंट की मांग को बढ़ा दिया है। स्पोर्ट्स मैनेजमेंट खेलों के प्रति जुनून पर आधारित एक उज्ज्वल कैरियर है। यह क्षेत्र प्रमुख खेल आयोजनों और संगठनों की योजना बनाने, व्यवस्थित करने और नियंत्रित करने के लिए आवश्यक कौशल से जुड़ा है। खेल उद्योग के सुचारू संचालन में रुचि रखने वालों के लिए एक रोमांचक कैरियर है। खेलों के विकास के माहौल में कैरियर विकल्प के रूप में स्पोर्ट्स की उज्ज्वल संभावनाएं हैं।

**स्पोर्ट्स मैनेजमेंट क्या है**

खेल प्रबंधन तेज़ी से बढ़ रहा है और इसमें खेल संचालन, खेल विपणन, सुविधा प्रबंधन और एथलेटिक प्रशासन शामिल हैं। अगर आपको खेलों का व्यावसायिक पक्ष पसंद है तो खेल प्रबंधन आपके सपनों की नौकरी हो सकती है। खेल प्रबंधन में लगे लोग खेल संगठनों, लीगों और आयोजनों की रीढ़ होते हैं। इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कौशल हैं - रणनीतिक योजना बनाना, धन का प्रबंधन करना, कार्यक्रमों का समन्वय करना और आंकड़ों के आधार पर निर्णय लेना। खेल उद्योग तेजी से बदलता रहता है, इसलिए खेल प्रबंधन के पेशेवरों को नए रुझानों और तकनीक के साथ अद्यतन रहना आवश्यक है।

**महत्वपूर्ण कार्य**

टीम प्रबंधन : खिलाड़ियों की भर्ती, प्रशिक्षण, अनुबंध वार्ता और प्रदर्शन प्रबंधन सहित खेल टीमों के संचालन की देखरेख करना।

इवेंट मैनेजमेंट : स्थानीय प्रतियोगिताओं से लेकर अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों तक, खेल आयोजनों का आयोजन और प्रबंधन। इसमें लॉजिस्टिक्स, शेड्यूलिंग, टिकट बिक्री और इवेंट प्रबंधन शामिल हैं। स्पोर्ट्स मैनेजमेंट से जुड़े प्रोफेशनल्स फाइनेंस और बजट का प्रावधान कर इससे जुड़े ह्यूमन रिसोर्सेज और संबंधित लोगों का ध्यान रखते हैं। वे खेलों का आयोजन करने के साथ-साथ इवेंट्स और टीम की मार्केटिंग जैसे महत्वपूर्ण काम भी करते हैं। उनके कार्यों में उपलब्ध सुविधाओं का दोहन तथा उसके लिए कार्यवाही करना, स्पोर्ट्स से जुड़ी योजना बनाना और आवश्यक निर्णय लेना भी शामिल है। इसके लिए आपको अपने संगठन को बेहतर और अधिक लाभदायक बनाने के नए तरीके खोजने में कुशल होना चाहिए। सफल स्पोर्ट्स मैनेजर्स केवल प्रशासक नहीं होते बल्कि वे रणनीतिक विचारक होते हैं जो अपने संगठनों को संपन्न, टिकाऊ व्यवसायों में बदल सकते हैं।

**देश-विदेश में अवसर**

स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में कैरियर के अनेक अवसर हैं, जिनमें खेल संचालन, विपणन, इवेंट मैनेजमेंट, कोचिंग और खेल प्रबंधन कंसल्टिंग शामिल हैं। इस क्षेत्र में सफलता के लिए रणनीतिक योजना, वित्तीय प्रबंधन और खेल उद्योग के रुझानों की जानकारी आवश्यक है। वे खेल गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाते हैं और राजस्व बढ़ाते हैं। ताकि उनके खेल संगठन और अधिक सफल और टिकाऊ बनें। खेल प्रबंधन का मतलब एक ऐसा सुसंगत और समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र बनाना है जो खिलाड़ियों, प्रशंसकों और संगठनों को फलने-फूलने का अवसर दे। इस क्षेत्र में देश के साथ-साथ विदेशों में भी भरपूर कैरियर अवसर उपलब्ध हैं। खेल संगठनों को सफल बनाने के लिए हर भूमिका महत्वपूर्ण है। खेल संचालन इसका एक बड़ा हिस्सा है। यह खेल टीमों, लीगों या सुविधाओं के दैनिक संचालन से संबंधित है।

**जॉब और पारिश्रमिक**

खेल संचालन प्रबंधक, खेल टीमों और लीगों के दैनिक कार्यों का प्रबंधन करते हैं। वे आयोजनों को सफल बनाने के लिए धन, कार्यक्रम और रसद का प्रबंधन करते हैं। कड़ी मेहनत करते हैं ताकि एथलीटों, प्रशिक्षकों और प्रशंसकों का समय अच्छा बीते। वहीं खेल सुविधा प्रबंधक, खेल स्थलों की देखभाल करते हैं। उन्हें सुरक्षित और सुचारू चलाने में योगदान देते हैं। तकनीक और सुरक्षा के अपने ज्ञान का उपयोग करते हैं। आजकल स्पोर्ट्स मैनेजमेंट एक कमाऊ कैरियर बन गया है, जिसकी प्रारंभिक सालाना आय ही 25 लाख रुपये से आरंभ होती है। टाटा, रिलायंस और कॉर्पोरेट जगत के स्पोर्ट्स मैनेजर्स की आय तो करोड़ों रुपये में है।

**बदलावों के प्रति अनुकूलता**

खेल प्रबंधकों को डेटा विश्लेषण को अपनाकर, नवीन विपणन रणनीतियां विकसित करके तथा हितधारकों के साथ मजबूत संबंध बनाकर इन प्रवृत्तियों के अनुकूल होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, खेल जगत में सामाजिक उत्तरदायित्व और स्थिरता पर बढ़ते जोर के कारण खेल प्रबंधकों को अपने निर्णयों के नैतिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर विचार करना आवश्यक हो गया है। खेल प्रबंधन का भविष्य पेशेवरों की इन चुनौतियों का पूर्वानुमान लगाने और उनसे निपटने की क्षमता पर निर्भर करता है, साथ ही इस गतिशील और निरंतर बदलते उद्योग द्वारा प्रस्तुत अवसरों को अपनाने पर भी निर्भर करता है। प्रतिभाशाली और नवोन्मेषी खेल प्रबंधकों की हमेशा आवश्यकता रहेगी। कोई भी व्यक्ति एकल खेल प्रबंधन या बहु-खेल प्रबंधन उद्यम में सफल हो सकता है।

**कौशल और अनुभव**

खेल संचालन और खेल सुविधा प्रबंधन में लगे लोगों को व्यावसायिक कौशल और खेल ज्ञान के संयोजन की आवश्यकता होती है। खेल प्रबंधन में शैक्षणिक कार्यक्रम छात्रों को व्यावहारिक अनुभव और शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करके खेल उद्योग में विभिन्न भूमिकाओं के लिए तैयार करते हैं। उन्हें समस्या-समाधान, बारीकियों पर ध्यान देने और एक साथ कई काम करने में कुशल होना चाहिए। एथलेटिक प्रबंधन में कई लोगों के पास खेल प्रबंधन, व्यवसाय या सुविधा प्रबंधन में डिग्री होती है। अनुभव, प्रमाणपत्र और खेलों के प्रति प्रेम भी मददगार साबित होते हैं। इस क्षेत्र में कैरियर बनाने वालों को शारीरिक शिक्षा सहित किसी भी विषय में उपाधि प्राप्त करने के अलावा स्पोर्ट्स मैनेजमेंट में डिग्री हासिल करनी चाहिए।

**उपयोगी कोर्स**

खेल उद्योग में स्पोर्ट्स मैनेजमेंट एजुकेशन का महत्व लगातार बढ़ता जा रहा है। जैसे-जैसे खेल जगत अधिक जटिल, प्रतिस्पर्धी और वैश्वीकृत होता जा रहा है, वैसे-वैसे ऐसे योग्य पेशेवरों की मांग भी बढ़ रही है जिन्हें खेल के व्यवसाय, विपणन, संचालन और रणनीतिक पहलुओं की गहरी समझ हो। स्पोर्ट्स मैनेजमेंट कोर्स एक विशिष्ट शैक्षिक कार्यक्रम है जिसे भारत सरकार के साथ -साथ कुछ प्रमुख निजी संस्थानों द्वारा देश भर में संचालित किया जा रहा है। यह कोर्स छात्रों को खेल संगठनों, आयोजनों, टीमों और एथलीटों के प्रबंधन के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल से लैस करके खेल उद्योग में कैरियर के लिए तैयार करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ये पाठ्यक्रम कई विषयों को कवर करते हैं तथा खेल उद्योग से संबंधित विशेष ज्ञान के साथ व्यवसाय प्रबंधन के सिद्धांतों को सम्मिलित करते हैं। यह कोर्स युवाओं को खेल आयोजनों और सुविधाओं के प्रबंधन से लेकर सफल विपणन अभियान व उद्योग द्वारा प्रस्तुत चुनौतियों का सामना करने के कौशल से लैस करता है।

**महत्वपूर्ण संस्थान**

खेल प्रबंधन के पाठ्यक्रम और कार्यक्रम इस क्षेत्र के लिए आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। भारत में इस क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित संस्थाएं व कॉलेज हैं जैसे - नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स, पटियाला, लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन, ग्वालियर, लक्ष्मीबाई नेशनल कॉलेज, तिरुवनंतपुरम (केरल), सिम्बायोसिस स्कूल ऑफ स्पोर्ट्स साइंसेज, पुणे, तमिलनाडु फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी, चेन्नई, इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज, दिल्ली, आर्मी स्पोर्ट्स इंस्टीट्यूट, पुणे, हिमालयन माउंटेनियरिंग इंस्टीट्यूट नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वाटर स्पोर्ट्स, गोवा।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब***

# जेन जी देश की ताकत है, कमजोरी नहीं

राजेश कुमार पासी

जब से नेपाल में सत्ता परिवर्तन हुआ है, तब से जेन जी का नाम मीडिया में सुर्खिओं में बना हुआ है । इसकी वजह यह है कि इस आंदोलन को चलाने का श्रेय जेन जी को दिया जा रहा है । जेन जी उस युवा पीढ़ी को कहा जाता है जिसकी उम्र 13 से 28 वर्ष के बीच है । वैसे देखा जाए तो ये कोई नई बात नहीं है बल्कि हर आंदोलन के पीछे युवा शक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है । बांग्लादेश का आंदोलन भी युवाओं द्वारा ही चलाया गया था और वहां भी उस आंदोलन के कारण सत्ता परिवर्तन हो गया । इसी प्रकार श्रीलंका में भी जेन जी ने आंदोलन से मौजूदा सत्ता को उखाड़ फेंका था । जेन जी के गुस्से का शिकार नेपाल आखिरी देश नहीं है बल्कि इस समय भी कई देशों में जेन जी मौजूदा सत्ता के खिलाफ आंदोलन चला रहे हैं । मेडागास्कर, मोरक्को और जॉर्जिया भी इसका शिकार बन रहे हैं । इन आंदोलनों के कारण जेन जी की छवि अराजकता फैलाने वालों की बन रही है जबकि यह पूरा सच नहीं है ।

वर्तमान सत्ता की नाकामी और भ्रष्टाचार के कारण जेन जी आंदोलित हो रहे हैं । जेन जी आंदोलनों के कारण बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, वंशवाद और नेपोटिज्म का मुद्दा राजनीतिक दलों के लिए परेशानी का सबब बन रहा है । नेपाल के युवा सोशल मीडिया पर नेताओं के बच्चों की अय्याशी की तस्वीरें देखकर अपना विरोध प्रकट कर रहे थे । इसके अलावा भी वो कई मुद्दों पर सरकार की आलोचना कर रहे थे । सोशल मीडिया पर अपनी आलोचना नेपाली सरकार को बर्दाश्त नहीं हुई तो उसने सोशल मीडिया पर ही रोक लगा दी । इससे जेन जी का गुस्सा फूट पड़ा और वो सड़कों पर उतर आया । सरकार ने युवाओं के गुस्से को शांत करने की जगह ताकत के बल पर उसे दबाना चाहा लेकिन उसका ये प्रयास उल्टा पड़ गया । जब सरकार ने युवाओं की मांग मान ली और सोशल मीडिया से प्रतिबंध हटा दिया तो यह गुस्सा शांत होने की जगह बढ़ गया । वास्तव में युवाओं का गुस्सा भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और वंशवाद के प्रति था, इसलिए वो सत्ता परिवर्तन के लिए हिंसक हो गए । अपने साथियों की मौत ने भी उनके गुस्से को बढ़ाया । बेशक जेन जी आंदोलन के कारण नेपाल कुछ समय के लिए अराजकता के दौर में चला गया था लेकिन जेन जी ने सेना के साथ मिलकर अस्थायी नेतृत्व को सत्ता सौंप दी ।

जेन जी आंदोलन के हिंसक होने पर उसे अराजकतावादी नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनकी कोई राजनीतिक महत्वाकांक्षा नहीं थी । अराजकतावादियों का अंतिम उद्देश्य अराजकता पैदा करके सत्ता प्राप्त करना होता है । नेपाल के जेन जी सत्ता परिवर्तन करके अपने घरों को चले गए हैं । भारत का विपक्ष, बुद्धिजीवी वर्ग और मीडिया नेपाल के आंदोलन के बाद भारत में भी ऐसे आंदोलन का डर दिखा रहा है । इन लोगों को लगता है कि जैसे नेपाल के युवा ने वहां मौजूदा सत्ता को उखाड़ फेंका, वैसे ही भारत का जेन जी मोदी सरकार को सत्ता से उखाड़ कर फेंक देगा । सवाल यह है कि क्या भारत में बांग्लादेश, नेपाल और श्रीलंका जैसे हालात पैदा हो गए हैं जो भारत का युवा मोदी सरकार के खिलाफ वैसा ही आंदोलन करे । भारतीय युवा मनमौजी हो सकता है लेकिन भ्रमित नहीं है । उसे वर्तमान राजनीतिक हालातों का अच्छी तरह से पता है । जो लोग जेन जी द्वारा सत्ता को उखाड़ फेंकने की आस लगा रहे हैं, उन्हें इसका एहसास ही नहीं है कि जेन जी चाहता क्या है । नेपाल का जेन जी भ्रष्टाचार और नेपोटिज्म के प्रति गुस्से से भरा हुआ था । भारत का युवा अगर भ्रष्टाचार और नेपोटिज्म के प्रति गुस्सा जाहिर करता है तो उसका पहला शिकार कौन बनेगा । अगर भारत के विपक्षी दलों को ध्यान से देखा जाए तो ज्यादातर दलों की बागडौर उन नेताओं के हाथ में है, जो किसी बड़े नेता की संताने हैं । जेन जी केंद्र सरकार के खिलाफ ही क्यों आंदोलन करेगा. वो राज्य सरकार के खिलाफ भी तो सड़कों पर उतर सकता है ।

जेन जी को मूर्ख समझना सबसे बड़ी गलती है । वो बेशक अपने काम में मस्त है लेकिन वो दुनिया से बेखबर नहीं है । सोशल मीडिया में वो अपनी राय रखता है, वो अपनी पसंद-नापसंद भी जाहिर करता है । भारत का जेन जी सिर्फ इसलिए वर्तमान सरकार के खिलाफ मैदान में नहीं उतर सकता क्योंकि पड़ोसी देशों में ऐसा हो गया है । भारत एक विशाल देश है और इसकी समस्याएं इतनी सरल नहीं हैं कि जेन जी के आंदोलन से वो खत्म हो जाएंगी । विपक्ष और उसके इको सिस्टम को पता होना चाहिए कि इससे पहले कई बार भारत बहुत बुरे दौर से गुजर चुका है लेकिन सड़क के आंदोलन से सत्ता परिवर्तन नहीं हुआ है ।

भारत का जेन जी वर्तमान व्यवस्था से निराश हैं लेकिन हताश नहीं है । इस पर सभी नेताओं को विचार करने की जरूरत है कि युवाओं में निराशा क्यों बढ़ रही है । प्रधानमंत्री मोदी और उनके मंत्री कितने भी ईमानदार हों लेकिन देश मे भ्रष्टाचार को कोई फर्क नहीं पड़ा है । मोदी सरकार के 11 साल के शासन के बाद भी वो वैसे ही चल रहा है जैसे पहले था । राजनीतिक भ्रष्टाचार के खिलाफ मोदी जी की नीतियां सफल रही हों लेकिन प्रशासनिक भ्रष्टाचार बढ़ रहा है । इसके खिलाफ वर्तमान केंद्र और राज्य सरकारों की नीतियों का कोई असर जमीन पर दिखाई नहीं दे रहा है । वो निराश है लेकिन हताश नहीं है क्योंकि उसे लगता है कि देश में परिवर्तन धीरे-धीरे ही आएगा । मोदी सरकार को चिंता इसलिए करनी चाहिए क्योंकि जनता को ज्यादा परेशानी प्रशासनिक भ्रष्टाचार से ही होती है । वंशवाद ने भाजपा को इस तरह से नहीं जकड़ा है जैसे उसने विपक्ष को जकड़ा हुआ है । वंशवाद का यह मतलब नहीं है कि नेताओं के बच्चों को राजनीति में न आने दिया जाए बल्कि वंशवाद वह है, जिसमें नेताओं के बच्चों को सीधे पार्टी या सरकार में सर्वोच्च पद दे दिया जाता है ।

बेरोजगारी युवाओं की सबसे बड़ी समस्या है लेकिन सरकार इस पर लगातार काम कर रही है और ये युवाओं को दिखाई भी दे रहा है । वास्तव में भारत का युवा विशेष तरह की बेरोजगारी का शिकार है । कहने को तो उनके पास रोजगार है लेकिन उसकी योग्यता के अनुसार उनके पास रोजगार नहीं है । वर्तमान सत्ताधारी दलों को इस पर काम करने की जरूरत है । भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है और इसमें युवाओं का बड़ा योगदान है । भारत का विकास दुनिया को दिखाई दे रहा है और जेन जी भी इसे महसूस कर रहा है । भारत का जेन जी देश की सबसे बड़ी ताकत है क्योंकि देश का भविष्य यही पीढ़ी तय करने वाली है । सिर्फ भारत नहीं बल्कि दुनिया भी भारत की इस पीढ़ी की ओर देख रही है । आने वाले समय में भारतीय युवा पूरी दुनिया को चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहे हैं । कई विकसित देशों में ऐसे युवाओं की कमी महसूस की जा रही है जो उनके देश की व्यवस्था को चला सके । भारतीय युवाओं की योग्यता को पूरी दुनिया पहचान रही है । भारतीय युवाओं की सबसे बड़ी खूबी यह है कि ये चुपचाप अपना काम करने में विश्वास रखते हैं । जिस भी देश में जाते हैं, वहां के समाज में घुलमिल जाते हैं और व्यवस्था के साथ चलते हैं ।

भारत का जेन जी देश के लिए कोई खतरा नहीं है बल्कि देश की सबसे बड़ी ताकत बनने वाला है । भारत के जेन जी को दिशा देने की जरूरत है कि वो अपनी बुद्धि और उर्जा का इस्तेमाल सृजनात्मक कार्यों के लिए करे । जेन जी का काम है कि वो अन्याय के खिलाफ खड़ा हो. अगर अन्याय मौजूदा सत्ता द्वारा किया जा रहा हो तो उसको सत्ता से उखाड़ फेंके । इसके लिए वो संवैधानिक साधनों का सहारा ले क्योंकि हिंसक आंदोलनों से राजनीतिक और आर्थिक ढांचे को नुकसान पहुंचता है । भारत के युवा ने कई बार सत्ता परिवर्तन किया है लेकिन हर बार वो शांतिपूर्ण तरीके से ही किया है ।

ज्यादातर देशों में जेन जी का आंदोलन लीडर रहित रहा है लेकिन भारत के युवाओं के आंदोलन लीडर रहित नहीं रहे हैं । देश को सामाजिक परिवर्तन की जरूरत है और ये काम युवाओं द्वारा ही किया जा सकता है । जेन जी रूढ़िवादिता के खिलाफ है लेकिन उसका विरोध नहीं कर पा रहा है । जेन जी ऐसी पीढ़ी है जो स्वतंत्रता को बहुत महत्व देती है, आप उसकी जिंदगी में उतना ही दखल दे सकते हैं जितनी वो आपको इजाजत देते हैं । वो जातिवादी और साम्प्रदायिक नहीं है लेकिन धर्म और जाति के खिलाफ भी नहीं है । जाति और धर्म पर हमला बर्दाश्त नहीं करते हैं और अपनी प्रतिक्रिया देते हैं । कुछ युवा अपनी राजनीतिक पसंद को लेकर अपने परिवार से प्रभावित हैं लेकिन ज्यादातर युवा अपनी नजर से राजनीति को समझ रहे हैं । वो नेताओं का मजाक बनाते हैं, उनके मीम्स बनाते हैं, इससे नेताओं को परेशान नहीं होना चाहिए । इसके लिए कई बार सरकारें उनके खिलाफ कार्यवाही कर चुकी है लेकिन इससे बचना चाहिए । जेन जी देश की ताकत हैं, उन्हें देश के खिलाफ इस्तेमाल करने की कोशिश नहीं होनी चाहिए ।

# रिश्ते अब इंस्टेंट नूडल्स क्यों बन गए हैं?

रिश्ते कभी आत्मा का आलिंगन हुआ करते थे। नज़रों की गहराई में उतरकर, समय के ताने-बाने में धीरे-धीरे बुने जाते थे, जैसे कोई कारीगर महीन धागों से अनमोल कढ़ाई रचता हो। लेकिन आज की दुनिया माइक्रोवेव की रफ्तार में सिमट गई है—तुरंत, सुविधाजनक, और क्षणभंगुर। रिश्ते अब समय की गहराई में नहीं, टचस्क्रीन की सतह पर बनते हैं। एक बटन दबाओ, पल भर की गर्माहट पाओ। मगर जैसे ही वह गर्माहट फीकी पड़ती है, ठंडापन उतनी ही तेजी से दस्तक देता है। यह हमारी माइक्रोवेव पीढ़ी की कहानी है—जहाँ रिश्ते चमकते हैं, पिघलते हैं, और पल में बिखर जाते हैं।

आज का इंसान समय की भगदड़ में उलझा है। व्यस्तता ने हमें इस कदर जकड़ लिया है कि रिश्तों के लिए न वक्त बचा, न धैर्य। पहले रिश्ते विश्वास, समझ, और त्याग की नींव पर खड़े होते थे। दोस्ती थी रातभर की अनकही बातें, चाय की चुस्कियों में साझा सपने, और बिना बोले बँटे दर्द। प्यार था इंतज़ार की बेकरारी, चिट्ठियों की स्याही, और मिलन की तड़प। परिवार था एक छत तले हँसी-आँसुओं का मेल, हर सुख-दुख में एक-दूसरे का सहारा। लेकिन अब? दोस्ती इंस्टाग्राम की स्टोरी और व्हाट्सएप के इमोजी तक सिकुड़ गई। प्यार स्वाइप और कुछ डेट्स के बाद ₹मूव ऑनर₹ का नाम बन गया। परिवार वीडियो कॉल्स और ग्रुप चैट्स में बिखर गया।

इस त्वरितता की जड़ हमारी जीवनशैली है। हमने सुविधा को रिश्तों का पर्याय बना लिया। डेटिंग ऐप्स ने प्यार को कैटलॉग में बदल दिया, जहाँ लोग प्रोफाइल्स को स्क्रॉल करते हैं, जैसे ऑनलाइन शॉपिंग हो। दोस्ती अब लाइक्स, कमेंट्स, और फॉलोअर्स की गिनती में सिमट गई। परिवार तक टू-डू लिस्ट का हिस्सा बन गया—जन्मदिन पर मैसेज, त्योहार पर कॉल, और साल में एक मुलाकात का वादा। रिश्ते अब मेहनत नहीं, बस एक बटन की दूरी माँगते हैं। मगर यही उनकी सबसे बड़ी कमज़ोरी है। माइक्रोवेव का खाना भले ही पल में तैयार हो, पर उसमें न ताज़गी होती है, न पोषण। वैसे ही, त्वरित रिश्ते शुरुआत में चमकते हैं, लेकिन उनकी गहराई खोखली रहती है।

प्यार में भी यही अधीरता हावी है। आज का प्यार माइक्रोवेव सा है—जल्दी गर्म, जल्दी ठंडा। कुछ मुलाकातें, कुछ चैट्स, और तारीफों का दौर, और लोग ₹सोलमेट₹ का तमगा सजा देते हैं। मगर जैसे ही पहला झटका लगता है—एक छोटी गलतफहमी, एक अनबन, या ₹वाइब्स₹ का न मिलना—लोग ₹ब्रेकअप₹ और ₹मूव ऑनर₹ चुन लेते हैं। रिश्तों को संवारने की कोशिश, समझने की मेहनत, या माफ करने का धैर्य अब पुराना लगता है। विकल्पों की भीड़ ने रिश्तों को डिस्पोजेबल बना दिया। जब अगला ₹बेहतर₹ विकल्प एक स्वाइप दूर हो, तो कोई रिश्ता अनमोल क्यों लगे? यही विकल्पों की बाढ़ रिश्तों की गहराई को निगल रही है।

क्या यह सब इतना सरल है? क्या हम सचमुच इतने सतही हो गए हैं? सच यह है कि इंसान का दिल आज भी वही चाहता है—सच्चा जुड़ाव, अपनापन, और स्थायित्व। हम चाहते हैं कि कोई हमें बिना शर्त सुने, समझे, और हर कदम पर साथ दे। मगर हमारी आदतें, हमारी प्राथमिकताएँ, और हमारी तेज़ रफ्तार ज़िंदगी हमें रोकती है। हमने तुरंत संतुष्टि को इस कदर आत्मसात किया है कि इंतज़ार, मेहनत, और रिश्तों को वक्त देना हमें बोझ लगता है। हम गहरे रिश्ते चाहते हैं, मगर उनकी कीमत चुकाने को तैयार नहीं।

इस माइक्रोवेव पीढ़ी की सबसे बड़ी त्रासदी यही है—हम गर्माहट चाहते हैं, मगर उसे टिकने नहीं देते। दोस्ती, प्यार, या परिवार—सब में शुरुआती चमक जल्दी ठंडी पड़ जाती है। हम रिश्तों को फिर गर्म करने की कोशिश करते हैं—एक मैसेज, एक कॉल, या एक मुलाकात से। मगर जैसे माइक्रोवेव का खाना बार-बार गर्म करने पर अपनी ताज़गी खो देता है, वैसे ही रिश्ते भी बार-बार टूटने-जुड़ने में अपना मूल स्वाद खो देते हैं। नतीजा? एक खालीपन, जो न समझ आता है, न बयाँ होता है।

क्या रास्ता है? क्या हम इस माइक्रोवेव पीढ़ी के चक्रव्यूह से निकल सकते हैं? हाँ, बशर्ते हम अपनी प्राथमिकताएँ बदलें। रिश्तों को फिर से समय, धैर्य, और मेहनत की सौगात देनी होगी। तकनीक ने हमें जोड़ा है, मगर वह जोड़ सतही है। असली रिश्ता तब बनता है जब स्क्रीन की चमक छोड़कर हम एक-दूसरे की आँखों में झाँकें, मैसेज की जगह दिल से दिल की बात करें, और लाइक्स की बजाय विश्वास का आलिंगन दें। रिश्ते कोई इंस्टेंट रेसिपी नहीं—वे एक लंबी यात्रा हैं, जहाँ गलतियाँ, गलतफहमियाँ, और उतार-चढ़ाव स्वाभाविक हैं। मगर इन्हीं से पार पाने की कोशिश रिश्तों को अनमोल बनाती है।

हर रिश्ता परफेक्ट नहीं होता। दोस्ती में अनबन, प्यार में तकरार, और परिवार में मतभेद तो होंगे। लेकिन इन सबके बीच रिश्तों को सहेजने की जिद ही उन्हें अटूट बनाती है। माइक्रोवेव की गर्माहट पल भर में ठंडी पड़ जाती है, पर चूल्हे की आँच पर पकाया खाना समय माँगता है, देखभाल माँगता है, और बदले में वह स्वाद देता है जो दिल-ओ-दिमाग में बस्ता है। रिश्ते भी ऐसे ही हैं—उन्हें धैर्य, देखभाल, और प्यार की आँच चाहिए, जो समय के साथ और गहरी होती है।

आज हमें खुद से सवाल करना होगा—क्या हम रिश्तों को महज सुविधा की तरह देखना चाहते हैं, या उनकी गहराई को फिर से जीना चाहते हैं? क्या हम त्वरित चमक के पीछे भागकर स्थायी अपनापन खोना चाहते हैं? यह चुनाव कठिन है, क्योंकि यह हमारी आदतों और जीवनशैली को चुनौती देता है। मगर अगर हम ठान लें, तो रिश्तों की उस पुरानी रिवायत को जगा सकते हैं, जहाँ धैर्य, विश्वास, और गहराई ही सबसे बड़ी ताकत थी। माइक्रोवेव की चमक भले ही लुभाए, पर चूल्हे की आँच की गर्माहट ही रिश्तों को ज़िंदगी देती है। अब हमें चुनना है—क्षणिक चमक या चिरस्थायी रोशनी।

***प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)***

# प्रख्यात लेखिका संतोष श्रीवास्तव के उपन्यास "उर्वशी पुरुरवा" पर परिचर्चा

पौराणिक कथा को आधुनिक चेतना में ढालना साहित्यिक चुनौती- डॉ.संजीव कुमार

डॉ. शंभू पंवार

**नई दिल्ली।** वामा संस्कृति एवं साहित्य अकादमी, दिल्ली इकाई द्वारा प्रख्यात लेखिका, साहित्यकार संतोष श्रीवास्तव के बहुचर्चित उपन्यास ₹उर्वशी पुरुरवा₹ पर आभाषी पटल पर परिचर्चा आयोजित की गई, परिचर्चा में देश के नामचीन लेखक, पत्रकार, साहित्यकार एवं समीक्षकों ने विशद चर्चा की।

परिचर्चा का संयोजन एवं संचालन वामा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, दिल्ली इकाई की अध्यक्ष शकुंतला मित्तल द्वारा अत्यंत कुशलता और गरिमा के साथ किया गया। उन्होंने सभी अतिथियों का स्वागत करने के तत्पश्चात परिचर्चा के आरंभ में उपन्यास की लेखिका, संतोष श्रीवास्तव, से उपन्यास लेखन के संदर्भ में कुछ प्रश्न पूछे। जिस पर प्रत्युत्तर में लेखिका संतोष श्रीवास्तव ने रचना की प्रक्रिया, प्रेरणा और अपने दृष्टिकोण को साझा किया। उन्होंने कहा कि 'उर्वशी केवल मिथक नहीं, वह हर युग की स्त्री का प्रतीक है—जिसे उन्होंने 3 वर्षों के शोध के पश्चात लिखा। इस कथानक पर विपुल साहित्य लिखा जा चुका है तो मेरे सामने कुछ नया लिखने की चुनौती भी थी। लेखिका ने यह भी बताया कि यह उपन्यास उनके लिए एक अंतर्यात्रा थी, जिसमें उन्होंने प्रेम, त्याग, स्वाभिमान और स्त्री-स्वत्व को खोजा।

इस परिचर्चा की अध्यक्षता सर्वाधिक पुस्तके लिख कर विश्व रिकॉर्ड बनाने वाले एवं वामा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के संस्थापक डॉ. संजीव कुमार जी ने की। डॉ संजीव कुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि 'उर्वशी और पुरुरवा की कथा को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना केवल साहित्यिक चुनौती नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना का कार्य है। इस महती कार्य को सशक्त रूप से उपन्यास के रूप में प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने लेखिका को बहुत बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। 'उन्होंने वामा अकादमी की कार्य प्रणाली और उद्देश्य से भी सबको अवगत करवाया।

मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार राजेश्वर वशिष्ठ ने उपन्यास की कथावस्तु, संवाद-संरचना एवं प्रतीकों के माध्यम से कृति की सराहना की और अपनी कुछ जिज्ञासा और प्रश्न भी रखे, जिनके उत्तर देते हुए लेखिका संतोष श्रीवास्तव ने कहा कि 'यह कृति स्त्री के आत्मसंघर्ष और सांस्कृतिक विरासत के बीच संतुलन का सशक्त उदाहरण है। मैंने इसकी पौराणिकता में तार्किकता का समावेश कर उसे आज के संदर्भ में प्रामाणिक और विश्वसनीय बनाने का प्रयास किया है।

वहीं कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि विश्व रिकॉर्ड धारक, अंतरराष्ट्रीय लेखक-पत्रकार, विचारक, और समीक्षक डॉ. शंभू पंवार ने अपने उद्गार में उपन्यास को नारी मन की अतल गहराइयों और पुरुष मानसिकता के द्वंद्व का प्रभावशाली चित्रण बताया। उन्होंने कहा कि यह रचना स्त्री-विमर्श की पुनर्परिभाषा है, जिसमें लेखिका ने पौराणिक पात्रों को आज की चेतना से जोड़ा है। विशिष्ट अतिथि के रूप में वरिष्ठ साहित्यकार एवं समीक्षकों डॉ. नीलिमा रंजन ने इस उपन्यास को सनातन प्रेमानुरागी चरित्रों की साहित्यिक निष्पत्ति बताते हुए कहा कि संतोष श्रीवास्तव जी का सद्य- प्रकाशित उपन्यास इंद्र सभा की नर्तकी उर्वशी और भूलोक में प्रतिष्ठानपुर के चंद्रवंशी राजा की प्रेमकथा है। इसमें प्रेम की अतीन्द्रियता, चेतन हृदय की जागृति व उर्वशी के लोकातीत अस्तित्व को दुःसह आसक्ति व प्रणय के बंधन के समक्ष समर्पित कर देना दर्शाया गया है। यह विपरीत संस्कृतियों का एक दूसरे के प्रति समर्पण है। दूसरे विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार एवं अक्षरा पत्रिका की संपादक जया केतकी ने लेखिका के शिल्प और भाषा की सादगी तथा गहराई को रेखांकित किया। उनके अनुसार संतोष श्रीवास्तव केवल लिखती नहीं हैं, वे लंबे समय तक पढ़ती और शोध करती हैं। वे अपनी बात ऐसे कहती हैं कि उन्होंने भारतीय संस्कृति के स्वर्णिम युग को इस पुस्तक लेखन के माध्यम से जिया है। परिदृश्य यूँ रचे गए हैं मानो वे उसकी साक्षी हों। यह परिचर्चा न केवल एक साहित्यिक कृति पर विचार-विमर्श था, बल्कि समकालीन सामाजिक चेतना और सांस्कृतिक पुनर्पाठ का भी सशक्त मंच बनी। वक्ताओं ने उपन्यास 'उर्वशी पुरुरवा' को एक ऐसी रचना बताया जो पौराणिक कथा को आधुनिक दृष्टिकोण, स्त्री-सशक्तिकरण और मानसिक जटिलताओं के साथ प्रस्तुत करती है। परिचर्चा में देश भर से साहित्यप्रेमियों, लेखकों ने भाग लिया तथा डा. प्रमिला वर्मा डॉ.वसुधा सहस्त्रबुद्धि, अनीता रश्मि, ओमप्रकाश प्रजापति

ने इस विमर्श को अत्यंत विचारोत्तेजक और समृद्ध बनाने में सहभागिता की। अंत में शकुंतला मित्तल ने सबका आभार व्यक्त किया।

# बीजद ने एसआई परीक्षा में बड़े भ्रष्टाचार पर आंदोलन

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भुबनेश्वर:** एसआई परीक्षा में नकल की घटना को लेकर बीजद का विरोध प्रदर्शन। बीजू जनता दल ने आशायी के लिए न्याय की मांग को लेकर भुवनेश्वर मास्टर कैंटीन पर विरोध प्रदर्शन किया। बीजद ने गरजते हुए मांग की कि अपराध शाखा की बजाय सीबीआई जांच हो ताकि बड़े नेता को पकड़ा जा सके। लोअर पीएमजी रणक्षेत्र में तब्दील हो गया। सैकड़ों युवा छात्र नेताओं और कार्यकर्ताओं ने विरोध प्रदर्शन किया। पार्टी ने सीबीआई जाँच के आदेश न दिए जाने पर और ज़ोरदार आंदोलन की चेतावनी दी है। इस विरोध प्रदर्शन में बीजू जनता दल के कई छात्र भी शामिल हैं। घटना के बाद पुलिस ने बीजद नेता पृथ्वी रंजन घोडकी और अन्य छात्र नेताओं को हिरासत में ले लिया।

इस बीच, एसआई परीक्षा धोखाधड़ी मामले में एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। क्राइम ब्रांच ने बालासोर से एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार युवक रांसाही पंचायत का चंदन मलिक है। चंदन खुद को समाजसेवी बताता था और खुद को विभिन्न गतिविधियों में व्यस्त रखता था। चंदन को कल देर रात गिरफ्तार किया गया। इसके साथ ही गिरफ्तारियों की संख्या बढ़कर 120 हो गई है। क्राइम ब्रांच आज आरोपी को ब्रह्मपुर जेएमएफसी ग्रामीण कोर्ट में पेश करेगी।

# बार कौंसिल आफ इंडिया द्वारा चुनाव में पांच गुना फीस बढ़ौतरी पर झारखंड बार नाराज

झारखंड बार में 35 हजार वकील, 2023 को कार्यकाल हो चुका है समाप्त

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची,** झारखंड बार कौंसल चुनाव की तैयारी कर रहे वकील बार कौंसिल ऑफ इंडिया (बीसीआई) के ताजा आदेश से नाराज हैं। बीसीआई ने चुनाव नामांकन शुल्क में पांच गुना बढ़ोतरी करते हुए इसे 25 हजार रुपये से बढ़ाकर 1.25 लाख रुपये कर दिया है। यह राशि वापस भी नहीं की जाएगी। आदेश जारी होते ही राज्यभर के वकीलों में नाराजगी और विरोध के स्वर तेज हो गए हैं। आगामी शनिवार को झारखंड बार कौंसिल की जनरल बॉडी मीटिंग प्रस्तावित है, जिसमें इस मामले में विरोध किया जाएगा।

बीसीआई के प्रिंसिपल सेक्रेटरी श्रीमंतो सेन ने 25 सितंबर को सभी स्टेट बार कौंसिल को पत्र भेजा है। इसमें सुप्रीम कोर्ट के 24 सितंबर के आदेश का हवाला देते हुए कहा गया है कि सभी राज्यों में स्टेट बार काउंसिल चुनाव 31 जनवरी 2026 तक संपन्न करा लिए जाएं। कोर्ट ने इसके लिए सात सदस्यीय चुनाव समिति गठित करने के भी निर्देश दिए हैं। इसी क्रम में बीसीआई ने चुनावी प्रक्रिया के लिए आवश्यक व्यय जुटाने के उद्देश्य से नामांकन शुल्क में बढ़ोतरी का निर्णय लिया है।

बीसीआई ने अपने आदेश में कहा है कि लॉ ग्रेजुएट्स के नामांकन शुल्क को सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में 16 हजार रुपये से घटाकर मात्र 600 रुपये कर दिया है। इस कारण स्टेट बार कौंसिल की आय में भारी गिरावट आई है और उनके पास चुनाव आयोजन के लिए पर्याप्त संसाधन नहीं बचे हैं। खर्चों की भरपाई के लिए नामांकन शुल्क बढ़ाने की आवश्यकता बताई गई है।

वकीलों का कहना है कि इतनी अधिक फीस लगाने से आम वकीलों के लिए चुनाव लड़ना लगभग असंभव हो जाएगा। उनका कहना है कि बार कौंसिल लोकतांत्रिक संस्था है और उच्च शुल्क लगाना चुनावी प्रक्रिया को केवल आर्थिक रूप से सक्षम उम्मीदवारों तक सीमित कर देगा। झारखंड बार कौंसिल में करीब 35 हजार से अधिक वकील पंजीकृत हैं।

वकीलों ने बीसीआई के इस निर्णय को अविवेकपूर्ण और असंगत बताया है। उनका कहना है कि इससे योग्य लेकिन सीमित संसाधनों वाले वकीलों का प्रतिनिधित्व खत्म हो जाएगा। झारखंड बार कौंसिल कार्यकाल 28 जुलाई 2023 को समाप्त हो चुका है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के अनुरूप जनवरी 2026 तक नई कार्यकारिणी के चुनाव कराए जाने हैं। ऐसे में नामांकन शुल्क बढ़ोतरी को लेकर राज्य के वकीलों में असंतोष बढ़ता जा रहा है और बीसीआई से इस निर्णय पर पुनर्विचार की मांग की जा रही है।

# कटक हिंसा को लेकर बीजेडी ने राज्य सरकार पर साधा निशाना

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

**भूबनेश्वर:** बीजू जनता दल की राज्यसभा सांसद सुलता देब ने ओडिशा के कटक में दुर्गा पूजा मूर्ति विसर्जन के दौरान हुई हिंसा की निंदा की है। सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए पुलिस द्वारा बाइक रैली की अनुमति देने से इनकार करने के बाद झड़पें शुरू हुईं, जिसके बाद पथराव हुआ, जिसमें आठ पुलिसकर्मियों सहित 25 लोग घायल हो गए और इंटरनेट सेवा बंद कर दी गई। उन्होंने सत्ता में आने के बाद से बिगड़ती कानून-व्यवस्था और महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराध के लिए भाजपा सरकार की आलोचना की। उन्होंने कहा, कटक भाईचारे का शहर है जहाँ हिंदू, मुस्लिम, सिख और ईसाई सभी एक साथ रहते हैं और त्योहारों के दौरान कभी कोई समस्या नहीं होती। कटक में जो हुआ वह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। यह सरकार कानून-व्यवस्था बनाए रखने या महिलाओं के खिलाफ अत्याचार रोकने में असमर्थ है। भाजपा सरकार के सत्ता में आने के बाद से अपराध दर में वृद्धि हुई है। पुलिस आयुक्त सुरेश देबदत्त सिंह ने कहा, कटक के एक संगठन ने बाइक रैली निकालने की अनुमति मांगी थी, लेकिन उसे अनुमति नहीं दी गई। पुलिस के साथ झड़प हुई क्योंकि पुलिस ने ज़ोर देकर कहा कि इससे सांप्रदायिक तनाव पैदा हो सकता है। पथराव करने वालों के हमले में आठ पुलिसकर्मी घायल हो गए। बाद में, लोगों को बलपूर्वक तितर-बितर किया गया।

# बिहार में छठ के बाद 2 फेज में चुनाव 6 नतीजे 14 को और 11 नवंबर को वोटिंग

परिवहन विशेष न्यूज

बिहार की 243 विधानसभा सीटों पर 2 फेज में वोटिंग होगी। मतदान 6 और 11 नवंबर को और नतीजे 14 नवंबर को आएंगे। चुनाव आयोग ने सोमवार शाम 4 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस कर यह जानकारी दी। चुनाव के ऐलान से काउंटिंग तक की प्रक्रिया 40 दिन चलेगी। पहले फेज की वोटिंग छठ के 8 दिन बाद होगी। सभी राजनीतिक दलों ने वोटिंग की तारीखें दिवाली और छठ के बाद रखने की अपील की थी। बिहार में 40 साल बाद दो फेज में चुनाव होने जा रहे हैं। इससे पहले 1985 में चुनाव 2 फेज में हुए थे। भाजपा और आरजेडी ने 2 फेज में चुनाव कराने की मांग की थी। जेडीयू ने एक फेज में चुनाव कराने को कहा था। पिछले चुनाव यानी 2020 में 3 फेज में 20 अक्टूबर से 7 नवंबर के बीच वोटिंग हुई थी। 10 नवंबर को नतीजे घोषित हुए थे। इससे पहले 2015 में 5 फेज में 12 अक्टूबर से 5 नवंबर के बीच वोटिंग और 8 नवंबर को नतीजे आए थे। राज्य में 243 सीटें हैं, जिनमें करीब 7.42 करोड़ वोटर हैं। इनमें 100 साल ऊपर के 14 हजार वोटर शामिल हैं। पोलिंग बूथ जाने में असमर्थ लोग फॉर्म 12 D भरकर घर से वोट डाल सकेंगे। राज्य में 14 लाख लोग पहली बार वोट डालेंगे। इस बार वोटर बूथ तक मोबाइल ले जा सकेंगे। चुनाव आयोग ने 7 राज्यों में विधानसभा सीटों पर उप चुनाव का ऐलान भी किया। जम्मू-कश्मीर में बडगाम और नागरोटा, राजस्थान में अंता, झारखंड में घाटसिला (ST), तेलंगाना की जुबली हिल्स, पंजाब की तरनतारन, मिजोरम की डम्पा और ओडिशा की नुआपाडा विधानसभा सीट शामिल है। यहां 11 नवंबर को वोट डाले जाएंगे। 14 नवंबर को नतीजे आएंगे।

# अमृतसर के मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने भगवान वाल्मीकि जी के प्रगट दिवस की तैयारियों का जायजा लिया

अमृतसर 6 अक्टूबर (साहिल बेरी)

नगर निगम के मेयर जितेंदर सिंह भाटिया और विधायक डॉ. अजय गुप्ता ने सोमवार को भगवान वाल्मीकि जी के प्रगट दिवस की तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने शोभा यात्रा के मार्ग पर सफाई व्यवस्था में कोई कमी न छोड़ने के आदेश दिए। इस अवसर पर स्वास्थ्य विभाग की टीम से कहा गया कि त्योहारों के मौसम में बाजारों में रौनक बढ़ जाती है। ऐसे में निगम की टीम को सफाई व्यवस्था को सुचारू रूप से बनाए रखने के लिए विशेष कदम उठाने पड़ेंगे। इसमें लोगों को भी इधर-उधर कूड़ा न फेंकने के लिए जागरूक किया जाए। इसके साथ ही, बाजारों और गलियों में कूड़े के ढेर न लगने दिए जाएं। उन्होंने कहा कि भगवान वाल्मीकि जी के प्रगट दिवस के अवसर पर शोभा यात्रा निकाली जानी है। ऐसे में स्वास्थ्य विभाग की टीम शोभा यात्रा के मार्ग पर विशेष ध्यान दे। उन्होंने यह भी कहा कि शहर की साफ-सफाई की जिम्मेदारी जल्द ही एक नई कंपनी को सौंपी जा रही है। इसके बाद, बैल टू बैल कूड़ा लिफ्टिंग सिस्टम पर पूरी निगरानी रखी जाएगी। इसमें कूड़े से संबंधित शहरवासियों की शिकायतों का प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध तरीके से समाधान किया जाएगा। इस अवसर पर विधायक स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. किरण कुमार, चीफ सेनेटरी इंस्पेक्टर, सेनेटरी इंस्पेक्टर और कर्मचारी मौजूद थे।

# "जातीय समीकरण और सामाजिक न्याय – बिहार राजनीति की धुरी"

(डॉ. राजकुमार यादव के विश्लेषण पर आधारित विशेष रिपोर्ट)

बिहार की जातीय संरचना (Caste Composition – Bihar 2023 Survey)

जाति वर्ग आबादी (%) प्रमुख राजनीतिक प्रभाव

अत्यंत पिछड़ा वर्ग (EBC) 36% JDU, HAM, VIP

अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC – यादव, कुर्मी, कोइरी आदि) 27% R J D, JDU

अनुसूचित जाति (SC) 19.65% LJP, BSP, RJD

अनुसूचित जनजाति (ST) 1.68% सीमांचल / झारखंड सीमा क्षेत्र

उच्च जातियाँ (ब्राह्मण, राजपूत, भूमिहार, कायस्थ) 14% BJP, कांग्रेस

मुस्लिम समुदाय 16% R J D, AIMIM, कांग्रेस

कुल EBC + OBC आबादी = लगभग 63%

यही वर्ग "निर्णायक मतदाता" कहलाता है।

प्रमुख सामाजिक न्याय संबंधी मुद्दे

विषय मतदाताओं की चिंता राजनीतिक रुख

रोजगार और आरक्षण बेरोजगारी घटे, EBC/OBC को नौकरी में समान अवसर सभी दल आरक्षण की सीमा पर पुनर्विचार की बात कर रहे हैं

शिक्षा में अवसर गाँव-गाँव स्कूल, शिक्षक उपलब्धता "जन सुराज" व अन्य संगठन शिक्षा को राजनीतिक एजेंडा बना रहे

महिला और दलित अधिकार पंचायत व स्थानीय निकायों में प्रतिनिधित्व R J D, JDU दोनों "महादलित" वोट पर ध्यान केंद्रित

जाति जनगणना आंकड़े को नीति में लागू करने की मांग RJD-JDU गठबंधन ने इसे राजनीतिक आधार बनाया

पलायन और विकास रोज़गार की कमी के कारण युवाओं का पलायन भा ज पा "विकास बनाम जाति" नैरेटिव को आगे बढ़ा रही है

जातीय समीकरण के आधार पर वोट बैंक रणनीति (2025)

पार्टी मुख्य वोट बैंक रणनीतिक फोकस

RJD यादव + मुस्लिम जातीय एकता और सामाजिक न्याय की नीति

JDU कुर्मी + EBC "सुशासन" और संतुलित विकास का दावा

BJP उच्च जाति + अति पिछड़े वर्गों का विभाजन जाति से ऊपर "राष्ट्रीय विकास" पर बल

कांग्रेस अल्पसंख्यक + शहरी वर्ग सामाजिक समरसता और बेरोजगारी समाधान

LJP / RLSP / छोटे दल दलित, पासवान, कोइरी प्रतिनिधित्व आधारित राजनीति

क्षेत्रवार जातीय प्रभाव (Regional Variation)

क्षेत्र प्रमुख जातियाँ राजनीतिक झुकाव

मिथिलांचल ब्राह्मण, कायस्थ, यादव मिश्रित – RJD और BJP दोनों का असर

मगध यादव, पासवान, कुर्मी RJD और JDU का टकराव

सीमांचल मुस्लिम, ओबीसी RJD, AIMIM का प्रभाव

भोजपुर-शाहाबाद भूमिहार, राजपूत, यादव BJP, RJD दोनों सक्रिय

उत्तर बिहार EBC, दलित JDU का परंपरागत प्रभाव क्षेत्र

डॉ. राजकुमार यादव का विश्लेषण

> "बिहार की राजनीति आज भी सामाजिक न्याय और जातीय प्रतिनिधित्व की धुरी पर टिकी हुई है।

हालाँकि विकास, शिक्षा और रोजगार जैसे मुद्दे ज़रूर उभर रहे हैं,

लेकिन जातीय अस्मिता अब भी वोट के मानस को दिशा देती है।"

— डॉ. राजकुमार यादव, राष्ट्रीय संयोजक - ओ बी सी अधिकार मंच

# राज्यसभा मेंबर गुप्ता के साथ मेयर-विधायकों ने शहर के विकास को लेकर की चर्चा

अमृतसर 6 अक्टूबर (साहिल बेरी)

राज्यसभा मेंबर एनडी गुप्ता के साथ मेयर जतिंदर सिंह भाटिया और विधायकों ने मुलाकात की। जिसमें गुरुनगरी के विकास को लेकर विस्तृत चर्चा की गई। मेयर जतिंदर सिंह भाटिया ने कहा कि आबादी बढ़ने के हिसाब से सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांटों की क्षमता कम पड़ रही है। ऐसे में सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट की क्षमता आबादी के हिसाब से बढ़नी चाहिए। इससे शहरवासियों को सीवरेज जाम की समस्या से राहत मिल सकेगी। शहर में पुरानी वाटर सप्लाई और सीवर लाइनों को कई जगह से बदलने की जरूरत है। निगम अपने स्तर पर लगातार काम कर रहा है लेकिन इसके लिए ज्यादा फंड की जरूरत है। शहर में रोजाना लाखों की तादाद में श्रद्धालु आते हैं, ऐसे में धार्मिक शहर को स्पेशल फंड मिलने चाहिए। विधायकों ने भी शहर की जरूरतों को लेकर राज्यसभा मेंबर के सामने अपनी बात रखी। जिसपर गुप्ता ने केंद्र सरकार से पैसे दिलाने का भरोसा दिलाया। इस मौके पर विधायक डा. अजय गुप्ता, विधायक डा. इंदरबीर सिंह निज्जर, विधायक डा. जसबीर संधू, नगर सुधार ट्रस्ट के चेयरमैन कर्मजीत सिंह रिंटू, जिला प्रधान प्रभवीर बराड़, नगर सुधार ट्रस्ट के मेंबर मुखविंदर विरदी मौजूद रहे।

# सरायकेला एस पी लुनायत ने आदित्यपुर में पकड़ा चालीस लाख का ब्राउन शुगर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**रांची।** अफीम , डोडा, ब्राउन शुगर का अवैध कारोबार में नाम ऊंचा कर रहा सरायकेला खरसावां जिला के आदित्यपुर मुस्लिम बस्ती में बड़ी कार्रवाई करते हुए करीब 40 लाख रुपये मूल्य की ब्राउन शुगर के साथ तीन तस्करों को गिरफ्तार किया है युवा एस पी मुकेश लुनायत। जिले में यह एक बड़ी जब्ती है।

एसपी मुकेश कुमार लुनायत ने सोमवार को जानकारी दी कि गुप्त सूचना के आधार पर एसडीपीओ के नेतृत्व में एक विशेष टीम बनाई गई थी। इस टीम ने छापेमारी कर तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया। उनके पास से 207.91 ग्राम ब्राउन शुगर और मोबाइल फोन बरामद किए गए है । पकड़े गए तस्करों की पहचान शाहबाज खान, मोहम्मद समीर उर्फ मोहम्मद आमान और रफीकुल इस्लाम के रूप में हुई है। सभी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। एसपी ने बताया कि यह कार्रवाई मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत की गई है। उन्होंने कहा कि जिले में ब्राउन शुगर जैसी नशीली चीजों की बिक्री और तस्करी बर्दाश्त नहीं की जाएगी, और आगे भी इस तरह की कार्रवाई जारी रहेगी।

# झारखंड के घाटशिला समेत देश के आठ सीटों पर चुनाव 11 नवम्बर को ,परिणाम 14 को

*शिक्षा मंत्री रामदास सोरेन घाटशिला विधायक असामयिक निधन के कारण चुनाव*

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**जमशेदपुर** ,भारत निर्वाचन आयोग ने बिहार विधानसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान कर दिया है। इसके साथ ही आठ विधानसभा सीटों पर होने वाले उपचुनाव की तारीखों का भी ऐलान हो गया है। झारखंड की घाटशिला सीट पर उपचुनाव से जुड़ी तैयारियां भी जारी हैं। नोटिफिकेशन, नॉमिनेशन, नाम को वापस लेने, मतदान और रिजल्ट जैसे कार्यक्रम की पूरी सूची निर्वाचन आयोग द्वारा जारी कर दी गई है। 13 अक्तूबर को नोटिफिकेशन जारी कर दिया जाएगा। 20 अक्तूबर नॉमिनेशन फाइल करने का आखिरी दिन होगा। स्क्रूटनी के लिए 22 अक्तूबर का दिन रखा गया है। नाम वापस लेने की तारीख 24 अक्तूबर है। आठों जगह होने वाले उपचुनाव के लिए इन सब मामलों में तारीखें अलग-अलग हैं, लेकिन मतदान और चुनाव परिणाम के घोषित होने की तारीख समान है। 11 नवंबर को मतदान और 14 नवंबर को परिणाम सामने आएंगे। घाटशिला अनुसूचित जनजाति (एसटी आरक्षित) सीट है। यहां के सिटिंग विधायक और तत्कालीन मंत्री रामदास सोरेन के निधन के चलते उपचुनाव कराए जा रहे हैं। रामदास सोरेने का अगस्त 2025 में आकस्मिक निधन हो गया था । झारखंड के घाटशिला समेत आठ अन्य विधानसभा में जम्मू एंड कश्मीर की बुधगाम और नागरोटा, राजस्थान की आंता, झारखंड की घाटशिला, तेलंगाना की जुबिली हिल्स, पंजाब की तरन तारन, मिजोरम की दंपा और ओडिशा की नोपादा शामिल है। इन सभी जगहों पर 11 नवंबर को मतदान होनें हैं, जिसके परिणा एक साथ 14 नवंबर को आएंगे।

# टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा आयोजित "बाल सागर प्रतियोगिता" का परिणाम घोषित

परिवहन विशेष न्यूज

**पटना।** ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान टीचर्स ऑफ बिहार ने शिक्षकों की रचनात्मकता और अभिव्यक्ति को मंच देने हेतु "बाल सागर प्रतियोगिता" का सफल आयोजन किया।

इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी शिक्षकों को चित्र देखकर बाल कथा लिखनी थी, जिसके माध्यम से उन्होंने अपनी कल्पनाशक्ति, लेखन-कौशल और अभिव्यक्ति की क्षमता का परिचय दिया।

प्रतियोगिता का उद्देश्य प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) के विद्यार्थियों के लिए शिक्षाप्रद एवं रोचक कथाएँ तैयार करवाना था, जिससे बाल साहित्य लेखन के क्षेत्र में शिक्षकों की रचनात्मकता को प्रोत्साहन मिल सके।

**मूल्यांकन के प्रमुख बिंदु रहे—**

- शीर्षक की उपयुक्तता
- सरल शब्द संयोजन
- चित्र आधारित कथानक
- नैतिक शिक्षा

इस प्रतियोगिता में राज्य के विभिन्न जिलों के शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपनी लेखन प्रतिभा का प्रदर्शन किया।

शिक्षकों ने शिक्षा जगत के विविध पहलुओं को अपनी लेखनी से जीवंत बनाया।

टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि प्रतियोगिता का उद्देश्य शिक्षकों की रचनात्मक ऊर्जा को प्रोत्साहित करना तथा उन्हें एक ऐसा प्लेटफ़ॉर्म उपलब्ध कराना है, जहाँ वे अपने विचारों को समाज के साथ साझा कर सकें।

कार्यक्रम आयोजक कुमारी नीधि (राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार 2025 से सम्मानित), एडिटर सुबोध कुमार द्विवेदी तथा आस्था दीपाली ने बताया कि प्रतियोगिता को शिक्षकों से अत्यधिक सकारात्मक प्रतिक्रिया प्राप्त हुई।

यह सहभागिता इस बात का प्रमाण है कि शिक्षक केवल शिक्षण कार्य तक सीमित नहीं हैं, बल्कि साहित्य, अभिव्यक्ति और सृजनशीलता में भी अपनी विशिष्ट पहचान रखते हैं।

प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से कहा कि इस प्रकार की पहल न केवल शिक्षकों को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने का अवसर देती है, बल्कि शिक्षा जगत में एक सकारात्मक और रचनात्मक माहौल भी तैयार करती है।

**विजेता प्रतिभागी:-**

प्रथम स्थान – राम किशोर पाठक, प्रा. वि. भेड़हरिया इंग्लिश, पालीगंज, पटना

द्वितीय स्थान – श्वेता साक्षी, खगड़िया, बिहार

तृतीय स्थान – लवली कुमारी, उ. म. वि. अनूपनगर, बारसोई, कटिहार

चतुर्थ स्थान – राजन कुमार, रा. प्रा. वि. बैरिया, गौनाहा, पश्चिम चम्पारण

चतुर्थ स्थान – भोला झा

पंचम स्थान – नेहा कुमारी, रा. स. हरावत राज उ. म. वि., गणपतगंज, राघोपुर, सुपौल

पंचम स्थान – शैलेंद्र कुमार, उ. म. वि. औसानी, बगहा-2, पश्चिम चम्पारण

आयोजक कुमारी निधि (प्राथमिक विद्यालय बिरनाबाड़ी, पोठिया, किशनगंज) ने बताया कि इस प्रतियोगिता का उद्देश्य शिक्षकों में बाल साहित्य लेखन के प्रति रुचि विकसित करना और शिक्षण के साथ-साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति को बढ़ावा देना था।

टीचर्स ऑफ बिहार परिवार ने सभी विजेताओं एवं प्रतिभागियों को बधाई दी और सभी को डिजिटल प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

# श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश पर्व को समर्पित जिला प्रशासनिक परिसर में कराया गया श्री सुखमनी साहिब का पाठ

अमृतसर, 6 अक्टूबर (साहिल बेरी)

श्री गुरु रामदास जी के प्रकाश पर्व के उपलक्ष्य में आज जिला प्रशासनिक परिसर, अमृतसर में श्री सुखमनी साहिब जी का पाठ बड़े श्रद्धा और भक्ति भाव से आयोजित किया गया। पाठ उपरांत रागी सिंहों द्वारा इलाही बाणी का मधुर कीर्तन किया गया, जिससे पूरा वातावरण गुरबाणी के स्वर से गूंज उठा।

इस अवसर पर संगत को गुरु का अटूट लंगर भी वितरित किया गया। कार्यक्रम में जिला प्रशासन और पुलिस विभाग के अनेक अधिकारीगण एवं कर्मचारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इस मौके पर डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी, एस.एस.पी. (देहाती) श्री मनिंदर सिंह, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, श्रीमती अमनदीप कौर, एस.डी.एम. श्री गुरसिमरन सिंह, एस.डी.एम. श्री मनकंवल सिंह चाहल, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर नगर निगम श्री सुरिंदर कुमार, ज्वाइंट कमिश्नर नगर निगम श्री जय इंदर सिंह, जिला माल अधिकारी श्री नवकीरत सिंह रंधावा, डिप्टी कमिश्नर कार्यालय के सुपरिंटेंडेंट श्री अनील कुमार, श्री हरपाल सिंह तथा जिला नाजर श्री सुखविंदर सिंह ने गुरुद्वारा साहिब में माथा टेका और श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम के दौरान सभी ने मिलकर गुरु के उपदेशों पर चलने और समाज में सेवा, समर्पण तथा भाईचारे की भावना को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023